दूर्वा

भाग 2

कक्षा 7 के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक

(द्वितीय भाषा)

© NCERT
not to be republished

0752

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

Reprint 2024-25

0752 – दूर्वा भाग 2
कक्षा 7 के लिए पाठ्यपुस्तक

ISBN 81-7450-657-8

प्रथम संस्करण
फ़रवरी 2007 फाल्गुन 1928

पुनर्मुद्रण
अक्तूबर 2007 आश्विन 1929
दिसंबर 2008 पौष 1930
जनवरी 2010 माघ 1931
जून 2011 आषाढ़ 1933
अक्तूबर 2013 आश्विन 1935
नवम्बर 2014 अग्रहायण 1936
मई 2016 वैशाख 1938
दिसंबर 2016 पौष 1938
जनवरी 2018 माघ 1939
दिसंबर 2018 अग्रहायण 1940
अगस्त 2019 भाद्रपद 1941
नवंबर 2021 अग्रहायण 1943
सितंबर 2022 अश्विन 1944
मार्च 2024 चैत्र 1946

PD 35T SU

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2007

₹ **65.00**

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा शिवा प्रिंटटेक प्रा. लि., प्लॉट नं. 59, पॉकेट-1, बवाना इंडस्ट्रियल एरिया, सेक्टर-5, दिल्ली 110 039 द्वारा मुद्रित।

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बैंगलूरु 560 085 फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
गुवाहाटी 781021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : *अनूप कुमार राजपूत*
मुख्य संपादक : *श्वेता उप्पल*
मुख्य उत्पादन अधिकारी : *अरुण चितकारा*
मुख्य व्यापार प्रबंधक (प्रभारी) : *अमिताभ कुमार*
सहायक संपादक : *एम. लाल*
सहायक उत्पादन अधिकारी : *राजेश पिप्पल*

आवरण, सज्जा एवं चित्रांकन
जोएल गिल

© NCERT not to be republished

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास है। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित शिक्षा व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभव पर विचार करने का कितना अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन कर सकेंगे। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

यह उद्देश्य स्कूल की दैनिक ज़िंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है, जितना वार्षिक कैलेण्डर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव बनाने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

एन.सी.ई.आर.टी. इस पुस्तक की रचना के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद् भाषा सलाहकार समिति के अध्यक्ष प्रोफ़ेसर नामवर सिंह और इस पुस्तक के मुख्य सलाहकार प्रोफ़ेसर पुरुषोत्तम

© NCERT not to be republished

अग्रवाल की विशेष आभारी है। पाठ्यपुस्तक के विकास में कई शिक्षकों ने योगदान किया, इस योगदान को संभव बनाने के लिए परिषद उनके प्राचार्यों एवं उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ है जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री तथा सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। परिषद माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफ़ेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनिटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देती है। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित एन.सी.ई.आर.टी. टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

निदेशक

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान
और प्रशिक्षण परिषद्

नयी दिल्ली
20 नवंबर 2006

© NCERT not to be republished

अध्यापक बंधुओं से

यह किताब राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) के आधार पर तैयार किए गए पाठ्यक्रम पर आधारित है। यह पारंपरिक भाषा-शिक्षण की सभी सीमाओं से आगे जाती है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की नयी रूपरेखा भाषा को बच्चे के व्यक्तित्व का सबसे समृद्ध संसाधन मानते हुए उसे पाठ्यक्रम के हर विषय से जोड़कर देखती है। भाषा की शिक्षा मातृभाषा से प्रभावित मात्र ही नहीं होती बल्कि वह द्वितीय भाषा कौशल की समृद्धि में भी लाभप्रद और सहायक सिद्ध होती है। इसी को ध्यान में रखकर विद्यार्थियों के हिंदी की सामान्य संरचनाओं की जानकारी को धीरे-धीरे उसकी विशिष्ट और विपुल संरचनाओं की जानकारी से जोड़ने की कोशिश इसमें की गई है। इसमें यथासंभव सहज और सरल भाषिक संरचनाओं वाले सरस और रोचक पाठों का चयन किया गया है। पाठों के चयन में हिंदी के महत्त्वपूर्ण रचनाकारों की बाल रचनाओं को शामिल कर द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी पढ़ने-पढ़ानेवालों को हिंदी की समृद्ध साहित्य परंपरा के प्रति रुचि बढ़ाने की भी कोशिश है। पाठों की भाषा और विषयवस्तु न केवल महत्त्वपूर्ण है बल्कि अन्य विषयों के ज्ञान को भी अपने में समेटे हुए है, जो विद्यार्थियों की भाषा और साहित्य को पढ़ने-समझने और जानने-बताने की रुचि को बढ़ाने में सहायक होगी।

भाषा अध्ययन के लिए पिछली कक्षाओं में किए गए अभ्यासों और तरीकों को भी यथास्थान जारी रखने के साथ-साथ नए तरह से प्रश्न-अभ्यास भी बनाए गए हैं जिनके द्वारा विद्यार्थियों के भाषिक कौशल सहित संपूर्ण कौशल का पर्याप्त विकास हो सकेगा। अतः इस कक्षा में दिए गए पाठों एवं अभ्यासों को पिछली कक्षा के पाठ्यक्रम के साथ जोड़कर देखने की आवश्यकता है।

इसके अभ्यास में समझना, अभिव्यक्त करना, अवलोकन करना, विश्लेषण करना, निष्कर्ष निकालना, समस्या सुलझाना, सृजनात्मकता, ज़िम्मेदारी, आत्मविश्वास, सजगता, अन्य विषयक समझ सहित भाषा की समझ को बढ़ाने पर भी ध्यान दिया गया है।

वर्ग पहेली, चित्र, नक्शे और तालिका आदि के प्रयोग द्वारा शब्दों के निर्माण व पहचान को बढ़ावा दिया गया है तथा अभ्यास करना, वर्णन-विश्लेषण करना और बहुभाषिकता को भाषा शिक्षण के लिए सहायक माना गया है।

विद्यार्थियों की भाषा शिक्षण की अपनी कुशलता और क्षमता सहित विद्यालयों और शिक्षकों के द्वारा उपलब्ध किए/कराए जानेवाले सभी संसाधनों सहित भाषिक परिवेश की सीमाओं और विशिष्टताओं को भी ध्यान में रखा गया है।

© NCERT not to be republished

पाठ्यपुस्तक में ही व्याकरण की समझ उत्पन्न करने के लिए इससे संबंधित अभ्यास दिए गए हैं। पढ़ाने के दरम्यान अध्यापक बंधु संदर्भ अनुसार व्याकरणिक प्रयोगों को कक्षा की ज़रूरत के अनुसार स्वयं भी उपयोग कर सकते हैं।

विद्यार्थियों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को उसके आस-पास के परिवेश में ही विकसित करने हेतु समग्रत: पाठों व अभ्यासों का चयन और निर्माण किया गया है। भाषा शिक्षण के लिए अनिवार्य तरीकों का प्रयोग विद्यार्थियों और शिक्षकों के वैयक्तिक विकास स्तर पर निर्भर करता है। अत: आशा है इस पुस्तक का समुचित ढंग से उपयोग किया जाएगा। आपके आवश्यक सुझावों का हार्दिक स्वागत है।

© NCERT not to be republished

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, भाषा सलाहकार समिति

नामवर सिंह, *पूर्व अध्यक्ष,* भारतीय भाषा केंद्र, जे.एन.यू., नयी दिल्ली

मुख्य सलाहकार

पुरुषोत्तम अग्रवाल, *प्रोफ़ेसर,* भारतीय भाषा केंद्र, जे.एन.यू., नयी दिल्ली

मुख्य समन्वयक

रामजन्म शर्मा, *प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष,* भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

सदस्य

अक्षय कुमार दीक्षित, *हिंदी शिक्षक,* निगम माध्यमिक स्कूल, कैलाश कॉलोनी, नयी दिल्ली

एच.बालसुब्रह्मण्यम्, *पूर्व सहायक निदेशक,* केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नयी दिल्ली

गोबिंद प्रसाद, *रीडर,* भारतीय भाषा केंद्र, जे.एन.यू., नयी दिल्ली

पूरन सहगल, *निदेशक,* मालव लोक संस्कृति अनुष्ठान, 'कृष्णायन' उषा गंज, मनासा, मध्य प्रदेश

बी.प्रमीला देवी, *हिंदी शिक्षिका,* जवाहर नवोदय विद्यालय, एच.सी.यू. कैम्पस, रंगा रेड्डी, हैदराबाद, आंध्र प्रदेश

मिथिलेश्वर, महाराजा हाता, कतिरा आरा, बिहार

राम प्रकाश टिकेकर, *प्रवाचक एवं विभागाध्यक्ष,* स्नातकोत्तर हिंदी शोध विभाग, कुवेंपू विश्वविद्यालय, शिमोगा, कर्नाटक

सी.ई.जीनी, प्रोफ़ेसर, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आर-12, नेहरु एंकलेव, कालकाजी, नयी दिल्ली

श्रीशचंद जायसवाल, *प्रोफ़ेसर,* केंद्रीय हिंदी संस्थान, आर-12, नेहरु एंकलेव, कालकाजी, नयी दिल्ली।

सदस्य-समन्वयक

संजय कुमार सुमन, *वरिष्ठ प्रवक्ता,* भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

नरेश कोहली, *प्रवक्ता,* भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

© NCERT not to be republished

आभार

इस पुस्तक निर्माण में जिन लेखकों एवं कवियों की रचनाओं को सम्मिलित किया गया है उसके लिए–राजपाल एण्ड संस, प्रतिभा प्रतिष्ठान, समाज शिक्षा प्रकाशन, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नेशनल बुक ट्रस्ट, चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट, इंडियन फारमर्स फर्टिलाइज़र को–ऑपरेटिव लिमिटेड, प्रकाशन विभाग (सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार), डॉ. आलोक राय, अंग्रेजी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, हिंदी साहित्य सम्मेलन (इलाहाबाद), ज्ञानदीप प्रकाशन (दिल्ली), शिक्षा–विमर्श (जयपुर), पार्थ बुक डिवीज़न (मुंबई), स्व. श्री गिरिजाकुमार माथुर की पत्नी श्रीमती शकुंत माथुर, अनुराग प्रकाशन (अजमेर, राजस्थान) और चकमक तथा एकलव्य (भोपाल) के प्रति हम हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं।

इसके निर्माण में तकनीकी सहयोग के लिए हम कंप्यूटर स्टेशन (भाषा विभाग) के *प्रभारी* परशराम कौशिक, *डी.टी.पी. ऑपरेटर सह कॉपी एडीटर* कमल कुमार *और प्रूफ़ रीडर* कंचन शर्मा का हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं।

© NCERT not to be republished

पाठ-सूची

	आमुख		iii
	अध्यापक बंधुओं से		v
1.	**चिड़िया और चुरुंगुन** – *कविता*	हरिवंशराय बच्चन	1
2.	**सबसे सुंदर लड़की** – *कहानी*	विष्णु प्रभाकर	5
3.	**मैं हूँ रोबोट** – *निबंध*	राजीव गर्ग	12
4.	**गुब्बारे पर चीता** – *कहानी*	प्रेमचंद	17
5.	**थोड़ी धरती पाऊँ** – *कविता*	सर्वेश्वरदयाल सक्सेना	23
6.	**गारो** – *लोककथा*	संकलित	29
7.	**पुस्तकें जो अमर हैं** – *निबंध*	मनोज दास	34
8.	**काबुलीवाला** – *कहानी*	रवींद्रनाथ टैगोर	42
9.	**विश्वेश्वरैया** – *व्यक्तित्व*	आर.के. मूर्ति	51
10.	**हम धरती के लाल** – *कविता*	शील	57
11.	**पोंगल** – *निबंध*	संकलित	60
12.	**शहीद झलकारीबाई** – *एकांकी*	संकलित	66
13.	**नृत्यांगना सुधा चंद्रन** – *जीवनी*	रामाज्ञा तिवारी	73
14.	**पानी और धूप** – *कविता*	सुभद्रा कुमारी चौहान	79
15.	**गीत** – *कविता*	केदारनाथ अग्रवाल	84
16.	**मिट्टी की मूर्तियाँ** – *निबंध-अतिरिक्त पठन हेतु*	जया विवेक	87
17.	**मौत का पहाड़** – *चित्रकथा*	शब्द–गायत्री मदन दत्त, चित्र–राम वाईरकर	94
18.	**हम होंगे कामयाब एक दिन** – *गीत-अतिरिक्त पठन हेतु*	गिरिजा कुमार माथुर	101

© NCERT not to be republished

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1]**[संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य]** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और [2]**[राष्ट्र की एकता**

और अखंडता] सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''राष्ट्र की एकता'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।

© NCERT not to be republished

0752CH01

चिड़िया और चुरुंगुन

छोड़ घोंसला बाहर आया,
देखी डालें, देखे पात,
और सुनी जो पत्ते हिलमिल
करते हैं आपस में बात;–
माँ, क्या मुझको उड़ना आया?
'नहीं, चुरुंगुन, तू भरमाया'

डाली से डाली पर पहुँचा,
देखी कलियाँ, देखे फूल,
ऊपर उठकर फुनगी जानी,
नीचे झुककर जाना मूल;–
माँ, क्या मुझको उड़ना आया?
'नहीं, चुरुंगुन, तू भरमाया'

© NCERT not to be republished

कच्चे-पक्के फल पहचाने,
खाए और गिराए काट,
खाने-गाने के सब साथी
देख रहे हैं मेरी बाट;-
माँ, क्या मुझको उड़ना आया?
'नहीं, चुरुंगुन, तू भरमाया'

उस तरु से इस तरु पर आता,
जाता हूँ धरती की ओर,
दाना कोई कहीं पड़ा हो
चुन लाता हूँ ठोक-ठठोर;
माँ, क्या मुझको उड़ना आया?
'नहीं, चुरुंगुन, तू भरमाया'

मैं नीले अज्ञात गगन की
सुनता हूँ अनिवार पुकार
कोई अंदर से कहता है
उड़ जा, उड़ता जा पर मार;-
माँ, क्या मुझको उड़ना आया?

'आज सुफल हैं तेरे डैने,
आज सुफल है तेरी काया'

–हरिवंशराय बच्चन

© NCERT not to be republished

अभ्यास

शब्दार्थ

पात	–	पत्ता	फुनगी	–	वृक्ष या शाखा का सिरा
भरमाया	–	भ्रम में पड़ गया	बाट	–	राह, रास्ता
तरु	–	वृक्ष, पेड़	अनिवार	–	लगातार
अज्ञात	–	अनजान, जिसके बारे में कुछ पता न हो			

1. नमूने के अनुसार लिखो

नमूना

छोड़ घोंसला बाहर आया,
देखी डालें, देखे पात।

चुरुंगुन घोंसला छोड़कर बाहर आया। उसने डालें और पत्ते देखे।

क डाली से डाली पर पहुँचा,
देखी कलियाँ देखे फूल।

ख खाने-गाने के सब साथी,
देख रहे हैं मेरी बाट।

ग कच्चे-पक्के फल पहचाने,
खाए और गिराए काट।

घ उस तरु से इस तरु पर आता,
जाता हूँ धरती की ओर।

2. कविता से

क चुरुंगुन अपने 'उड़ने' के बारे में बार-बार अपनी माँ से क्यों पूछता है?

ख चुरुंगुन को कौन-कौन सी चीज़ें अच्छी लगती हैं?

ग चुरुंगुन अभी-अभी अपने घोंसले से निकला है। फिर भी वह पूरी दुनिया के बारे में जानना चाहता है। तुम किन चीज़ों के बारे में जानना चाहते हो?

© NCERT not to be republished

3. क्रम से लगाओ

नीचे कुछ चीज़ों के नाम लिखे हैं। चुरुंगुन ने पहले किसे देखा? क्रम से लगाओ।

फूल, पात, फुनगी, डाल, फल, कलियाँ, धरती, साथी, तरु, दाना, गगन

4. और चुरुंगुन उड़ गया

उड़ने के बाद चुरुंगुन कहाँ-कहाँ गया होगा? उसने क्या-क्या देखा होगा? अपने शब्दों में लिखो।

5. वचन बदलो

	एकवचन		बहुवचन
नमूना	घोंसला	–	घोंसले, घोंसलो
	डाल	–	
	बात	–	
	कली	–	
	फूल	–	
	फल	–	
	साथी	–	
	तरु	–	
	दाना	–	
	डैना	–	

© NCERT not to be republished

6. बार-बार बोलो और प्रत्येक शब्द से वाक्य बनाओ

डाल – ढाल
बात – भात
फूल – मूल
दाना – धान
फल – पल

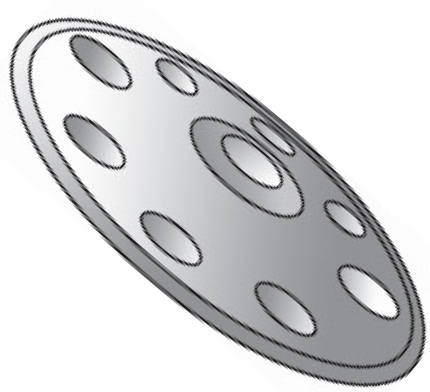

0752CH02

सबसे सुंदर लड़की

समुद्र के किनारे एक गाँव था। उसमें एक कलाकार रहता था। वह दिनभर समुद्र की लहरों से खेलता रहता, जाल डालता और सीपियाँ बटोरता। रंग-बिरंगी कौड़ियाँ, नाना रूप के सुंदर-सुंदर शंख, चित्र-विचित्र पत्थर, न जाने क्या-क्या समुद्र-जाल में भर देता। उनसे वह तरह-तरह के खिलौने, तरह-तरह की मालाएँ तैयार करता और पास के बड़े नगर में बेच आता।

उसका एक बेटा था, नाम था उसका हर्ष। उम्र अभी ग्यारह की भी नहीं थी, पर समुद्र की लहरों में ऐसे घुस जाता, जैसे तालाब में बत्तख।

एक बार ऐसा हुआ कि कलाकार के एक रिश्तेदार का मित्र कुछ दिन के लिए वहाँ छुट्टी मनाने आया। उसके साथ उसकी बेटी मंजरी भी थी। होगी कोई नौ-दस वर्ष

की, पर थी बहुत सुंदर, बिलकुल गुड़िया जैसी।

हर्ष बड़े गर्व के साथ उसका हाथ पकड़कर उसे लहरों के पास ले जाता। एक दिन मंजरी ने चिल्लाकर कहा, "तुम्हें डर नहीं लगता?"

हर्ष ने जवाब दिया, "डर क्यों लगेगा, लहरें तो हमारे साथ खेलने आती हैं।" और तभी एक बहुत बड़ी लहर दौड़ती हुई हर्ष की ओर आई, जैसे उसे निगल जाएगी। मंजरी चीख उठी, पर हर्ष तो उछलकर लहर पर सवार हो गया और किनारे पर आ गया।

मंजरी डरती थी, पर मन ही मन यह भी चाहती थी कि वह भी समुद्र की लहरों पर तैर सके। उसे यह तब और भी ज़रूरी लगता था, जब वह वहाँ की दूसरी लड़कियों को ऐसा करते देखती–विशेषकर कनक को, जो हर्ष के हाथ में हाथ डालकर तूफ़ानी लहरों पर दूर निकल जाती।

वह बेचारी थी बड़ी गरीब। पिता एक दिन नाव लेकर गए, तो लौटे ही नहीं। माँ मछलियाँ पकड़कर किसी तरह दो बच्चों को पालती थी। कनक छोटे-छोटे शंखों की मालाएँ बनाकर बेचती। मंजरी को वह लड़की ज़रा भी नहीं भाती। हर्ष के साथ उसकी दोस्ती तो उसे कतई पसंद नहीं थी।

एक दिन हर्ष ने देखा कि कई दिन से उसके पिता एक सुंदर-सा खिलौना बनाने में लगे हैं। वह एक पक्षी था, जो रंग-बिरंगी सीपियों से बना था। वह देर तक देखता रहा, फिर पूछा, "बाबा, यह किसके लिए बनाया है?"

कलाकार ने उत्तर दिया, "यह सबसे सुंदर लड़की के लिए है। मंजरी सुंदर है न? दो दिन बाद उसका जन्मदिन है। उस दिन तुम इस पक्षी को उसे भेंट में देना।"

हर्ष की खुशी का पार नहीं था। बोला, "हाँ–हाँ बाबा, मैं यह पक्षी मंजरी को दूँगा।" और वह दौड़कर मंजरी के पास गया, उसे समुद्र किनारे ले गया और बातें करने लगा। फिर बोला,"दो दिन बाद तुम्हारा जन्मदिन है"

"हाँ, पर तुम्हें किसने बताया?"

"बाबा ने। हाँ, उस दिन तुम क्या करोगी?"

"सबेरे उठकर नहा–धोकर सबको प्रणाम करूँगी। घर पर तो सहेलियों को दावत देती हूँ। वे नाचती–गाती हैं।" और इसी तरह बातें करते–करते वे न जाने कब उठे और दूर तक समुद्र में चले गए। सामने एक छोटी–सी चट्टान थी। हर्ष ने कहा, "आओ, छोटी चट्टान तक चलें।"

मंजरी काफी निडर हो चली थी। बोली, "चलो।" तभी हर्ष ने देखा–कनक बड़ी चट्टान पर बैठी है। कनक ने चिल्लाकर कहा, "हर्ष, यहाँ आ जाओ।"

हर्ष ने जवाब दिया, "मंजरी वहाँ नहीं आ सकती, तुम्हीं इधर आ जाओ।"

अब मंजरी ने भी कनक को देखा। उसे ईर्ष्या हुई। वह वहाँ क्यों नहीं जा सकती? वह क्या उससे कमज़ोर है...

वह यह सोच ही रही थी कि उसे एक बहुत सुंदर शंख दिखाई दिया। मंजरी अनजाने ही उस ओर बढ़ी। तभी एक बड़ी लहर ने उसके पैर उखाड़ दिए और वह बड़ी चट्टान की दिशा में लुढ़क गई। उसके मुँह में खारा पानी भर गया। उसे होश नहीं रहा।

यह सब आनन–फानन में हो गया। हर्ष ने देखा और चिल्लाता हुआ वह उधर बढ़ा पर तभी एक और लहर आई और उसने उसे मंजरी से दूर कर दिया। अब निश्चित था कि मंजरी बड़ी चट्टान से टकरा जाएगी, परंतु उसी क्षण कनक उस क्रुद्ध लहर और मंजरी के बीच कूद पड़ी और उसे हाथों में थाम लिया।

© NCERT not to be republished

दूसरे ही क्षण तीनों छोटी चट्टान पर थे। कुछ देर हर्ष और कनक ने मिलकर मंजरी को लिटाया, छाती मली, पानी बाहर निकल गया। उसने आँखें खोलकर देखा, उसे ज़रा भी चोट नहीं लगी थी पर वह बार-बार कनक को देख रही थी।

अपने जन्मदिन की पार्टी के अवसर पर वह बिलकुल ठीक थी। उसने सब बच्चों को दावत पर बुलाया। सभी उसके लिए कुछ न कुछ लेकर आए थे। सबसे अंत में कलाकार की बारी आई। उसने कहा, "मैंने सबसे सुंदर लड़की के लिए सबसे सुंदर खिलौना बनाया है। आप जानते हैं, वह लड़की कौन है? वह है मंजरी।"

सबने खुशी से तालियाँ बजाईं। हर्ष अपनी जगह से उठा और बड़े प्यार से वह सुंदर खिलौना उसने मंजरी के हाथों में थमा दिया। मंजरी बार-बार उस खिलौने को देखती और खुश होती।

तभी क्या हुआ, मंजरी अपनी जगह से उठी। उसके हाथ में वही सुंदर पक्षी था। वह धीरे-धीरे वहाँ आई जहाँ कनक बैठी थी। उसने बड़े स्नेह-भरे स्वर में उससे कहा, "यह पक्षी तुम्हारा है। सबसे सुंदर लड़की तुम्हीं हो।" और एक क्षण तक सभी अचरज से दोनों को देखते रहे। फिर जब समझे, तो सभी ने मंजरी की खूब प्रशंसा की। कनक अपनी प्यारी-प्यारी आँखों से बस मंजरी को देखे जा रही था... और दूर समुद्र में लहरें चिल्ला-चिल्लाकर उन्हें बधाई दे रही थीं।

–विष्णु प्रभाकर

अभ्यास

शब्दार्थ

बटोरना	–	इकट्ठा करना	ईर्ष्या	–	जलन
रिश्तेदार	–	संबंधी	क्रुद्ध	–	नाराज़
कतई	–	बिलकुल	थामना	–	पकड़ना, संभालना
दावत	–	निमंत्रण	विशेष	–	खास
भाना	–	अच्छा लगना	भेंट	–	उपहार
अचरज	–	हैरानी			

1. वाक्य जोड़ो

नमूना सहेलियाँ नाचती हैं। वे गाती भी हैं।
सहेलियाँ नाचती-गाती हैं।

क लहरें उछलती हैं। वे कूदती भी हैं।
ख सब बच्चे हँसते हैं। वे खेलते भी हैं।
ग मेरी माँ पढ़ना जानती है। वह लिखना भी जानती हैं।

2. कहानी से

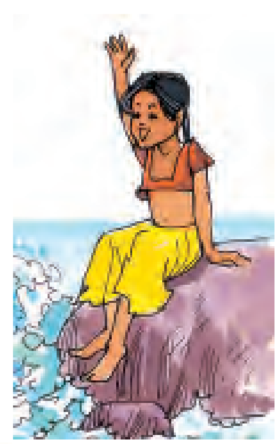

क हर्ष और कनक छोटे होने पर भी समुद्र की लहरों में कैसे तैर सकते थे?
ख हर्ष का पिता क्या काम करता था?
ग कनक छोटे-छोटे शंखों की मालाएँ बनाकर क्यों बेचती थी?
घ मंजरी को कनक क्यों नहीं भाती थी?
ङ मंजरी ने कनक को अपना खिलौना क्यों दे दिया?

3. रिक्त स्थान भरो

नमूना गुड़िया जैसी सुंदर

क दूध जैसा ------------
ख हाथी जैसा ------------
ग रात जैसा ------------
घ रूई जैसा ------------
ङ चीनी जैसा ------------

4. कौन-कैसा

नीचे कुछ शब्द लिखे हैं। उन्हें उचित खाने में लिखो।

दयालु, डरपोक, साहसी, सुंदर, अमीर, गरीब, समझदार, लालची, ईर्ष्यालु, अच्छी, मेहनती, आलसी, मूर्ख, लापरवाह, मनमौजी।

कनक	मंजरी

5. सुंदर

मंजरी बिलकुल गुड़िया जैसी सुंदर थी। तुम्हें सबसे सुंदर कौन लगती/लगता है? क्यों?

6. गरीब

क "वह बेचारी थी बड़ी गरीब।"
लोग आमतौर पर गरीबों को बेचारा और असहाय क्यों मानते हैं? कहानी में कनक को बेचारी कहा गया है जबकि वह निडर और दूसरों की सहायता करने वाली लड़की थी। दूसरी ओर मंजरी गरीब नहीं थी पर ईर्ष्यालु और डरपोक थी। तुम्हारे विचार से असली गरीब कौन है?

ख तुमने अपने आस-पास अमीर और गरीब, दोनों तरह के लोग देखे होंगे। तुम्हारे विचार से गरीबी के क्या कारण हो सकते हैं?

ग अमीरी और गरीबी के अंतर को कैसे दूर किया जा सकता है? कुछ उपाय सुझाओ।

7. जन्मदिन

क क्या तुम्हारा जन्मदिन मनाया जाता है?

ख तुम्हारे कितने दोस्तों और संबंधियों का जन्मदिन मनाया जाता है और कितनों का नहीं मनाया जाता?

© NCERT not to be republished

8. समुद्र

भारत के मानचित्र को देखो। भारत तीन दिशाओं से समुद्र से घिरा है। उन तीनों दिशाओं के नाम मानचित्र में भरो। समुद्र के पास वाले राज्यों के नाम भी भरो।

9. वाक्य बनाओ

'उसके पिता एक सुंदर-सा खिलौना बनाने में लगे हैं।' इस वाक्य में 'सुंदर-सा' लगाकर वाक्य बनाया गया है। तुम भी साधारण, बड़ा, छोटा, लंबा, गोल, चौकोर और त्रिकोण शब्द में सा, से या सी का प्रयोग कर वाक्य बनाओ।

10. कुछ यह भी करो

क हर्ष का पिता समुद्र के किनारे रहता था। वह तरह-तरह के खिलौने एवं मालाएँ तैयार कर पास के बड़े नगर में बेच आता था। तुम अपने आस-पास के कुछ ऐसे ही लोगों के बारे में जानकारी प्राप्त करो। वे किन-किन चीज़ों से क्या-क्या बनाते हैं?

ख समुद्र से सीपी, कौड़ी, शंख, पत्थर आदि प्राप्त होते हैं। पता करो उससे और क्या-क्या चीज़ें प्राप्त होती हैं जो मनुष्य के लिए उपयोगी हैं? इसकी एक सूची बनाओ।

ग हर्ष और कनक ने मंजरी को समुद्र से निकाला। इसके बाद उन्होंने मंजरी को प्राथमिक उपचार दिया। पता करो तुम कौन से प्राथमिक उपचार करोगे, यदि

- किसी का हाथ गर्म चीज़ से जल जाए
- पैर में काँच घुस जाए
- कोई ज़हरीला जंतु काट ले

© NCERT not to be republished

तीसरा पाठ

0752CH03

मैं हूँ रोबोट

मैं एक यंत्र मानव हूँ। आम भाषा में लोग मुझे 'रोबोट' कहते हैं। मुझे देखकर आपको हैरानी होगी कि मेरा रूप, रंग, आकार और शरीर तुमसे नहीं मिलता, फिर भी मैं तुम्हारे जैसे बहुत से कार्य कर सकता हूँ; और वे भी, जो तुम नहीं कर सकते।

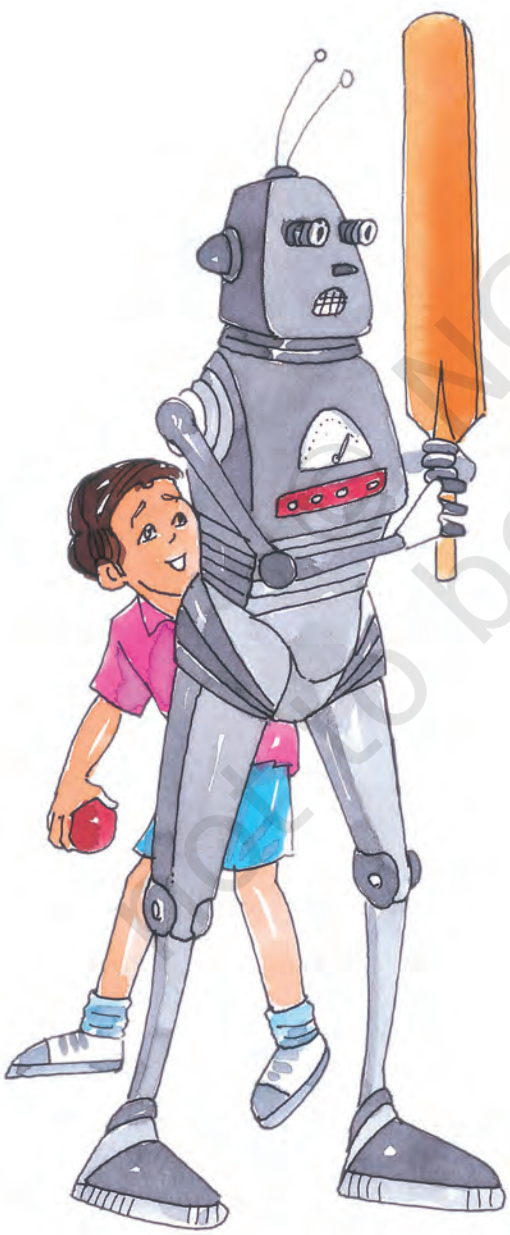

मेरा शरीर हाड़-माँस का नहीं, बल्कि लोहा-इस्पात और प्लास्टिक से बना है। मेरी भी टाँग, भुजा और अँगुलियाँ हैं। लेकिन मेरे ये सभी अंग धातुओं से बने हैं। निर्जीव होते हुए भी मेरे सब अंग तुम्हारी ही तरह काम करते हैं। मैं चल सकता हूँ, उछल सकता हूँ और कूद भी सकता हूँ। तुम्हारी तरह अपने हाथों और अँगुलियों से मैं मशीन के पुर्ज़े फिट कर सकता हूँ, बोझा उठा सकता हूँ और न जाने कितने काम कर सकता हूँ।

तुम्हारे शरीर में शिराओं और धमनियों का जाल बिछा हुआ है। उनमें रक्त का प्रवाह होता रहता है। इसी रक्त से तुम्हें शक्ति मिलती है। लेकिन मेरे शरीर में तारों का जाल बिछा हुआ है और इन तारों में खून की जगह विद्युत धारा बहती है। यही विद्युत धारा मुझे काम करने की शक्ति देती है।

तुम सोचते होंगे कि मैं निर्जीव पुतला ये सब काम कैसे करता हूँ। काम करने के लिए मेरे पास मस्तिष्क है लेकिन तुम्हारे मस्तिष्क से बिलकुल अलग। मेरा मस्तिष्क कंप्यूटर है। जो भी मुझे करना होता है उसके लिए मुझे कंप्यूटर आदेश देता है। उसी आदेश के अनुसार मैं काम करता हूँ।

not to be republished © NCERT

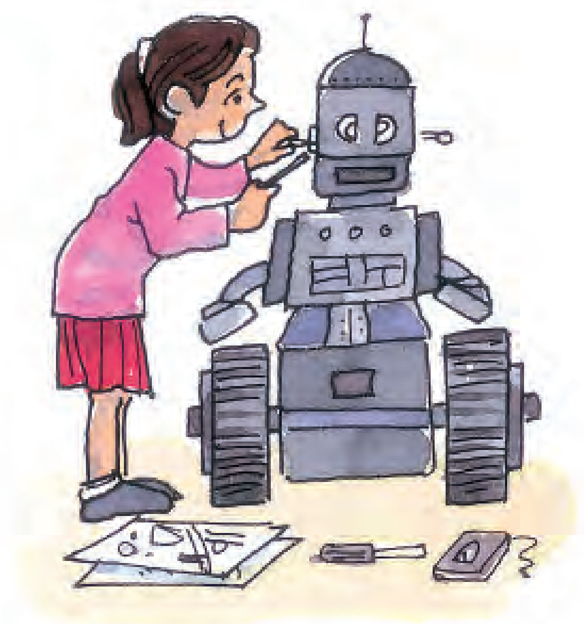

कंप्यूटर की स्मृति में वह सब संचित रहता है जो मुझे करना होता है।

तुम शायद विश्वास नहीं करोगे कि मैं 'देख' सकता हूँ, 'सुन' सकता हूँ, 'बोल' सकता हूँ और छूकर अनुभव भी कर सकता हूँ। देखने के लिए मेरे पास आँखें नहीं हैं बल्कि मेरे शरीर में कैमरे लगे हैं। मेरे कान तुम्हारे कानों से बिलकुल भिन्न हैं। मेरे शरीर में लगा माइक्रोफ़ोन ही सुनने का काम करता है। बोलने के लिए मैं गले और जीभ का सहारा नहीं लेता। मेरे शरीर में लगा लाउडस्पीकर बोलने का काम करता है। छूने का बोध मुझे विशेष प्रकार के स्पर्श संवेदियों द्वारा होता है। कुछ भी हो, हूँ तो मैं तुम्हारा ही बनाया हुआ मशीनी मानव। दरअसल मैं तुम्हारा सेवक हूँ। लेकिन मेरे जैसा सेवक तुम्हें कहीं मिल नहीं सकता। मैं भूखा, प्यासा, बिना कुछ खाए-पीए, सर्दी और गरमी में बिना थके और बिना ऊबे अकेला ही काम करता रहता हूँ। तुम जब तक चाहो मुझसे काम ले सकते हो। काम करवाने के लिए मुझे बर्फ़ीले ठंडक में भेज दो या पसीना लाने वाली तेज़ गर्मी में, मैं दोनों जगह एक जैसी गति से काम कर सकता हूँ। इतना ही नहीं मुझसे तुम किसी गंदे, विषैले और विषम वातावरण में काम ले सकते हो। मैं बिना चूँ-चपर किए तुम्हारा काम करता रहूँगा। मैं तो तुम्हारा ऐसा आज्ञाकारी सेवक हूँ जो बिना हिचक और विरोध के काम करता है। मैं अकेला ही बीस-पच्चीस मज़दूरों के बराबर काम कर सकता हूँ।

अब मैं तुम्हें उन कामों के विषय में बताता हूँ जो कोई भी हाड़-माँस से बना मज़दूर नहीं कर सकता, लेकिन मैं कर सकता हूँ। मैं सुलगती हुई भट्टी में हाथ डालकर लोहे की तपती हुई

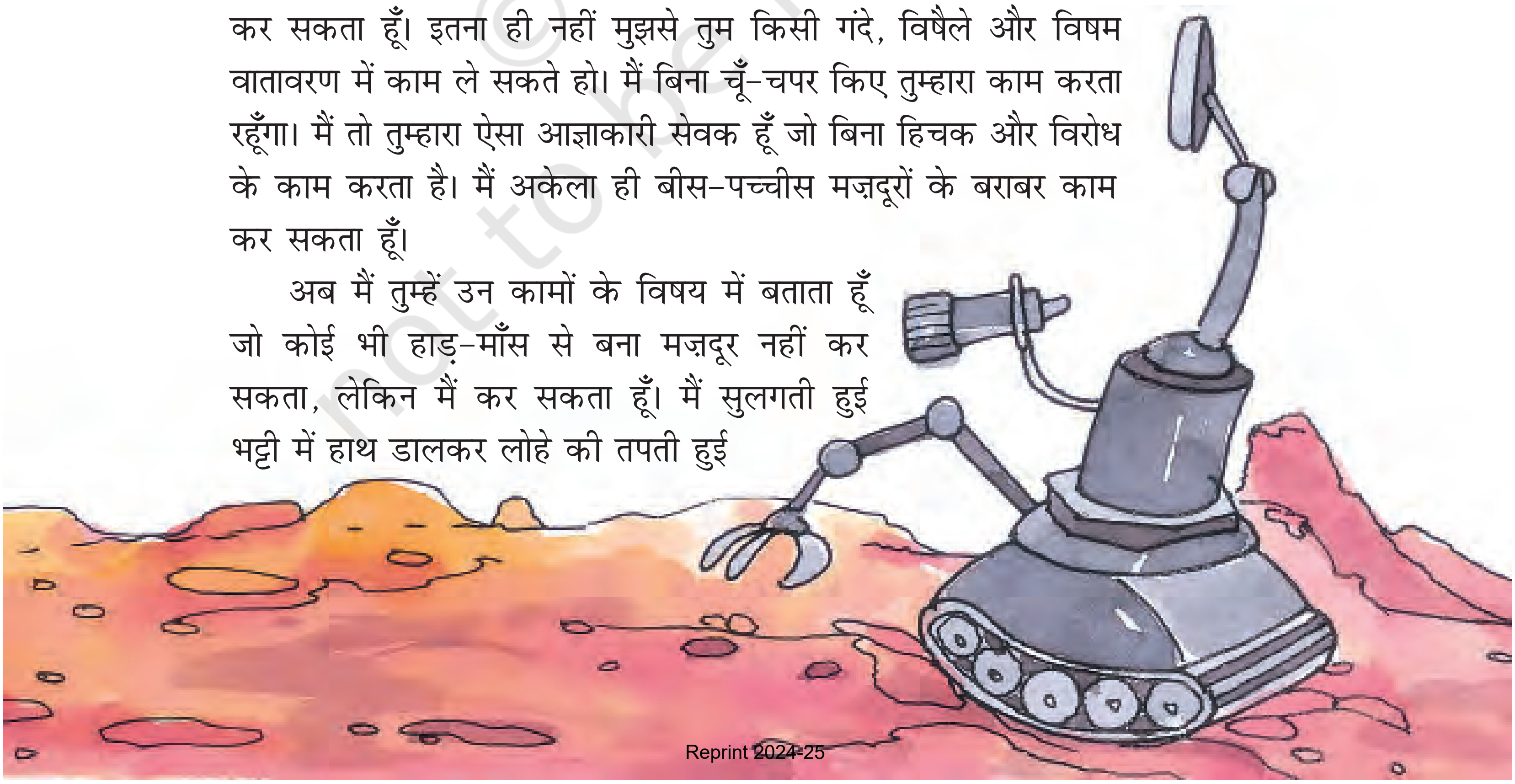

© NCERT not to be republished

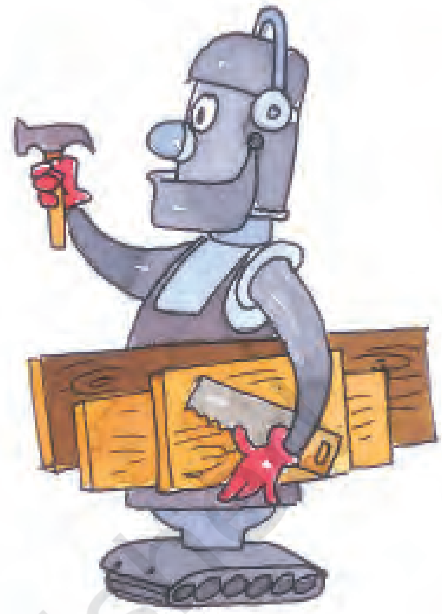

लाल सलाखों को अपने हाथ से पकड़ सकता हूँ। ऐसा करने पर मेरा हाथ नहीं जलता। यदि किसी भवन में आग लग जाए तो मैं बिना डरे और घबराए आग बुझाने के लिए उस भवन में प्रवेश कर सकता हूँ। वहाँ फँसे लोगों की जान बचा सकता हूँ। मुझे कितने ही गहरे समुद्र में डुबा दो, उसकी तलहटी पर पहुँच कर तुम्हारी किसी भी खोई हुई वस्तु को ढूँढ कर ला सकता हूँ। कुछ वर्ष पहले तुमने मेरी ऐसी ही बहादुरी की कहानी पढ़ी भी होगी। जब 'कनिष्क' नामक विमान दुर्घटनाग्रस्त होकर सागर में डूब गया था, तो वह मैं ही था, जो उसके मलवे को समुद्र की तलहटी से बाहर निकाल कर लाया था।

मनुष्य अपनी बुद्धि के बूते पर चंद्रमा की सतह पर जा पहुँचा है। मैं ही उससे पहले चंद्रमा की सतह पर जाकर वहाँ की मिट्टी खोद कर लाया था। चंद्रमा तो चंद्रमा, मैं तो मंगल ग्रह पर भी जा चुका हूँ। वाइकिंग प्रोब में, जो मंगल ग्रह के अध्ययन के लिए अमेरिका ने भेजा था, उसमें मैं ही था। मैंने ही मंगल ग्रह की सतह पर जाकर वहाँ की लाल मिट्टी खोदी थी और उसका परीक्षण करके पता लगाया था कि मंगल ग्रह पर कोई जीवन नहीं है।

यह तो ठीक है कि मैं चल सकता हूँ, हाथों से काम कर सकता हूँ, देख सकता हूँ और वस्तुओं को छू सकता हूँ, लेकिन अभी मैं गंध का अनुभव नहीं कर पाता हूँ। यदि तुम चाहो कि मैं बगीचे से फूल तोड़ लाऊँ तो यह काम मैं कर तो सकता हूँ, लेकिन कौन-सा फूल, गुलाब का या गेंदे का, यह मैं नहीं चुन सकता। मेरी अँगुलियों में और हाथों में कई प्रकार की गतियाँ हैं लेकिन अभी तुम्हारे हाथों की अँगुलियों की गतियों से कम हैं।

चाहे कुछ भी हो मैं तुम्हारे द्वारा बनाया तुम्हारा ही सेवक हूँ। आने वाले कुछ वर्षों में, मैं तुम्हारे काम का बहुत बोझ कम कर दूँगा। मेरी सहायता से तुम्हें सप्ताह में चालीस घंटे काम नहीं करना पड़ेगा। तुम्हारा काम करने का समय मैं कम कर दूँगा। मेरी सहायता से तुम भविष्य में छुट्टियाँ भी अधिक ले सकोगे। यह भी हो सकता है कि तुम घर बैठे ही अपने कंप्यूटर द्वारा मुझे काम करने का आदेश दे दो और मैं तुम्हारी गैरहाज़िरी में तुम्हारा सारा काम करता रहूँ।

अंत में, मैं एक बात ज़रूर कहना चाहूँगा कि मैं चाहे कितना ही चतुर और दक्ष क्यों न हो जाऊँ, रहूँगा तो तुम्हारा गुलाम ही क्योंकि मैं तुम्हारे ही मस्तिष्क की उपज हूँ।

– राजीव गर्ग

अभ्यास

शब्दार्थ

यंत्र	– मशीन	तलहटी	– समुद्र के नीचे की ज़मीन
प्रवाह	– बहाव	दक्ष	– योग्य, कुशल
विद्युत	– बिजली	भविष्य	– आनेवाला समय
संचित	– इकट्ठा	उपज	– फसल

1. पाठ संबंधी प्रश्न

क तुममें और रोबोट में क्या-क्या अंतर है?

ख अगर तुम्हें रोबोट से कुछ काम करवाना हो तो क्या करोगे?

2. सही मिलान करो

क तुम्हारे शरीर में	चाँद पर पहुँचा है।
ख मनुष्य अपनी बुद्धि के बल से	शिराओं और धमनियों का जाल बिछा हुआ है।
ग रोबोट का मस्तिष्क	लोहा-इस्पात और प्लास्टिक का बना है।
घ रोबोट का शरीर	विषैले और विषम वातावरण में काम कर सकता है।
ङ रोबोट	कंप्यूटर है।

3. सोचो और जवाब दो

क अगर रोबोट की आँखें या हाथ न होते तो वह कौन-कौन से काम नहीं कर पाता?

ख रोबोट ऐसे कौन-कौन से काम कर सकता है जो मनुष्य नहीं कर सकता?

ग रोबोट ऐसे कौन-कौन से काम नहीं कर सकता जो मनुष्य कर सकता है?

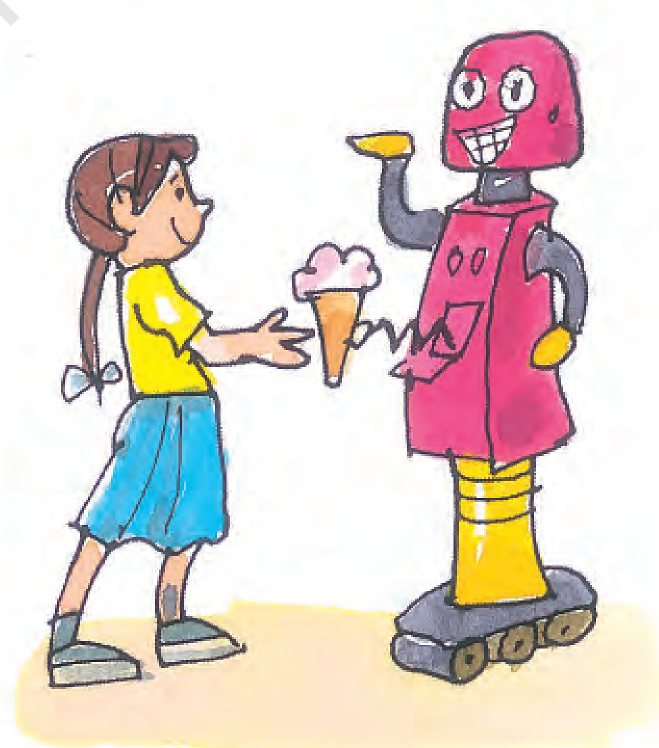

© NCERT not to be republished

4. आओ कुछ और करें

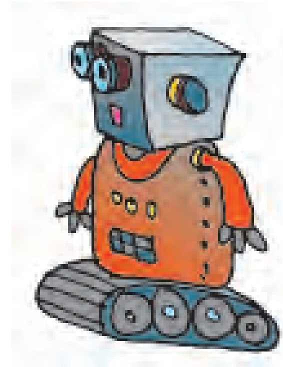

रोबोट कई आकार-प्रकार के होते हैं जैसे- **गाड़ीनुमा, मशीननुमा** आदि। पत्रिकाओं और समाचार-पत्रों से उनके चित्र और मनपसंद लेख काटकर अपनी कॉपी में चिपकाओ। ज़रूरत हो तो कंप्यूटर/इंटरनेट की भी मदद लो।

5. नमूने के अनुसार लिखो

नमूना — सजीव-निर्जीव

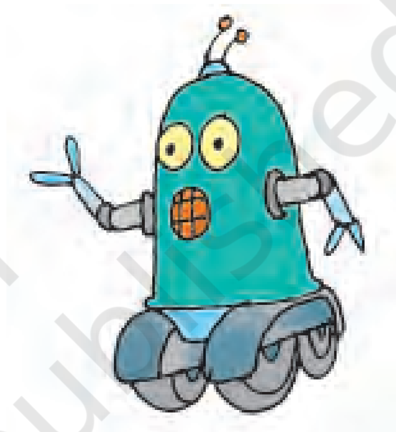

क सम –
ख गरमी –
ग गंदा –
घ कम –
ङ जीवन –
च हाज़िर –

6. सही शब्द चुनकर वाक्य पूरे करो

क मेरा शरीर हाड़-माँस का नहीं **बल्कि** लोहा-इस्पात और प्लास्टिक का बना है। (बल्कि/या)
ख वेणु सातवीं कक्षा में पढ़ता है--------उसकी बहन आठवीं कक्षा में पढ़ती है। (और/फिर)
ग पहले खाना खा लो -----------पढ़ना। (लेकिन/फिर)
घ तुम्हें घूमना पसंद है ------------खेलना? (किंतु/या)
ङ मैं तैरना चाहता हूँ -------------मुझे तैरना नहीं आता। (लेकिन/और)
च छाता लेकर जाओ -----------भीग जाओगे। (फिर/वरना)

7. पढ़ो और समझो

निम्नलिखित वाक्यों को पढ़ो और रेखांकित शब्दों की ओर ध्यान दो। तुम जानते हो कि ये शब्द 'मैं' शब्द के विभिन्न रूप हैं। 'मैं' शब्द सर्वनाम है और ये सभी शब्द भी सर्वनाम हैं। इसी प्रकार 'वह' (लड़का अथवा लड़की) तथा 'तुम' सर्वनामों के विभिन्न रूपों से पाँच-पाँच वाक्य बनाओ।

नमूना — वह यंत्र मानव नहीं है। तुम यंत्र मानव हो।

मैं एक यंत्र मानव हूँ। आम भाषा में लोग मुझे रोबोट कहते हैं।
मेरा शरीर हाड़-माँस का नहीं है।
मेरी भी टाँग, भुजा और अँगुलियाँ हैं।
लेकिन मेरे ये सभी अँग धातुओं से बने हैं।

0752CH04

चौथा पाठ

गुब्बारे पर चीता

"मैं तो ज़रूर जाऊँगा, चाहे कोई छुट्टी दे या न दे।"
बलदेव सब लड़कों को सरकस देखने चलने की सलाह दे रहा है।

बात यह थी कि स्कूल के पास एक मैदान में सरकस पार्टी आई हुई थी। सारे शहर की दीवारों पर उसके विज्ञापन चिपका दिए गए थे। विज्ञापन में तरह-तरह के जंगली जानवर अजीब-अजीब काम करते दिखाए गए थे। लड़के तमाशा देखने के लिए ललचा रहे थे। पहला तमाशा रात को शुरू होने वाला था मगर हेडमास्टर साहब ने लड़कों को वहाँ जाने की मनाही कर दी थी। इश्तिहार बड़ा आकर्षक था–

'आ गया है! आ गया है!'

'जिस तमाशे की आप लोग भूख-प्यास छोड़कर इंतज़ार कर रहे थे, वही बंबई सरकस आ गया है।'

'आइए और तमाशे का आनंद उठाइए। बड़े-बड़े खेलों के सिवा एक खेल और भी दिखाया जाएगा, जो न किसी ने देखा होगा और न सुना होगा।'

लड़कों का मन तो सरकस में लगा हुआ था। सामने किताबें खोले जानवरों की चर्चा कर रहे थे। क्योंकर शेर और बकरी एक बर्तन में पानी पिएँगे! और इतना बड़ा हाथी पैरगाड़ी पर कैसे बैठेगा? पैरगाड़ी के पहिए बहुत बड़े-बड़े होंगे! तोता बंदूक छोड़ेगा! और बनमानुष बाबू बनकर मेज़ पर बैठेगा!

बलदेव सबसे पीछे बैठा हुआ अपनी हिसाब की कॉपी पर शेर की तस्वीर खींच रहा था और सोच रहा था कि कल शनीचर नहीं, इतवार होता तो कैसा मज़ा आता।

बलदेव ने बड़ी मुश्किल से कुछ पैसे जमा किए थे। मना रहा था कि कब छुट्टी हो और कब भागूँ। हेडमास्टर साहब का हुक्म सुनकर वह जामे से बाहर हो गया। छुट्टी होते ही वह बाहर मैदान में निकल आया और लड़कों से बोला, "मैं तो जाऊँगा, ज़रूर जाऊँगा चाहे कोई छुट्टी दे या न दे।" मगर और लड़के इतने साहसी न थे। कोई उसके साथ जाने पर राज़ी न हुआ। बलदेव अब अकेला पड़ गया। मगर वह बड़ा ज़िद्दी था,

© NCERT not to be republished

दिल में जो बात बैठ जाती, उसे पूरा करके ही छोड़ता था। शनीचर को और लड़के तो मास्टर के साथ गेंद खेलने चले गए, बलदेव चुपके से खिसककर सरकस की ओर चला। वहाँ पहुँचते ही उसने जानवरों को देखने के लिए एक आने का टिकट खरीदा और जानवरों को देखने लगा। इन जानवरों को देखकर बलदेव मन में बहुत झुँझलाया वह शेर है! मालूम होता है महीनों से इसे मलेरिया बुखार आ रहा हो। वह भला क्या बीस हाथ ऊँचा उछलेगा! और यह सुंदर-वन का बाघ है? जैसे किसी ने इसका खून चूस लिया हो। मुर्दे की तरह पड़ा है। वाह रे भालू! यह भालू है या सूअर, और वह भी काना, जैसे मौत के चँगुल से निकल भागा हो। अलबत्ता चीता कुछ जानदार है और एक तीन टाँग का कुत्ता भी।

यह कहकर बड़े ज़ोर से हँसा। उसकी एक टाँग किसने काट ली? दुमकटे कुत्ते तो देखे थे, पैरकटा कुत्ता आज ही देखा! और यह दौड़ेगा कैसे?

उसे अफ़सोस हुआ कि गेंद छोड़कर यहाँ नाहक आया। एक आने पैसे भी गए।

इतने में एक बड़ा भारी गुब्बारा दिखाई दिया। उसके पास एक आदमी खड़ा चिल्ला रहा था– 'आओ, चले आओ, चार आने में आसमान की सैर करो।'

© NCERT not to be republished

अभी वह उसी तरफ देख रहा था कि अचानक शोर सुनकर वह चौंक पड़ा। पीछे फिरकर देखा तो मारे डर के उसका दिल काँप उठा। वही चीता न जाने किस तरह पिंजरे से निकलकर उसी की तरफ दौड़ा चला आ रहा था। बलदेव जान लेकर भागा।

इतने में एक और तमाशा हुआ। इधर से चीता गुब्बारे की तरफ दौड़ा। जो आदमी गुब्बारे की रस्सी पकड़े हुए था, वह चीते को अपनी तरफ आता देखकर बेतहाशा भागा। बलदेव को और कुछ न सूझा तो वह झट से गुब्बारे पर चढ़ गया। चीता भी शायद उसे पकड़ने के लिए कूदकर गुब्बारे पर जा पहुँचा। गुब्बारे की रस्सी छोड़कर तो वह आदमी पहले ही भाग गया था। वह गुब्बारा उड़ने के लिए बिलकुल तैयार था। रस्सी छूटते ही वह ऊपर उठा। बलदेव और चीता दोनों ऊपर उठ गए। बात की बात में गुब्बारा ताड़ के बराबर जा पहुँचा। बलदेव ने एक बार नीचे देखा तो लोग चिल्ला-चिल्लाकर उसे बचने के उपाय बतलाने लगे। मगर बलदेव के तो होश उड़े हुए थे। उसकी समझ में कोई बात न आई। ज्यों-ज्यों गुब्बारा ऊपर उठता जाता था चीते की जान निकली जाती थी। उसकी समझ में न आता था कि कौन मुझे आसमान की ओर लिए जाता है। वह चाहता तो बड़ी आसानी से बलदेव को चट कर जाता, मगर उसे अपनी ही जान की फ़िक्र पड़ी हुई थी। सारा चीतापन भूल गया था। आखिर वह इतना डरा कि उसके हाथ-पाँव फूल गए और वह फ़िसलकर उलटा नीचे गिरा। ज़मीन पर गिरते ही उसकी हड्डी-पसली चूर-चूर हो गई।

अब तक तो बलदेव को चीते का डर था। अब यह फ़िक्र हुई कि गुब्बारा मुझे कहाँ लिए जाता है। वह एक बार घंटाघर की मीनार पर चढ़ा था। ऊपर से उसे नीचे के आदमी खिलौनों-से और घर घरौंदों-से लगते थे। मगर इस वक्त वह उससे कई गुना ऊँचा था।

एकाएक उसे एक बात याद आ गई। उसने किसी किताब में पढ़ा था कि गुब्बारे का मुँह खोल देने से गैस निकल जाती है और गुब्बारा नीचे उतर आता है। मगर उसे यह न मालूम था कि मुँह बहुत धीरे-धीरे खोलना चाहिए। उसने एकदम उसका मुँह खोल दिया और गुब्बारा बड़े ज़ोर से गिरने लगा। जब वह ज़मीन से थोड़ी ऊँचाई पर आ गया तो उसने नीचे की तरफ देखा, दरिया बह रहा था। फिर तो वह रस्सी छोड़कर दरिया में कूद पड़ा और तैरकर निकल आया।

–प्रेमचंद

© NCERT not to be republished

अभ्यास

शब्दार्थ

नाहक	– बेकार में		तमाशा	– मनोरंजन	
दरिया	– नदी		इश्तिहार	– विज्ञापन	
जानदार	– ताकतवर		बेतहाशा	– तेज़ी से, बिना इधर-उधर देखे	
सलाह	– मशवरा, राय		फ़िक्र	– चिंता	
आकर्षक	– दूसरों का ध्यान अपनी ओर खींचनेवाला		दुर्दशा	– बुरी हालत	
जामा	– कपड़ा		हिसाब	– गणित	

1. कहानी से

क हेडमास्टर साहब ने बच्चों को सरकस में जाने से क्यों मना किया होगा?

ख सरकस के बारे में कौन-कौन सी अफ़वाहें फैली हुई थीं?

ग बलदेव सरकस में जाकर निराश क्यों हो गया?

घ बलदेव और चीता दोनों गुब्बारे पर ऊपर उठते जा रहे थे। फिर भी चीते ने बलदेव को कोई नुकसान क्यों नहीं पहुँचाया?

ङ कहानी के इस वाक्य पर ध्यान दो–
"इतने में उसे एक बड़ा भारी गुब्बारा दिखाई दिया" तुम्हें क्या लगता है कि गुब्बारा भारी होता है? लेखक ने उसे भारी क्यों कहा है?

2. सोचो और बताओ

क गुब्बारे में से हवा निकलने पर वह नीचे क्यों आने लगता है?

ख स्कूल में तुम्हें क्या-क्या करने के लिए अनुमति लेनी पड़ती है?

ग क्या तुमने अपने आस-पास के जानवरों की दुर्दशा देखी है? उसके बारे में बताओ।

घ सरकस में जानवरों के करतब दिखाए जाते हैं। उनके प्रति क्रूरता बरती जाती है। क्या ऐसे सरकस को मनोरंजन का साधन माना जा सकता है? सरकस को स्वस्थ मनोरंजन का साधन बनाने के लिए क्या किया जाना चाहिए?

© NCERT not to be republished

3. मुहावरे

नीचे लिखे वाक्य पढ़ो। उनमें इस्तेमाल हुए मुहावरों को अपने ढंग से इस्तेमाल करके कुछ और वाक्य बनाओ।

क बलदेव के तो होश उड़े हुए थे।

ख बलदेव के दिल में जो बात बैठ जाती; उसे पूरा करके ही छोड़ता।

ग वह इतना डरा कि उसके हाथ-पाँव फूल गए।

घ ऐसा लगा जैसे किसी ने चीता का खून चूस लिया हो।

ङ बलदेव का दिल काँप उठा।

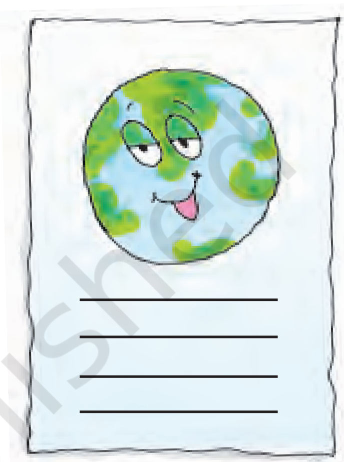

4. तुम्हारी बात

क तुम्हारे स्कूल से भागने के कौन-कौन से बुरे परिणाम हो सकते हैं?

ख किसी चीज़ के प्रचार के लिए विज्ञापन का इस्तेमाल क्यों किया जाता है?

ग तुम भी सड़क सुरक्षा, प्रदूषण और शिक्षा के बारे में विज्ञापन बनाकर अपने मित्र को दिखाओ तथा पूछो कि उसे तुम्हारा विज्ञापन पसंद आया या नहीं। कारण भी पूछो।

5. समझो

अजीब-अजीब	हिसाब-किताब
धीर-धीरे	जब-तब
अभी-अभी	खेल-तमाशा
ज्यों-ज्यों	भूख-प्यास
चूर-चूर	हड्डी-पसली

© NCERT not to be republished

0752CH05

पाँचवा पाठ

थोड़ी धरती पाऊँ

बहुत दिनों से सोच रहा था,
थोड़ी धरती पाऊँ
उस धरती में बागबगीचा,
जो हो सके लगाऊँ।

खिलें फूल-फल, चिड़ियाँ बोलें,
प्यारी खुशबू डोले
ताज़ी हवा जलाशय में
अपना हर अंग भिगो ले।

लेकिन एक इंच धरती भी
कहीं नहीं मिल पाई
एक पेड़ भी नहीं, कहे जो
मुझको अपना भाई।

हो सकता है पास, तुम्हारे
अपनी कुछ धरती हो
फूल-फलों से लदे बगीचे
और अपनी धरती हो।

हो सकता है छोटी-सी
क्यारी हो, महक रही हो
छोटी-सी खेती हो जो
फसलों में दहक रही हो।

© NCERT not to be republished

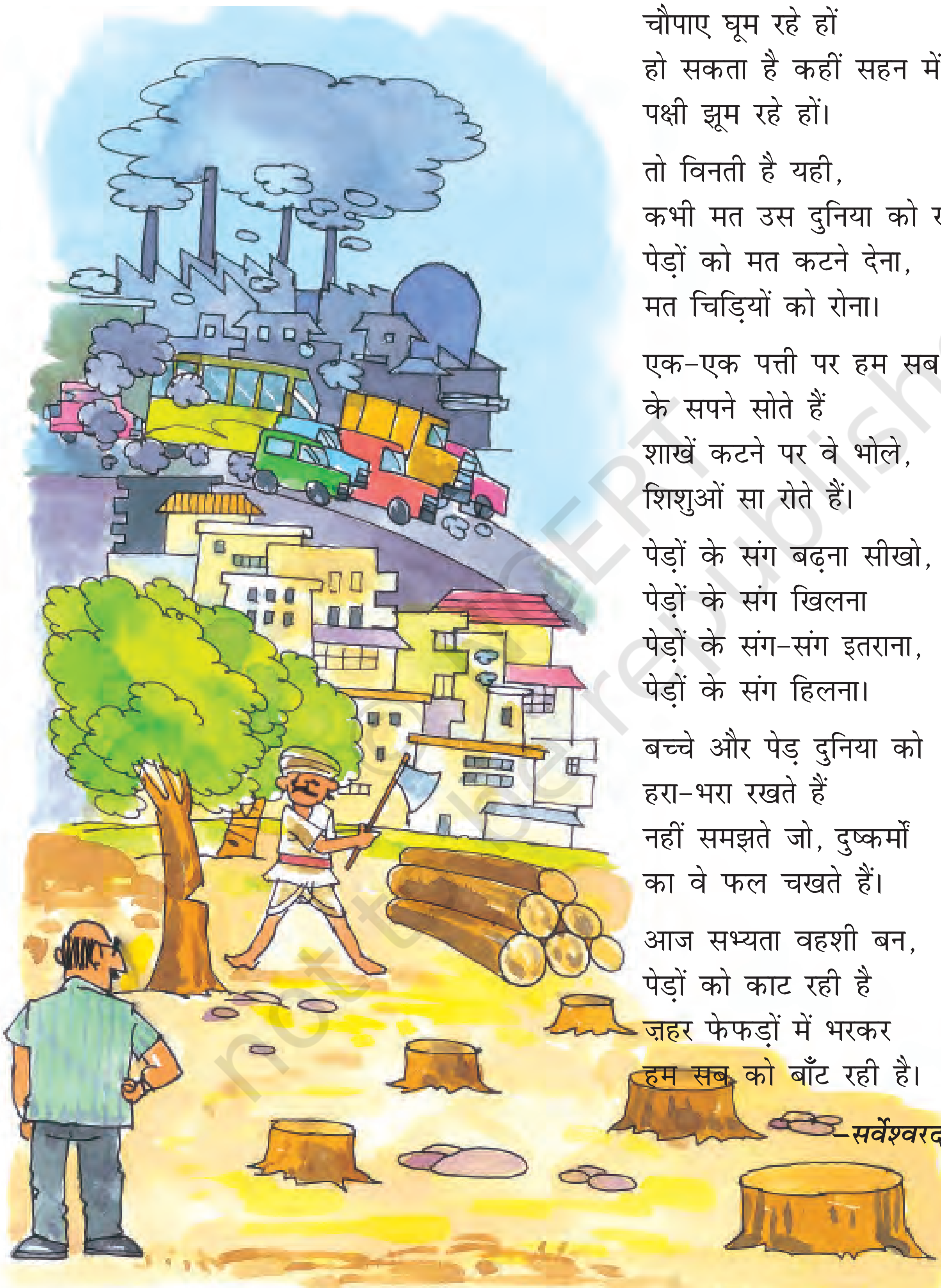

हो सकता है कहीं शांत
चौपाए घूम रहे हों
हो सकता है कहीं सहन में
पक्षी झूम रहे हों।

तो विनती है यही,
कभी मत उस दुनिया को खोना
पेड़ों को मत कटने देना,
मत चिड़ियों को रोना।

एक-एक पत्ती पर हम सब
के सपने सोते हैं
शाखें कटने पर वे भोले,
शिशुओं सा रोते हैं।

पेड़ों के संग बढ़ना सीखो,
पेड़ों के संग खिलना
पेड़ों के संग-संग इतराना,
पेड़ों के संग हिलना।

बच्चे और पेड़ दुनिया को
हरा-भरा रखते हैं
नहीं समझते जो, दुष्कर्मों
का वे फल चखते हैं।

आज सभ्यता वहशी बन,
पेड़ों को काट रही है
जहर फेफड़ों में भरकर
हम सब को बाँट रही है।

–सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

© NCERT not to be republished

अभ्यास

शब्दार्थ

जलाशय	–	तालाब, झील आदि	वहशी	–	असभ्य
दुष्कर्म	–	बुरा काम	सहन	–	आँगन
दहकना	–	आग की लपटें उठना	शिशु	–	बालक
अंग	–	भाग, हिस्सा, शरीर के हाथ-पाँव आदि	विनती	–	प्रार्थना

1. कविता संबंधी प्रश्न

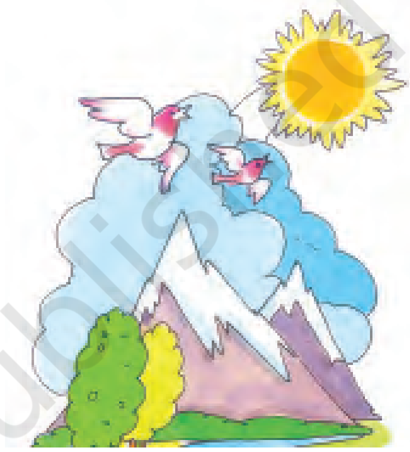

क कवि बाग-बगीचा क्यों लगाना चाहता है?

ख कविता में कवि की क्या विनती है?

ग कवि क्यों कह रहा है कि

'आज सभ्यता वहशी बन,
पेड़ों को काट रही है।'

इस पर अपने विचार लिखो।

घ कविता की इस पंक्ति पर ध्यान दो–

"बच्चे और पेड़ दुनिया को हरा-भरा रखते हैं।"

अब तुम यह बताओ कि पेड़ों और बच्चों में क्या कुछ समानता है? उसे अपने ढंग से लिखो।

2. कैसी लगी कविता

कविता पढ़ो और जवाब दो–

क कविता की कौन-सी पंक्तियाँ सबसे अच्छी लगीं?

ख वे पंक्तियाँ क्यों अच्छी लगीं?

3. बातचीत

नीचे एक लकड़हारे और एक बच्ची की बातचीत दी गई है। इसे अपनी समझ से पूरा करो।

बच्ची	–	ओ भैया! आप इस पेड़ को क्यों काट रहे हो?
लकड़हारा	–	यह तो मेरा काम है।
बच्ची	–	पर यह तो गलत है।
लकड़हारा	–	यह कैसे गलत है? इसी से तो मेरे परिवार का भरण-पोषण होता है।

© NCERT not to be republished

बच्ची---

लकड़हारा ---

----

4. बाग-बगीचा

क तुम पेड़ों को बचाने के लिए क्या कुछ कर सकते हो? बताओ।

ख कविता में कवि ने बगीचे के बारे में बहुत कुछ बताया है। बताओ, नीचे लिखी चीज़ों में से कौन-सी चीज़ें बगीचे में होंगी?

कार	*फूल*
क्यारियाँ	*चिड़ियाँ*
सड़क	*फल*
खेत	*तालाब*
कारखाने	*पेड़*
कुर्सी	*कागज़*
पत्ता	*टहनी*

5. यह भी करो

क तुम्हारे घर के पास कौन-कौन से पेड़-पौधे, पशु-पक्षी आमतौर पर नज़र आते हैं? उनकी सूची बनाओ।

ख अपने आस-पास पता करके ऐसे किसी व्यक्ति से बात करो जिसने कोई पेड़ या पौधा लगाया है। उससे पूछकर निम्नलिखित जानकारी प्राप्त करो–

- पेड़/ पौधे का नाम
- कब लगाया था?
- देखभाल की या नहीं?

  क्या वह पेड़/ पौधा अब भी मौजूद है?

© NCERT not to be republished

6. खोजबीन

हमारे देश में पुराने समय से ही पेड़-पौधों को लगाने और उन्हें कटने से बचाने की परंपरा रही है। कई बार लोगों ने मिलकर पेड़ों को बचाने के लिए आंदोलन भी किया। ऐसे ही किसी आंदोलन के बारे में जानकारी इकट्ठी करके कॉपी में लिखो। इसके लिए तुम्हें पुस्तकालय, समाचार-पत्रों, पत्रिकाओं, शिक्षिका या माता-पिता और इंटरनेट से भी सहायता मिल सकती है।

7. इन शब्दों के समान अर्थ वाले कुछ शब्दों को लिखो

धरती --

चिड़िया --

हवा --

पेड़ --

दुनिया --

8. जंगल, पेड़-पौधों और प्रकृति से संबंधित कुछ कविताओं के बारे में जानकारी प्राप्त करो।

"*जंगल*" शीर्षक से दी गई कविता को पढ़ो और अपने दोस्तों को सुनाओ।

© NCERT not to be republished

जंगल

बादलों का प्यार जंगल
आदमी का यार जंगल
फूल-फल देता सभी कुछ
कर रहा उपकार जंगल
मूक है, सहता इसी से
दुश्मनों के वार जंगल
जब कभी टेसू खिले तो
दहकता अंगार जंगल
कारखानों के धुएँ से
पड़ गया बीमार जंगल
इस तरह कटता रहा तो
जाएगा बन थार जंगल
आदमी की पाशविकता
भोगने को तैयार जंगल।

–लक्ष्मीनारायण पयोधि

0752CH06

छठा पाठ

गारो

मेघालय राज्य की एक प्रमुख जनजाति है गारो। गारो लोग स्वभाव से ही शांतिप्रिय, परिश्रमी और प्रकृति को प्यार करने वाले होते हैं। इसी गारो समाज के दो महापुरुषों के नाम हैं– जा पा जलिन पा और सुक पा बुंगि पा। गारो समाज इन दो महापुरुषों को बड़ी श्रद्धा से याद करता है।

गारो लोग 'मेघालय' में कैसे बस गए, इसके बारे में एक कहानी प्रचलित है। कहा जाता है कि हज़ारों साल पहले गारो लोगों के पूर्वज चीन और तिब्बत की ओर सुदूर घाटियों में इधर–उधर भटकते रहते थे। जहाँ खाने–पीने का साधन मिल जाता, वहाँ रुक जाते। जब भोजन की कठिनाई होती तो नए स्थानों की खोज में निकल पड़ते। यह खानाबदोश जीवन कब तक चलता रहा होगा, कुछ सही–सही नहीं कहा जा सकता।

भोजन की तलाश में भटकने के अतिरिक्त गारो लोगों को विषम मौसम और जंगली जानवरों का भी सामना करना पड़ता था। इस कारण गारो लोग बहुत परेशान होते थे।

उन्हीं दिनों गारो समाज में जा पा जलिन पा और सुक पा बुंगि पा का जन्म हुआ था। इन दो महापुरुषों ने अपने लोगों की परेशानियों को देखा और समझा। दोनों ने गारो लोगों को उस विषम परिस्थिति से निकालकर कहीं अच्छे स्थान पर ले जाने का फ़ैसला किया। दोनों महापुरुषों ने गारो लोगों को एकत्रित किया। उन्होंने बताया कि वे उन्हें एक सुंदर स्थान पर ले जाएँगे। गारो लोग उनका बहुत सम्मान करते थे। सभी लोगों ने उनकी बात मान ली। कहा जाता है कि जलिन पा और बुंगि पा इतने निडर

और प्रभावशाली व्यक्ति थे कि जंगलों के खूँखार जानवर भी उनकी आहट या आवाज़ सुनकर भागने लगते थे। वे भयंकर तूफ़ानों में भी सही मार्ग और दिशा का पता लगा लेते थे। रात में भी उन्हें अपने साथियों का मार्गदर्शन करने में कभी परेशानी नहीं होती थी। अपने सहज बोध और विवेक द्वारा वे आने वाले संकट का पूर्वानुमान कर लेते और अपने साथियों को मुसीबतों से बचा लेते।

इस तरह सारे गारो एक साथ हिमालय की तराई को पार करते हुए ब्रह्मपुत्र नदी–घाटी की ओर बढ़े। वे अपनी संपत्ति–घोड़े, जानवर आदि अपने साथ लेकर चल रहे थे। कभी–कभी महीनों तक चलते रहते और कहीं–कहीं

वर्षों ठहर जाते। वर्षों तक इस प्रकार यात्रा होती रही। वे हिमालय की घाटियों के बीच रास्ता नापते रहे। जलिन पा और बुंगि पा ने अपने साथियों को सदैव आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया।

कई वर्षों की कठिन यात्रा के बाद गारो लोग असम के मैदानी जंगलों में आ पहुँचे। कहा जाता है कि उनका पहला पड़ाव कुचविहार के वनों में हुआ। कुचविहार पर उन दिनों असम के राजा का अधिकार था। उसने गारो लोगों को आगे बढ़ने से रोक दिया। गारो लोग प्रारंभ से ही शांतिप्रिय रहे हैं। उन्होंने लड़ाई का रास्ता नहीं अपनाया। जलिन पा और बुंगि पा ने असम के राजा से बातचीत करके उन्हें समझाया। असम का राजा उन्हें मार्ग देने के लिए सहमत हो गया। उसका विवाह एक गारो सुंदरी से करा दिया गया। इस तरह वातावरण मित्रतापूर्ण हो गया।

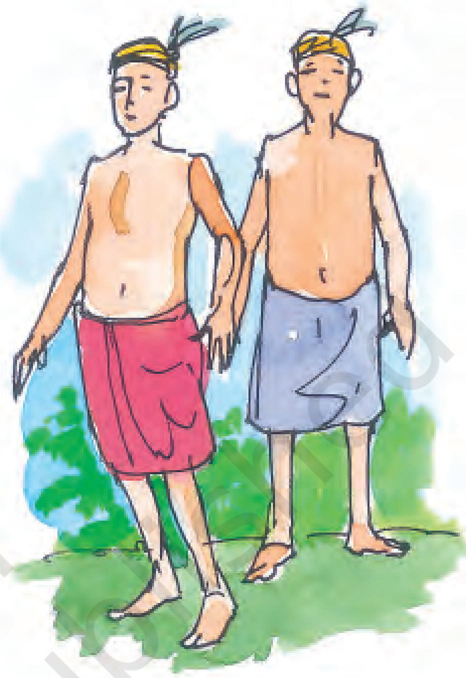

कुछ विद्वानों का अनुमान है कि यह घटना लगभग प्रथम सदी ईसा पूर्व की है। आज कुचविहार इलाका पश्चिम बंगाल राज्य में पड़ता है। कहा जाता है कि गारो समाज के कुछ लोग कुचविहार क्षेत्र में बस गए थे। आज भी कुचविहार क्षेत्र में तथा आसपास के कई स्थानों में गारो समाज के लोग रहते हैं।

अब जलिन पा और बुंगि पा ने अपने लोगों को गारो पहाड़ी की घाटियों की ओर चलने की सलाह दी। यह घाटी बहुत ही सुंदर थी। यहाँ पहाड़ी झरने, जंगली फूल, फल, जड़ी-बूटियाँ और पशु-पक्षी वातावरण को और अधिक आकर्षक बना रहे थे। ज़मीन भी बहुत उपजाऊ थी। इस कारण उन्होंने वहीं बसने का फैसला किया।

आज यह क्षेत्र गारो समाज का मूल निवास स्थान बन गया है। गारो लोग इस क्षेत्र को अपनी पवित्र भूमि मानते हैं।

गारो लोग प्रारंभ से ही प्रकृति के विभिन्न प्रकार के संसाधनों की तलाश करना ही अपना मनोरंजन मानते हैं। जंगलों में घूमना, फल-फूलों, अन्न, कंद-मूल आदि की खोज करना, खेती के लिए उपजाऊ भूमि की पहचान करना आदि उनको शुरू से ही पसंद रहे हैं। आज भी गारो लोगों ने अपने पारंपरिक हुनर को कायम रखा हुआ है।

गारो समाज और गारो संस्कृति भारत का गौरव है। गारो समाज आज भी जलिन पा और बुंगि पा को बड़ी श्रद्धा और आदर से याद करते हैं।

अभ्यास

शब्दार्थ

स्वभाव	–	व्यवहार	प्रचलित	–	चलन में, जो व्यवहार में आ रहा हो
सुदूर	–	बहुत दूर			
विषम	–	कठिन	कायम	–	स्थायी
प्रोत्साहित करना	–	बढ़ावा देना	पड़ाव	–	मुकाम, यात्रियों के रातभर या कुछ समय के लिए ठहरने का स्थान
सहमत	–	राज़ी होना			
अनुमान	–	अंदाज़ा			
पारंपरिक	–	बहुत समय से चला आ रहा	हुनर	–	कारीगरी, कौशल

1. पढ़ो और समझो

जन	+	जाति	=	जनजाति
शांति	+	प्रिय	=	शांतिप्रिय
महा	+	पुरुष	=	महापुरुष
मित्रता	+	पूर्ण	=	मित्रतापूर्ण

2. पाठ संबंधी प्रश्न

क पाठ के आधार पर गारो जनजाति के बारे में कुछ पंक्तियाँ लिखो।

ख गारो लोग एक स्थान पर क्यों बस जाना चाहते थे?

ग जा पा जलिन पा और सुक पा बुंगि पा का नाम आदर से क्यों लिया जाता है?

3. सोचो और जवाब दो

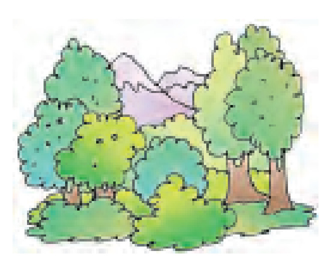

क जंगलों से हमें कौन-कौन सी चीज़ें प्राप्त होती हैं?

ख गारो पहाड़ किस प्रदेश में हैं? मानचित्र पर उस प्रदेश का नाम लिखो।

4. कुछ यह भी करो

क अपने प्रदेश या किसी अन्य राज्य की किसी जनजाति के बारे में पता करो। उसके बारे में अपनी कक्षा में बताओ।

© NCERT not to be republished

ख यह पाठ एक लोककथा पर आधारित है। अगर तुमने भी कभी कोई लोककथा सुनी है तो लोककथा और सामान्य कहानी के बारे में अपनी कक्षा में चर्चा करो।

ग गारो लोगों ने बहुत लंबी यात्रा की थी। यदि तुमने भी कोई लंबी यात्रा की हो तो अपनी यात्रा के बारे में लिखो।

5. बार-बार बोलो

वर्षों तक इस प्रकार यात्रा होती रही।
वर्षों तक इस प्रकार यात्रा होती ही रही।
नीचे लिखे वाक्यों में सही जगह पर 'ही' लगाकर बोलो–

क सुधा सुबह तक पढ़ती रही।

ख यह पंखा हमेशा आवाज़ करता रहता है।

ग गारो लोगों का खानाबदोश जीवन कई सालों तक चलता रहा।

घ सुशील थककर सो गया।

ङ दो घंटे बाद बस चल पड़ी।

6. सही-सही

नीचे लिखे शब्दों में सही अक्षर भरो–

स | श | ष

वि......य	साह......	आक......र्क	पुरु......
......ेष	वि......	वि......म	......त्रु
......टकोण	व......ा	व......र्ा	......मुद्र
......हज			

7. इन शब्दों की रचना देखो

सामाजिक, पारंपरिक। ये शब्द इक (तद्धित) प्रत्यय लगाकर बनाए गए हैं। इसी प्रकार इक प्रत्यय लगाकर पाँच शब्द बनाओ।

सातवाँ पाठ

0752CH07

पुस्तकें जो अमर हैं

कोई दो हज़ार वर्ष हुए, सी ह्यांग ती नाम का एक चीनी सम्राट था। उसे अपनी प्रजा से एक अजीब नाराज़गी थी कि लोग इतना पढ़ते क्यों हैं, और जो लोग किताबें पढ़ नहीं सकते, वे उन्हें सुनते क्यों हैं? उसको विश्वास नहीं था कि अब तक जो पुस्तकें लिखी गईं हैं- वे चाहे इतिहास की हों या दर्शनशास्त्र की या फिर कथा-कहानियों की– उनमें उसका और उसके पूर्वजों का ही गुणगान किया गया है। कौन जाने ऐसे लेखक भी हों जिन्होंने सम्राट को बुरा-भला कहने की हिम्मत की हो!

सी ह्यांग ती का कहना था कि प्रजा को पढ़ने और उन बातों से क्या मतलब? उसे तो चाहिए कि कस कर मेहनत करे, चुपचाप राजा की आज्ञाओं का पालन करती जाए और कर चुकाती रहे। शांति तो बस ऐसे ही बनी रह सकती है।

फिर क्या था! उसने आदेश दिया कि सब पुस्तकें नष्ट कर दी जाएँ। उन दिनों पुस्तकें ऐसी नहीं थी जैसी आज होती हैं। तब छापेखाने तो थे नहीं, लकड़ी के टुकड़ों पर अक्षर खुदे रहते थे। ये ही पुस्तकें थीं। उन्हें छिपाकर रखना भी तो आसान नहीं था। सम्राट के आदमियों ने राज्य का चप्पा-चप्पा छान मारा। नगर-नगर और गाँव-गाँव घूमकर जो पुस्तक हाथ लगी, उसकी होली जला दी। यह बात तब की है जब चीन की बड़ी दीवार का निर्माण हो रहा था। ढेर सारी पुस्तकें जो कि बड़े-बड़े लट्ठों के रूप में थी– पत्थरों की जगह दीवार में चिन दी गईं। अगर किसी विद्वान ने अपनी पुस्तकें देने से इंकार किया तो उसे किताबों सहित बड़ी दीवार में दफ़ना दिया गया। ऐसा था पढ़ने वालों पर राजा का क्रोध!

कई वर्ष बीत गए सम्राट की मृत्यु हो गई। उसके मरने के कुछ वर्ष बाद ही, लगभग सभी पुस्तकें, जिनके बारे में सोचा जाता था कि नष्ट हो गई हैं, फिर से नए, चमकदार लकड़ी के कुंदों के रूप में प्रकट हो गईं। इन पुस्तकों में महान दार्शनिक कनफ्यूशियस की रचनाएँ भी थीं, जिन्हें दुनिया भर के लोग आज भी पढ़ते हैं।

किताबों को इस प्रकार नष्ट करने का यह एकमात्र उदाहरण नहीं है। छठी शताब्दी में नालंदा विश्वविद्यालय उन्नति के शिखर पर था। उन दिनों प्रसिद्ध विद्वान एवं चीनी यात्री ह्वेन-त्सांग वहाँ अध्ययन करता था। एक रात सपने में उसने देखा कि

विश्वविद्यालय का सुंदर भवन कहीं गायब हो गया है और वहाँ शिक्षकों और विद्यार्थियों के स्थान पर भैंसें बँधी हुई हैं। यह सपना लगभग सच ही हो गया, जब आक्रमणकारियों ने विश्वविद्यालय के विशाल पुस्तकालय के तीन विभागों को जलाकर राख कर दिया।

एक समय था जब प्राचीन नगर सिकंदरिया में एक बहुत बड़ा पुस्तकालय था। इसमें अनेक देशों से जमा पांडुलिपियाँ थीं। अनेक देशों से सैकड़ों लोग, जिनमें भारतीय भी थे, अध्ययन करने वहाँ जाते थे। यह अनमोल पुस्तकालय सातवीं शताब्दी में जानबूझकर जला दिया गया। इसे नष्ट करने वाले आक्रमणकारी की दलील यह थी कि अगर इन अनगिनत ग्रंथों में वह नहीं लिखा है जो उसके धर्म की पवित्र पुस्तक में लिखा है, तो उन्हें पढ़ने की कोई ज़रूरत नहीं; और अगर ये पुस्तकें वही कहती

हैं जो उसके पवित्र ग्रंथ ने पहले ही कह रखा है तो उन पुस्तकों को रखने का कोई लाभ नहीं।

इस प्रकार कई बार विद्या और ज्ञान के शत्रुओं ने पुस्तकों को नष्ट किया किंतु वही किताबें, जिनके बारे में सोचा जाता था कि वे हमेशा के लिए बरबाद कर दी गईं हैं, फिर से अपने पुराने या नए रूपों में प्रकट होती रहीं। ठीक भी है पुस्तकें मनुष्य की चतुराई, अनुभव, ज्ञान, भावना, कल्पना और दूरदर्शिता, इन सबसे मिलकर बनती हैं। यही कारण है कि पुस्तकें नष्ट कर देने से मनुष्य में ये गुण समाप्त नहीं हो जाते। दूसरी शताब्दी में डेनिश पादरी बेन जोसफ अकीबा को उसकी पांडित्यपूर्ण पुस्तक के साथ जला दिया गया था। उसके अंतिम शब्द याद रखने योग्य हैं, "कागज़ ही जलता है, शब्द तो उड़ जाते हैं।"

ऐसे भी लोग हैं जिन्हें पुस्तकें प्राणों से भी प्यारी होती हैं। अपनी मनपसंद पुस्तकों के लिए वे बड़े से बड़ा खतरा झेल सकते हैं।

ऐसे भी लोग हैं जो अपनी प्रिय पुस्तक के खो जाने पर परेशान नहीं होते क्योंकि समूची पुस्तक उन्हें ज़बानी याद होती है।

पुराने ज़माने में, लिखे हुए को कंठस्थ कर लेने का लोगों का अनोखा ढंग था। यूनानी महाकवि होमर (जिसका काल ईसा से नौ सौ वर्ष पूर्व है) के महाकाव्य 'इलियड' तथा 'ओडीसी' पेशेवर गानेवालों की पीढ़ी-दर-पीढ़ी को कंठस्थ थे। इन दोनों महाकाव्यों में कुल मिलाकर अट्ठाईस हज़ार पंक्तियाँ हैं। कुछ चारण तो इससे चौगुना याद कर सकते थे।

भारत में सदा से कई भाषाएँ बोली जाती रही हैं किंतु पुराने ज़माने में संस्कृत का प्रयोग सारे भारत में होता था। भारत के कोने-कोने से कवियों और विद्वानों ने संस्कृत के ज़रिये ही भारतीय साहित्य का भंडार भरा। प्राचीन भारत का दर्शन तथा विज्ञान दूर-दूर के देशों तक फैला।

हिमालय पर्वत और गहरे-गहरे सागरों को पार करके भारत की कहानियों का भंडार 'कथा-सरितसागर', 'पंचतंत्र' और 'जातक', दूर-दूर देशों तक पहुँचा।

यह भी सब जानते हैं कि बाइबिल के अनेक दृष्टांतों, यूनानवासी ईसप के किस्सों, जर्मनी के ग्रिम बंधुओं और डेनमार्क के हैंस एंडरसन की कथाओं के मूल भारत में ही हैं।

साहित्य की दृष्टि से भारत का अतीत महान है, इसमें शक नहीं।

–मनोज दास (अनुवाद- बालकराम नागर)

© NCERT not to be republished

अभ्यास

शब्दार्थ

अजीब	– अनोखा, अद्भुत	अनगिनत	– जिसकी गिनती न हो सके
नाराज़गी	– गुस्सा, क्रोध	दूरदर्शिता	– आगे की सोचना
कर	– लगान, टैक्स	ज़बानी	– मौखिक
पांडुलिपियाँ	– पुस्तक की हस्तलिखित प्रति	चारण	– यशगान करने वाला समुदाय
कृत्रिम	– नकली, बनावटी	अतीत	– बीता हुआ समय
जमा	– इकट्ठा	शक	– संदेह

1. पाठ से

क सी ह्यांग ती के समय में पुस्तकें कैसे बनाई जाती थीं?

ख पाठ के आधार पर बताओ कि राजा को पुस्तकों से क्या खतरा था?

ग पुराने समय से ही अनेक व्यक्तियों ने पुस्तकों को नष्ट करने का प्रयास किया। पाठ में से कोई तीन उदाहरण ढूँढ़कर लिखो।

घ बार-बार नष्ट करने की कोशिशों के बाद भी किताबें समाप्त नहीं हुईं। क्यों?

2. तुम्हारी बात

क किताबों को सुरक्षित रखने के लिए तुम क्या करते हो?

ख पुराने समय में किताबें कुछ लोगों तक ही सीमित थीं। तुम्हारे विचार से किस चीज़ के आविष्कार से किताबें आम आदमी तक पहुँच सकीं?

3. सही शब्द भरो

क साहित्य की दृष्टि से भारत का .... महान है। (अतीत/भूगोल)

ख पुस्तकालय के तीन विभागों को जलाकर .... कर दिया गया। (गर्म/राख)

ग उसे किताबों सहित .... में दफ़ना दिया गया। (ज़मीन/आकाश)

घ कागज़ ही जलता है, ... तो उड़ जाते हैं। (शब्द/पांडुलिपियाँ)

© NCERT not to be republished

4. पढ़ो, समझो और करो

इतिहास – इतिहासकार

शिल्प –

गीत –

संगीत –

मूर्ति –

रचना –

5. दोस्ती किताबों से

क तुमने अब तक पाठ्यपुस्तकों के अतिरिक्त कौन-कौन सी पुस्तकें पढ़ी हैं? उनमें से कुछ के नाम लिखो।

ख क्या तुम किसी पुस्तकालय या पत्रिका के सदस्य हो? उसका नाम लिखो।

6. कहानी किताब की

मान लो कि तुम एक किताब हो। नीचे दी गई जगह में अपनी कहानी लिखो।

मैं एक किताब हूँ। पुराने समय से ....

....

....

....

....

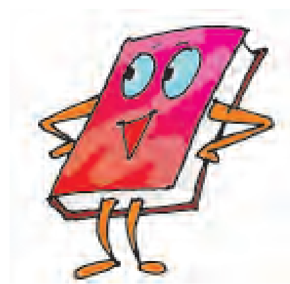

7. वाक्य विश्लेषण

किसी भी वाक्य के दो अंग होते हैं– उद्देश्य और विधेय। वाक्य का विश्लेषण करने में वाक्य के इन दोनों खंडों और अंगों को पहचानना होता है।

वाक्य– मेरा भाई मोहन कक्षा सात में हिंदी पढ़ रहा है।

उद्देश्य			विधेय			
मुख्य उद्देश्य	कर्ता का विशेषण	क्रिया	कर्म	कर्म का विशेषण	पूरक	विधेय विस्तारक
मोहन	मेरा भाई	पढ़ रहा है	हिंदी	–	–	सात कक्षा में

नीचे लिखे वाक्य का विश्लेषण करो।

मोहन के गुरू जी श्याम पट्ट पर प्रश्न लिख रहे हैं।

8. बातचीत

आगे 'किताबें' नामक कविता दी गई है। उसे पढ़ो और उस पर आपस में बातचीत करो।

© NCERT not to be republished

किताबें

किताबें
करती हैं बातें
बीते ज़मानों की
दुनिया की, इंसानों की
आज की, कल की
एक एक पल की
खुशियों की, गमों की
फूलों की, बमों की
जीत की, हार की
प्यार की, मार की।
क्या तुम नहीं सुनोगे
इन किताबों की बातें?
किताबें, कुछ कहना चाहती हैं।
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं।
किताबों में चिड़ियाँ चहचहाती हैं
किताबों में खेतियाँ लहलहाती हैं
किताबों में झरने गुनगुनाते हैं
परियों के किस्से सुनाते हैं
किताबों में रॉकिट का राज़ है
किताबों में साइंस की आवाज़ है
किताबों का कितना बड़ा संसार है
किताबों में ज्ञान की भरमार है।
क्या तुम इस संसार में
नहीं जाना चाहोगे?
किताबें, कुछ कहना चाहती हैं।
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं।

–सफ़दर हाश्मी

© NCERT not to be republished

Reprint 2024-25

आठवाँ पाठ

0752CH08

काबुलीवाला

सहसा मेरी पाँच वर्ष की लाड़ली बेटी मिनी 'अगड़म बगड़म' का खेल छोड़कर खिड़की की तरफ भागी और ज़ोर-ज़ोर से पुकारने लगी, "काबुलीवाले, ओ काबुलीवाले!"

मैं इस समय उपन्यास लिख रहा था। नायक, नायिका को लेकर अँधेरी रात में जेल की ऊँची खिड़की से नीचे बहती नदी के जल में कूद रहा था। घटना वहीं रुक गई।

सोचने लगा–'मेरी बेटी कितनी चंचल और बातूनी है। अभी कुछ पल पहले वह मेरे पैरों के पास बैठी खेल रही थी कि अचानक उसे यह क्या सूझी।' मिनी के इस काम से मुझे अचरज तो नहीं हुआ पर परेशानी ज़रूर महसूस हुई। मैंने सोचा, "बस अब पीठ पर झोली लिए काबुलीवाला आ खड़ा होगा, मेरा सत्रहवाँ अध्याय अब पूरा नहीं हो सकता।"

ज्यों ही काबुलीवाले ने हँस कर मुँह फेरा और मेरे घर की ओर आने लगा त्यों ही वह घर के अंदर भाग आई। उसके मन में एक झूठा विश्वास था कि काबुलीवाला अपनी झोली में उसी की तरह के दो-चार चुराए गए बच्चे छिपाए रहता है। इधर काबुलीवाला आकर मुसकुराता हुआ मुझे सलाम करके खड़ा हो गया। आदमी को घर पर बुलाकर कुछ न खरीदना अच्छा नहीं लगता, इसलिए उससे कुछ खरीदा। दो-चार बातें हुईं। पता चला, उसका नाम रहमत था।

© NCERT not to be republished

अंत में उठकर चलते समय उसने पूछा, "बाबू, तुम्हारी लड़की कहाँ गई?"

मैंने मिनी के डर को पूरी तरह खत्म करने के लिए उसे भीतर से बुलवा लिया। वह मुझसे सट कर काबुलीवाले के चेहरे और झोली की ओर शक भरी नज़र से देखती हुई खड़ी रही। काबुली उसे झोली के अंदर से कुछ सूखे मेवे निकालकर देने लगा पर वह लेने को किसी तरह राज़ी नहीं हुई। दुगने डर से मेरे घुटने से सटकर रह गई।

कुछ दिन बाद एक दिन सवेरे किसी काम से घर से बाहर जाते समय देखा कि मेरी नन्हीं बेटी दरवाज़े के पास बेंच के ऊपर बैठी अपनी बे-सिर-पैर की बातें कर रही है। काबुलीवाला उसके पैरों के पास बैठा मुसकुराता हुआ सुन रहा है। वह बीच-बीच में मिनी की बातों पर अपनी राय भी बताता जाता है। मिनी को अपने पाँच साल के जीवन में पिता के अलावा ऐसा धीरज रखकर उसकी बातों को सुननेवाला कभी नहीं मिला था। मैंने यह भी देखा कि उसका छोटा आँचल बादाम-किशमिश से भरा था। मैंने काबुलीवाले से कहा, "उसे यह सब क्यों दिया? अब फिर मत देना।" मैंने जेब से एक अठन्नी निकाल कर उसको दे दी। काबुलीवाले ने अठन्नी मुझसे लेकर अपने झोले में रख ली।

घर लौटकर आया तो देखा कि उस अठन्नी को लेकर पूरा झगड़ा मचा हुआ है। मिनी की माँ उससे पूछ रही थी, "तुझे यह अठन्नी कहाँ मिली?"

मिनी कह रही थी, "काबुलीवाले ने दी। मैंने माँगी नहीं थी। उसने खुद दे दी।" मैंने मिनी की माँ को समझाया और मिनी को बाहर ले गया। पता चला कि इस दौरान काबुलीवाले ने लगभग रोज़ आकर मिनी को पिस्ता-बादाम देकर उसके नन्हें दिल का विश्वास पा लिया है। वे आपस में दोस्त बन गए हैं। दोनों में कुछ बँधी हुई बातें और हँसी-मज़ाक चलते। काबुली रहमत को देखते ही मेरी बेटी हँसते हुए पूछती, "काबुलीवाले! तुम्हारी झोली में क्या है?"

रहमत हँसते हुए उत्तर देता, "हाथी।"

मतलब उसकी झोली में हाथी है। इस

© NCERT not to be republished

बात से दोनों खूब हँसते। उनमें एक और हँसी भरी बात चलती थी। रहमत मिनी से कहता, "मिनी तुम क्या ससुराल कभी नहीं जाओगी?"

ससुराल का मतलब नहीं समझने के कारण मिनी उलट कर पूछती, "तुम ससुराल जाओगे?"

रहमत ससुर के लिए खूब मोटा घूसा तानकर कहता, "मैं ससुर को मारूँगा।"

सुनकर मिनी 'ससुर' नाम के किसी अनजाने जीव की पिटी-पिटाई हालत के बारे में सोच कर खूब हँसती।

मुझमें देश-विदेश घूमने की इच्छा है लेकिन अपने कमरे से बाहर निकलते ही घबराहट होने लगती है। इसलिए सुबह अपने कमरे में मेज़ के सामने बैठकर इस काबुली के साथ बातचीत करने से बाहर घूमने का काफ़ी काम हो जाता है। वह टूटी-फूटी बंगला में अपने देश की बातें कहता है और उसकी तस्वीरें मेरी आँखों के सामने आ जाती हैं। लेकिन मिनी की माँ बहुत शक्की स्वभाव की महिला थी। रहमत काबुलीवाले पर उन्हें भरोसा नहीं था। उन्होंने मुझसे बार-बार उस पर खास तौर से नज़र रखने के लिए प्रार्थना की। उनके शक को हँस कर उड़ा देने पर उन्होंने कई सवाल किए-'क्या कभी किसी के बच्चे चोरी नहीं जाते? एक लंबे-चौड़े काबुली के लिए एक छोटे से बच्चे को चुरा ले जाना क्या बिलकुल नामुमकिन है?' मुझे मानना पड़ा कि ये बातें नामुमकिन नहीं हैं लेकिन मैं इस कारण भलेमानस रहमत को घर आने से मना नहीं कर सकता था।

हर वर्ष माघ के महीने के बीचों-बीच रहमत अपने देश चला जाता। इस समय वह अपना सारा उधार रुपया वसूल करने में जुटा रहता। लेकिन फिर भी एक बार वह मिनी से ज़रूर मिल जाता। जिस दिन सुबह समय नहीं मिलता तो शाम को आ

पहुँचता। कभी-कभी अँधेरे कमरे में उसे बैठा देख कर सचमुच भय-सा लगता। लेकिन जब उन दोनों की भोली-भाली बातें सुनता तो हृदय प्रसन्नता से भर उठता।

एक दिन सवेरे मैं अपने कमरे में बैठा पढ़ रहा था। तभी सड़क पर बड़े ज़ोर का हल्ला सुनाई पड़ा। आँख उठाई तो देखा, दो पहरेवाले अपने रहमत को बाँधे लिए आ रहे हैं– उसके पीछे तमाशबीन लड़कों की टोली चली आ रही है। रहमत के शरीर और कपड़ों पर खून के दाग हैं। एक पहरेवाले के हाथ में खून से सना छुरा है। मैंने बाहर आकर पहरेवालों को रोककर पूछा, 'मामला क्या है?'

मालूम हुआ कि हमारे एक पड़ोसी ने रामपुरी चादर के लिए रहमत से कुछ रुपया उधार लिया था। उसने झूठ बोलकर रुपया उधार लिया था तथा रुपया देने से इंकार कर दिया और इसी बात को लेकर कहा-सुनी करते-करते रहमत ने उसके छुरा भोंक दिया। रहमत उस झूठे आदमी को तरह-तरह की गालियाँ दे रहा था। तभी 'काबुलीवाले! ओ काबुलीवाले!' पुकारती हुई मिनी घर से बाहर निकल आई।

पलक मारते रहमत का चेहरा आनंद से खिल उठा। उसके कंधे पर आज झोली नहीं थी, इसलिए उसके बारे में कुछ पूछा नहीं जा सकता था। मिनी ने छूटते ही उससे पूछा, "तुम ससुराल जाओगे?"

रहमत ने हँस कर कहा, "वहीं जा रहा हूँ।"

मिनी को उसका जवाब हँसी भरा नहीं लगा, वह हाथ दिखाकर बोला, "ससुर को मारता, पर क्या करूँ हाथ बँधे हैं।"

छुरा मारने के अपराध में रहमत को कई वर्ष की जेल हो गई। मैं उसकी बात करीब-करीब भूल गया। मिनी भी उसे जल्दी भूल गई। धीरे-धीरे उसके नए मित्र बनते गए। उम्र बढ़ने के साथ एक-एक करके सखियाँ जुटने लगीं। मेरे साथ भी अब वह पहले जैसी बातचीत नहीं करती। मैंने तो उसके साथ एक प्रकार की कुट्टी कर ली थी।

बहुत सुहावनी सुबह थी। आज मेरे घर में शहनाई बज उठी थी। उसके स्वर मेरे हृदय को अंदर से रुला रहे थे।

मेरी लाड़ली बेटी मुझसे विदा होने जा रही थी। आज मेरी मिनी का विवाह था।

सवेरे से ही विवाह की तैयारियाँ हो रही थीं। मैं बाहर के कमरे में बैठा हिसाब देख रहा था, तभी रहमत आकर

सलाम करके खड़ा हो गया।

मैं पहले उसे पहचान नहीं सका। उसके पास न वह झोली थी, न उसके वे लंबे बाल। शरीर भी कमज़ोर हो गया था। आखिर उसकी हँसी देखकर उसे पहचाना।

मैंने कहा, "क्यों रे रहमत, कब छूटा?"

उसने कहा, "कल शाम को जेल से छूटा हूँ।"

बात सुनकर कानों में जैसे खटका हुआ। आज के शुभ दिन यह आदमी यहाँ से चला जाता तो अच्छा होता। मैंने उससे कहा, "आज हमारे घर में एक काम है, मुझे बहुत से काम करने हैं, आज तुम जाओ।"

बात सुनते ही वह चल दिया और दरवाज़े के पास पहुँचकर बोला, "क्या एक बार मुन्नी को नहीं देख सकूँगा"।

शायद उसे विश्वास था मिनी अब भी वैसी ही होगी। नन्हीं-सी बच्ची जो पहले की तरह ही 'काबुलीवाले' कहती हुई दौड़ी आएगी, बच्चों जैसी हँसी भरी बातें करेगी। वह पहले की तरह उसके लिए किसी से माँग-चाँग कर एक डिब्बा अँगूर और किशमिश-बादाम लाया था।

मैंने कहा, "आज घर में काम है। वह किसी से मिल नहीं सकेगी।"

वह दुखी मन से 'सलाम बाबू' कहकर दरवाज़े के बाहर चला गया।

मुझे अपने मन में न जाने कैसा एक दर्द महसूस हुआ। सोचा, उसे वापस बुलवा लूँ, तभी देखा वह खुद लौटा आ रहा है।

पास आकर बोला, 'ये अँगूर और थोड़े से किशमिश बादाम मुन्नी के लिए लाया था, दे दीजिएगा।'

उन्हें लेकर जब मैं दाम देने लगा तो वह मेरा हाथ पकड़ कर बोला, "मुझे पैसा मत दीजिए बाबू, जिस तरह तुम्हारी एक लड़की है, उसी तरह देश में मेरी भी एक लड़की है। मैं उसी का चेहरा याद करके तुम्हारी मुन्नी के लिए थोड़ी मेवा लेकर आया हूँ, सौदा करने नहीं।"

यह कहते हुए उसने अपने कुर्ते में कहीं छाती के पास से मैले कागज़ का एक टुकड़ा निकाला और बहुत सावधानी से उसकी तह खोलकर मेरी टेबिल पर बिछा दिया।

देखा, कागज़ पर किसी नन्हे हाथ की छाप थी। फोटो नहीं, रंगों से बना चित्र नहीं, प्यारी बिटिया के हाथ में थोड़ी-सी कालिख लगाकर कागज़ के ऊपर उसकी छाप ले ली गई थी। अपनी प्यारी बिटिया के हाथ की इसी यादगार को सीने से लगाए रहमत कलकत्ते की सड़कों पर मेवा बेचने आता, मानो उस सुंदर, कोमल नन्हीं बच्ची के हाथ की छुअन भर उसके हृदय में अमृत की धारा बहाती रहती।

देखकर मेरी आँखें छलछला आईं। उस समय मैंने समझा कि जो वह है, वही मैं हूँ। वह भी पिता है, मैं भी पिता हूँ। मैंने उसी समय मिनी को भीतर से बुलवाया। शादी की लाल साड़ी पहने, माथे पर चंदन लगाए बहू वेश में मिनी लज्जा से मेरे पास आकर खड़ी हो गई।

उसको देखकर काबुलीवाला सकपका गया। अपनी पुरानी बातचीत नहीं जमा पाया। अंत में हँस कर बोला, "मुन्नी, तू ससुराल जाएगी?"

रहमत का प्रश्न सुनकर लज्जा से लाल होकर मिनी मुँह फेरकर खड़ी हो गई। मुझे काबुलीवाले और मिनी की पहली भेंट याद हो आई और मैं कुछ दुखी हो उठा।

मिनी के चले जाने पर गहरी साँस लेकर रहमत ज़मीन पर बैठ गया। अचानक उसकी समझ में साफ़ आ गया, इस बीच उसकी बेटी भी इसी तरह बड़ी हो गई होगी। इन आठ वर्षों में उस पर क्या बीती होगी, यह भी भला कोई जानता है। उसका चेहरा दुख और चिंता से भर उठा।

मैंने एक नोट निकालकर उसे देते हुए कहा, 'रहमत, तुम अपनी लड़की के पास अपने देश लौट जाओ। तुम्हारा मिलन-सुख मेरी मिनी का कल्याण करे।'

– *रवींद्रनाथ टैगोर*

© NCERT not to be republished

अभ्यास

शब्दार्थ

चंचल – नटखट		नामुमकिन – असंभव	
तमाशबीन – तमाशा देखने वाले		सौदा – वह चीज़ जो बाज़ार से खरीदी जाए, माल	
अचरज – हैरानी, आश्चर्य			

1. बार-बार बोलो

क मिनी ज़ोर-ज़ोर से पुकारने लगी।
ख मिनी एक शक भरी नज़र से देखती हुई खड़ी रही।
ग शरीर भी कमज़ोर हो गया था।
घ काबुलीवाला दरवाज़े के पास खड़ा हो गया।
ङ कागज़ पर किसी नन्हें हाथ की छाप थी।

2. पढ़ो और समझो

क नायक – नायिका
ख बालक – बालिका
ग गायक – गायिका
घ लेखक – लेखिका
ङ सेवक – सेविका

3. पाठ संबंधी प्रश्न

क मिनी को ऐसा क्यों लगता था कि काबुलीवाला अपनी झोली में चुराए हुए बच्चों को छिपाए हुए है?
ख मिनी की काबुलीवाले से मित्रता क्यों हो गई?
ग काबुलीवाला हमेशा पैसे क्यों लौटा देता था?
घ वर्षों बाद मिनी के पिता ने काबुलीवाले को उसकी किस बात से पहचान लिया?

4. सोचो और जवाब दो

क रहमत ने एक धोखेबाज़ आदमी को छुरा मार दिया। क्या उर अगर तुम रहमत की जगह होते तो क्या करते?

© NCERT not to be republished

ख मिनी की माँ रहमत पर नज़र रखना चाहती थी परंतु पिता रहमत को मना नहीं कर पाते थे। तुम्हारे विचार में कौन सही था? क्यों?

ग मान लो तुम मिनी हो। अब अपनी कहानी पूरी कक्षा को सुनाओ।

घ तुम नीचे लिखे वाक्य को अपनी भाषा में कैसे कहोगे?

‘पलक झपकाते ही रहमत का चेहरा आनंद से खिल उठा।’

5. सही मिलान करो

क	बे-सिर-पैर	तुरंत
ख	पलक झपकते ही	बिना मतलब की
ग	बँधी हुई बातें	चेहरा सामने से हटा लेना
घ	बात चलना	निश्चित बातें/एक ही तरह की बातचीत
ङ	मुँह फेरना	बात शुरू होना

6. शब्द जाल

काबुलीवाला मेवे बेचता था। नीचे कुछ मेवों के नाम लिखे हैं। उन्हें दिए गए शब्दजाल में ढूँढो। ये संज्ञा हैं। इसकी विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण होते हैं। उसे भी सोचकर लिखो।

क पिस्ता
ख छुआरा
ग बादाम
घ काजू
ङ किशमिश
च अखरोट

का	जू	का	पि	का
कि	बा	दा	मि	छु
श	पि	स्ता	ट	आ
मि	श	रो	आ	रा
श	अ	ख	रो	ट
छु	बा	दा	म	जू

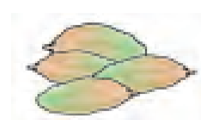

7. घूमना-फिरना

‘काबुलीवाला के साथ बातचीत करने से बाहर जाने का काम हो जाता है।’ मिनी के पिता का ऐसा कहना बताता है कि वह काबुली से बात करके बाहर के देश-दुनिया के बारे में जानकारी प्राप्त कर लेता था। आज इसके अलावा और किन किन साधनों से देश-विदेश के बारे में जानकारी प्राप्त की जा सकती है?

सूची बनाओ।

© NCERT not to be republished

8. देखो, समझो और करो

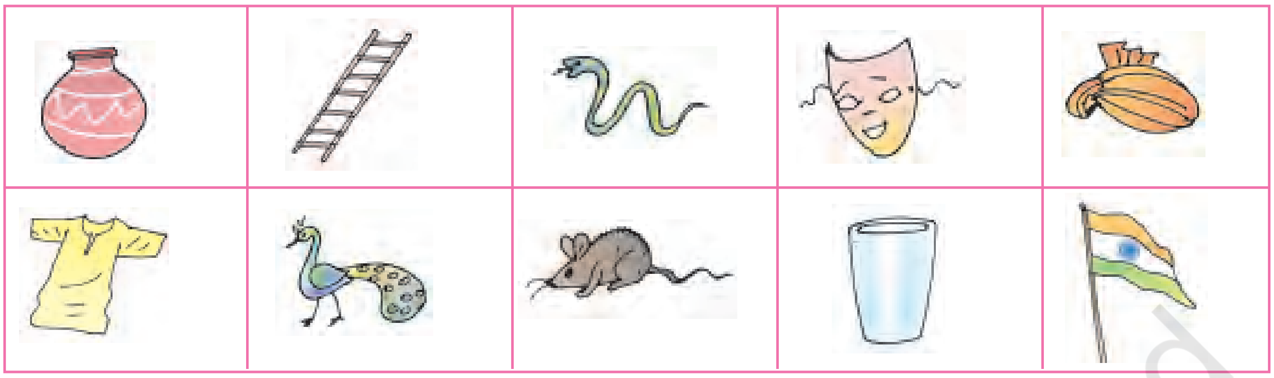

क पहले खाने में घड़ा है।

ख तीसरे खाने में .... है।

ग पाँचवे खाने में पगड़ी है।

घ दसवें खाने में .... है।

ङ .... खाने में कुर्ता है।

च नौवें खाने में .... है।

छ .... खाने में चूहा है।

ज दूसरे खाने में .... है।

झ .... खाने में .... है। यह हमारा राष्ट्रीय पक्षी है।

ञ .... खाने में .... है। इसे चेहरे पर लगाते हैं।

9. इन शब्दों को देखो

बेटी	काबुलीवाला	नायक	जेल
खिड़की	झोली	पैर	बच्चा
रहमत			

ये संज्ञा है। इनकी विशेषता बताने वाले शब्द को विशेषण कहते है। तुम्हें इनके साथ जो भी विशेषण ठीक लगे उसे लगाकर वाक्य बनाओ।

© NCERT not to be republished

0752CH09

नौवाँ पाठ

विश्वेश्वरैया

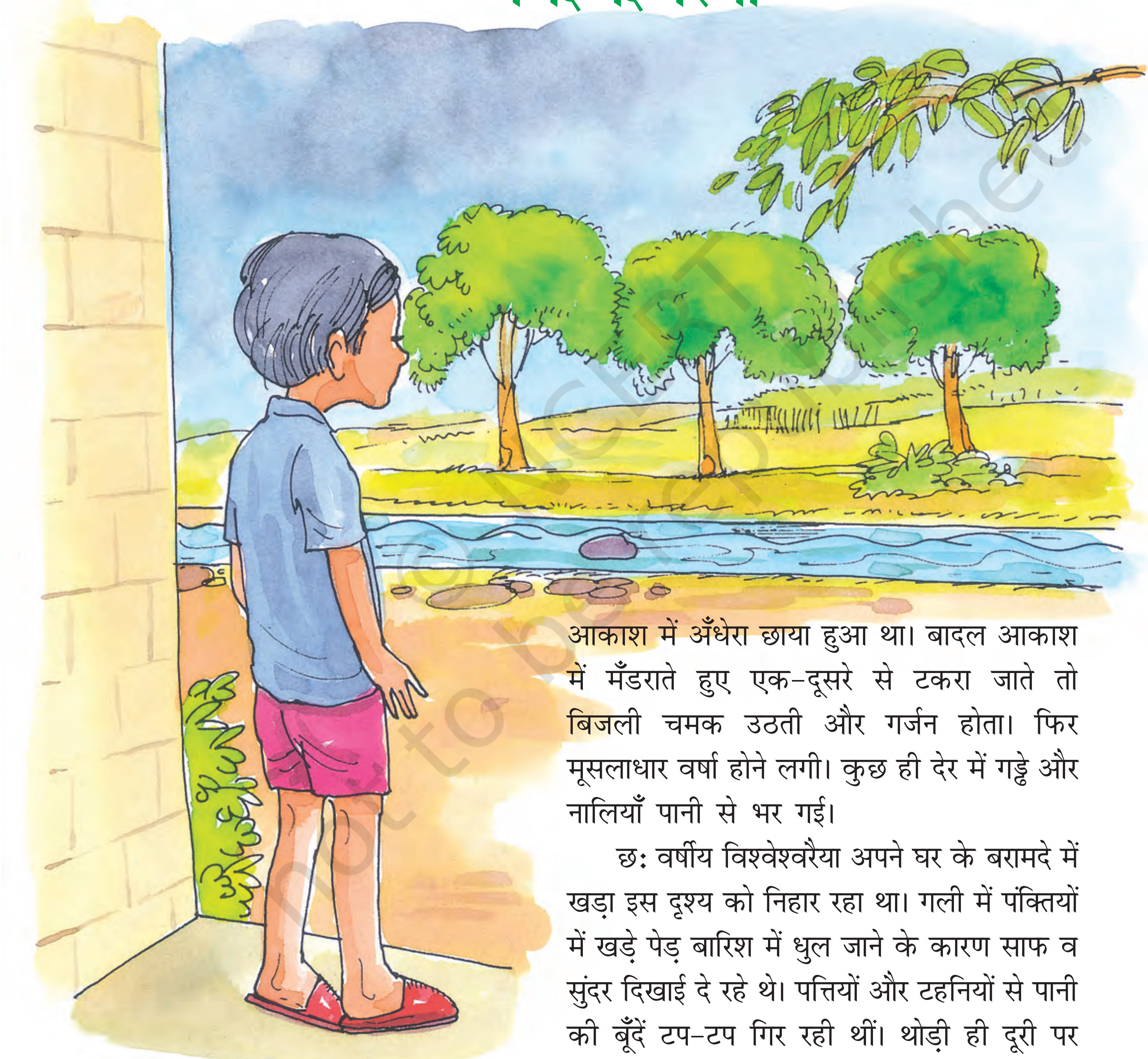

आकाश में अँधेरा छाया हुआ था। बादल आकाश में मँडराते हुए एक-दूसरे से टकरा जाते तो बिजली चमक उठती और गर्जन होता। फिर मूसलाधार वर्षा होने लगी। कुछ ही देर में गड्ढे और नालियाँ पानी से भर गई।

छः वर्षीय विश्वेश्वरैया अपने घर के बरामदे में खड़ा इस दृश्य को निहार रहा था। गली में पंक्तियों में खड़े पेड़ बारिश में धुल जाने के कारण साफ व सुंदर दिखाई दे रहे थे। पत्तियों और टहनियों से पानी की बूँदें टप-टप गिर रही थीं। थोड़ी ही दूरी पर हरे-भरे धान के खेत लहलहा रहे थे।

© NCERT not to be republished

जहाँ विश्वेश्वरैया खड़ा था वहीं निकट की नाली का पानी उमड़-घुमड़ रहा था। उसमें भँवर भी उठ रहे थे। उसने एक जलप्रपात का रूप धारण कर लिया था। वह एक बहुत ही बड़े पत्थर को अपने साथ बहा कर ले जा रहा था जिससे उसकी शक्ति का प्रदर्शन होता था। विश्वेश्वरैया ने हवा और सूर्य की शक्ति को भी देखा था। सामूहिक रूप से वे प्रकृति की असीम शक्ति की ओर संकेत कर रहे थे। 'प्रकृति शक्ति है। मुझे प्रकृति के बारे में सब कुछ जानना चाहिए' वह छोटा-सा लड़का बुदबुदाया।

फिर उसने थोड़ी दूरी पर, निर्भीकता से मूसलाधार वर्षा में खड़ी एक आकृति को ताड़पत्र की छतरी हाथ में लिए देखा। वह उसे तुरंत पहचान गया। उसके कपड़े फटे हुए थे। वह कमज़ोर और भूखी लग रही थी। वह एक झोंपड़ी में रहती थी। उसके बच्चे कभी स्कूल नहीं जाते। वह गरीब थी। विश्वेश्वरैया ने सोचा 'वह इतनी गरीब क्यों है?'

उन्होंने बड़ी गंभीरता से प्रकृति और गरीबी के कारण के बारे में जानने का प्रयास किया।

वह परिवार के बड़ों से इन बातों का उत्तर जानना चाहते थे। वह अपने अध्यापकों से भी ज़िरह करते। वह उनसे प्रकृति के बारे में पूछते– ऊर्जा के कौन से प्रचलित स्रोत हैं? कैसे इस ऊर्जा को पकड़ कर इस्तेमाल में लाया जा सकता है?

वह यह भी पूछते कि आखिर इतने लोग गरीब क्यों हैं? नौकरानी फटी साड़ी क्यों पहनती है? वह झोंपड़ी में क्यों रहती है? क्या उसे अपने बच्चों को स्कूल नहीं भेजना चाहिए?

धीरे-धीरे इस लड़के को प्रकृति और जीवन के बारे में अंतर्दृष्टि प्राप्त होने लगी। उन्हें महसूस हुआ कि ज्ञान असीमित है। उसे बिना रुके, सीखते रहना होगा। तभी उन्हें उन प्रश्नों के उत्तर मिल सकते हैं जो उन्होंने उठाए थे। उन्होंने निश्चय किया कि वह जीवनपर्यंत तक छात्र बने रहेंगे क्योंकि बहुत कुछ सीखना बाकी है। इसी संकल्प

© NCERT not to be republished

में उनकी महानता की कुंजी थी।

मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया का जन्म मैसूर (जो अब कर्नाटक में है) के मुद्देनाहल्ली नामक स्थान पर 15 सितंबर 1861 को हुआ था। उनके पिता वैद्य थे। वर्षों पहले उनके पूर्वज आंध्र प्रदेश के मोक्षगुंडम से यहाँ आए और मैसूर में बस गए थे।

दो वर्ष की आयु से ही उनका परिचय रामायण, महाभारत और पंचतंत्र की कहानियों से हो गया था। ये कहानियाँ हर रात घर की वृद्ध महिलाएँ उन्हें सुनाती थीं। कहानियाँ शिक्षाप्रद व मनोरंजक थीं। इन कहानियों से विश्वेश्वरैया ने ईमानदारी, दया और अनुशासन जैसे मूल मानवीय मूल्यों को आत्मसात किया। विश्वेश्वरैया चिक्बल्लापुर के मिडिल व हाईस्कूल में पढ़े। जब उन्हें 'गाड सेव द किंग' (ईश्वर राजा को सुरक्षित रखे) वाला गीत गाने को कहा गया तो उन्हें पता चला कि भारत एक ब्रिटिश उपनिवेश है, अपने मामलों में भी भारतीयों को कुछ कहने का अधिकार न था। भारत की अधिकांश संपत्ति विदेशियों ने हड़प ली थी।

क्या उनके घर में काम करने वाली नौकरानी विदेशी शासन के कारण गरीब है? यह प्रश्न विश्वेश्वरैया के मस्तिष्क में उमड़ता-घुमड़ता रहा। राष्ट्रीयता की चिंगारी जल उठी थी और उनके जीवन में यह अंत समय तक जलती रही। विश्वेश्वरैया जब केवल चौदह वर्ष के थे तभी उनके पिता की मृत्यु हो गई। क्या वह अपनी पढ़ाई जारी रखें? इस प्रश्न पर तब विचार-विमर्श हुआ जब उन्होंने अपनी माँ से कहा, "अम्मा, क्या मैं बंगलौर जा सकता हूँ? मैं वहाँ मामा रामैया के यहाँ रह सकता हूँ। वहाँ मैं कॉलेज में प्रवेश ले लूँगा।"

© NCERT not to be republished

'पर बेटा... तुम्हारे मामा अमीर नहीं है। तुम उन पर बोझ क्यों बनना चाहते हो?' उनकी माँ ने तर्क किया।

"अम्मा... मैं अपनी ज़रूरतों के लिए स्वयं कमाऊँगा। मैं बच्चों को ट्यूशन पढ़ा दूँगा। अपनी फ़ीस देने और पुस्तकें खरीदने के लिए मैं काफ़ी धन कमा लूँगा। मेरे ख्याल से मेरे पास कुछ पैसे बच भी जाएँगे, जिन्हें मैं मामा को दे दूँगा," विश्वेश्वरैया ने समझाया।

उनके पास हर प्रश्न का उत्तर था– समाधान ढूँढ़ने की क्षमता उनके पूरे जीवन में लगातार विकसित होती रही और इस कारण वह एक व्यावहारिक व्यक्ति बन गए। यह उनके जीवन का सार था और उनका संदेश था पहले जानो, फिर करो। बड़े होकर यही विश्वेश्वरैया एक महान इंजीनियर बने।

– आर.के. मूर्ति (अनुवाद – सुमन जैन)

अभ्यास

शब्दार्थ

मँडराना	– चारों ओर घूमना	आत्मसात करना	– आचरण में ढालना
मूसलाधार वर्षा	– तेज़ बारिश	मस्तिष्क	– दिमाग
निहारना	– देखना	ऊर्जा	– शक्ति
बुदबुदाना	– धीरे-धीरे बोलना	असीमित	– जिसकी सीमा न हो
उपनिवेश	– वह देश जिस पर किसी अन्य देश का अधिकार हो	अंतर्दृष्टि	– समझ
		आकृति	– आकार

1. पाठ से

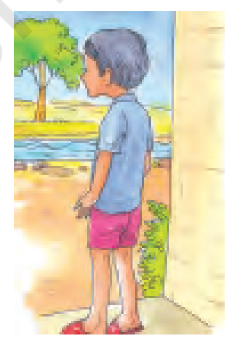

क अपने घर के बरामदे में खड़े होकर छः वर्षीय विश्वेश्वरैया ने क्या देखा?

ख तुम्हें विश्वेश्वरैया की कौन सी बात सबसे अच्छी लगी? क्यों?

ग विश्वेश्वरैया के मन में कौन-कौन से सवाल उठते थे?

2. सवाल

विश्वेश्वरैया अपने मन में उठे सवालों का जवाब अपने अध्यापकों और बड़ों से जानने की कोशिश करते थे। क्या तुम अध्यापकों से पाठ्य पुस्तकों के सवालों के अतिरिक्त भी कुछ सवाल पूछते हो? कुछ सवालों को लिखो जो तुमने अपने अध्यापकों से पूछे हों।

3. अनुभव और विचार

क तुम्हें सर्दी-गरमी के मौसम में अपने घर के आसपास क्या-क्या दिखाई देता है?

ख तुमने पाठ में पढ़ा कि एक बूढ़ी महिला ताड़पत्र से बनी छतरी लिए खड़ी थी। पता करो कि ताड़पत्र से और क्या-क्या बनाया जाता है?

ग विश्वेश्वरैया ने बचपन में रामायण, महाभारत, पंचतंत्र आदि की कहानियाँ सुनी थीं। तुमने पाठ्यपुस्तक के अलावा कौन-कौन सी कहानियाँ सुनी हैं? किसी कहानी के बारे में बताओ।

© NCERT not to be republished

घ तुम्हारे मन में भी अनेक सवाल उठे होंगे जिनके जवाब तुम्हें नहीं मिले। ऐसे ही कुछ सवालों की सूची बनाओ।

ङ तुम्हारे विचार से गरीबी के क्या कारण हैं?

4. वाक्य बनाओ

नीचे पाठ में से चुनकर कुछ शब्द दिए गए हैं। तुम इनका प्रयोग अपने ढंग के वाक्य बनाने में करो।

क हरे-भरे

ख उमड़-घुमड़

ग एक-दूसरे

घ धीरे-धीरे

ङ टप-टप

च फटी-पुरानी

5. इन वाक्यों को पढ़ो और इन्हें प्रश्नवाचक वाक्यों में बदलो

क ज्ञान असीमित है।

ख आकाश में अँधेरा छाया हुआ था।

ग गड्ढे और नालियाँ पानी से भर गईं।

घ उसने एक जल-प्रपात का रूप धारण कर लिया।

ङ राष्ट्रीयता की चिंगारी जल उठी थी।

च मैं काफी धन कमा लूँगा।

© NCERT not to be republished

0752CH10

दसवाँ पाठ

हम धरती के लाल

देश हमारा, धरती अपनी, हम धरती के लाल,
नया संसार बसाएँगे, नया इंसान बनाएँगे।
सुख-स्वप्नों के स्वर गूँजेंगे, मानव की मेहनत पूजेंगे,
नयी कल्पना, नयी चेतना की हम लिए मशाल-
समय को राह दिखाएँगे।

एक करेंगे हम जनता को, सीचेंगे समता ममता को,
नयी पौध के लिए पहन कर जीवन की जयमाल-
रोज़ त्योहार मनाएँगे।
सौ-सौ स्वर्ग उतर आएँगे, सूरज सोना बरसाएँगे,
दूध पूत के लिए बदल देंगे तारों की चाल-
नया भूगोल बनाएँगे। नया संसार बसाएँगे।

–शील

© NCERT not to be republished

अभ्यास

शब्दार्थ

लाल	–	पुत्र, बेटा, सपूत	स्वप्न	–	सपना
संसार	–	दुनिया	समता	–	बराबरी का भाव
स्वर	–	ध्वनि, आवाज़	पूत	–	पुत्र, बेटा
राह	–	मार्ग, रास्ता, पथ	त्योहार	–	पर्व, उत्सव

1. कविता से

नीचे लिखी पंक्तियाँ पढ़कर उत्तर दो।

क "नया संसार बसाएँगे, नया इंसान बनाएँगे।"

तुम्हारे विचार से नया संसार बसाने और नया इंसान बनाने की ज़रूरत है या नहीं? कारण भी बताओ।

ख "रोज त्योहार मनाएँगे।"

तुम्हारे विचार से क्या रोज़ त्योहार मनाना उचित है? क्यों?

ग "सौ सौ स्वर्ग उतर आएँगे, सूरज सोना बरसाएँगे।
दूध पूत के लिए बदल देंगे तारों की चाल"

क्या ऊपर लिखी बातें संभव हो सकती हैं? कारण भी पता करो?

घ कवि 'हम धरती के लाल' ही क्यों कहना चाहते हैं?

2. वाक्य बनाओ

'सुख-स्वप्नों के स्वर गूँजेंगे।'
इसमें 'स' अक्षर बार-बार आया है।
तुम भी नीचे लिखे वर्णों से वाक्य बनाओ। ध्यान रखो कि उस वर्ण से शुरू होने वाले तीन शब्द तुम्हारे वाक्य में हों।

क क...

ख त...

ग द...

© NCERT not to be republished

3. शब्द–सज्जा

क 'हम नया भूगोल बनाएँगे।'
ऊपर लिखी पंक्ति में 'भूगोल' शब्द की जगह और कौन–कौन से शब्द आ सकते हैं? नीचे दिए गए बॉक्स में से छाँटो और कुछ शब्द स्वयं सोचकर लिखो।

संसार, कल्पना, इंसान, पौधा, चेतना, ज़माना, दुनिया, इतिहास

ख नीचे लिखे शब्दों को तुम्हारे घर की भाषा में क्या कहते हैं?

क	देश	....	**घ**	जनता	....
ख	धरती	....	**ङ**	त्योहार	....
ग	दूध	....	**च**	इंसान	....

4. सोचो और बताओ

क कवि एक नया संसार बसाना चाहता है जहाँ मानव की मेहनत पूजी जाए, जहाँ जनता में एकता हो, जहाँ सब समान हों, जहाँ सभी सुखी हों। तुम्हें अपने संसार में ऊपर लिखी बातें नज़र आती हैं या नहीं? इन बातों के होने या न होने का क्या कारण है?

ख तुम भी अपने संसार के बारे में कल्पनाएँ ज़रूर करते होंगे। अपने सपनों की दुनिया के बारे में बताओ।

5. कैसे?

बताओ तुम ये काम कैसे करोगे? शिक्षक से भी सहायता लो।

क समय को राह दिखाना
ख जनता को एक करना
ग तारों की चाल बदल देना
घ नया भूगोल बनाना
ङ नया इंसान बनाना

6. यह भी करो

ऐसी ही एक और कविता खोजकर अपनी कॉपी में लिखो। तुम स्वयं भी कविता की रचना कर सकते हो।

© NCERT not to be republished

ग्यारहवाँ पाठ

0752CH11

पोंगल

भारत एक कृषि प्रधान देश है। भारतीय किसान का जीवन प्रकृति से जुड़ा रहता है। वह प्रकृति के साथ ही हँसता-रोता है, नाचता-गाता है। बुआई, सिंचाई, निराई आदि खेती-बाड़ी के सारे काम वह मौसम के अनुसार करता है। जब चारों तरफ हरियाली छा जाती है, वृक्ष-लताएँ फूलों से लद जाती हैं तब मानव भी गुनगुनाने लगता है। जब खेत-खलिहान अनाज से भर जाते हैं तब उसके पाँव थिरक उठते हैं, वह उत्सव मनाने के लिए मचल उठता है। त्योहारों का जन्म यहीं से होता है।

पोंगल नयी फसल का त्योहार है। यह संक्रांति के दिन मनाया जाता है। तमिलनाडु का यह प्रमुख त्योहार है। यह जनवरी में मनाया जाता है। 'पोंगल' में खेतों से सुनहरे रंग का नया धान कटकर किसान के घर आता है। गन्ने के खेत की फसल तैयार होती है। बगीचे में हल्दी का पौधा लहलहा उठता है। इन्हें देखकर किसान का मन नाच उठता है। उसके जीवन में मिठास आ जाती है। संक्रांति के दिन नए चावल का मीठा भात बनाकर सूर्य को चढ़ाया जाता है। इसी मीठे भात को पोंगल कहते हैं। इसी से त्योहार का नाम पोंगल पड़ा है।

तमिलनाडु में पोंगल त्योहार पौष मास में आरंभ के चार दिनों तक मनाया जाता है। पोंगल के पहले दिन लोग 'भोगी' का त्योहार मनाते हैं। पूरे घर की सफ़ाई की जाती है। इससे पर्यावरण स्वच्छ हो जाता है। भोगी के दिन शाम को बच्चे ढोल और बाजे बजाकर खुशियाँ मनाते हैं।

पोंगल के दिन घर-आँगन को रंगोली से सजाते हैं। नहा-धोकर सभी लोग नए कपड़े पहनते हैं। उस दिन सब कुछ नया होता है। आँगन में अँगीठी जलाकर नए बर्तन में पोंगल पकाया जाता है। बर्तन में हल्दी का पौधा बाँध दिया जाता है। गन्ने के रस में नयी फसल का चावल पकाया जाता है। जब चावल उबलकर ऊपर उठता है तो उसमें दूध डाल देते हैं। दूध के साथ उफनता हुआ पोंगल बर्तन के ऊपर से उमड़ता है और चारों ओर रिसकर आँच में टपक पड़ता है। उस समय चारों ओर इकट्ठे लोग खुशी से नाच उठते हैं और जोश में चिल्लाते हैं- 'पोंगलो पोंगल!' उन्हें प्रसन्नता होती है कि सूर्य और अग्नि ने पोंगल का भोग स्वीकार कर लिया है। लोग अपने पास-पड़ोस में पोंगल बाँटते हैं। उसके बाद मित्र और सगे-संबंधी सब मिलकर बढ़िया भोजन करते हैं। पोंगल के दिन हर तमिल भाषी, चाहे वह भारत के किसी कोने में रहता हो अपने घर पहुँचने की कोशिश करता है। विवाहित-लड़कियाँ पोंगल मनाने अपने मायके आती हैं।

तीसरे दिन 'माट्टु पोंगल' मनाया जाता है। तमिल भाषा में 'माडु' गाय-बैलों को कहते हैं। 'माडु' का अर्थ 'धन' भी है। पुराने समय में गाय-बैल ही हमारी संपत्ति थे।

© NCERT not to be republished

माट्टु पोंगल के दिन गाय-बैलों को अच्छी तरह नहलाया जाता है। लोग उनके सींगों को रँगते हैं और उन्हें रंगीन कपड़ों से सजाते हैं। लोग उनके गले में फूल-मालाएँ पहनाते हैं तथा उन्हें गुड़ और अच्छी-अच्छी चीज़ें खिलाते हैं। शाम को मैदान में बैलों को दौड़ाया जाता है।

चौथे दिन 'काणुम पोंगल' होता है। खाना बाँधकर पूरा परिवार घर से बाहर निकल पड़ता है। जगह-जगह मेले लगते हैं। लोग मेलों में घूमते हैं या आसपास के स्थान देखने के लिए चल पड़ते हैं। इस तरह चारों दिन लोग अपने दैनंदिन कामों से छुट्टी लेकर इस त्योहार का आनंद लेते हैं।

खेती से संबंधित यह त्योहार पूरे भारत में किसी न किसी रूप में मनाया जाता है। गुजरात से लेकर बंगाल तक लोग इसे संक्रांति के नाम से मनाते हैं। उत्तर भारत में संक्रांति पर स्नान का महत्त्व है। गंगा, यमुना, नर्मदा, क्षिप्रा आदि नदियों में लोग स्नान करते हैं। चावल और मूँग की दाल की खिचड़ी बनाकर खाते-खिलाते हैं।

महाराष्ट्र में यह तिल-गुड़ का त्योहार है। तिल स्नेह का प्रतीक है और गुड़ मिठास का। लोग एक दूसरे को तिल-गुड़ देकर कहते हैं- 'तिल-गुड़-घ्या, गोड बोला' अर्थात- तिल और गुड़ खाओ और मीठा बोलो। पंजाब में संक्रांति से एक दिन पहले

© NCERT not to be republished

'लोहड़ी' का त्योहार मनाते हैं। 'लोहड़ी' का अर्थ है- 'छोटी' या छोटी संक्रांति। लोग अपने घर से बाहर, आँगन में या चौराहे पर लकड़ियाँ जमा करते हैं। संध्या के बाद स्त्री-पुरुष और बच्चे वहाँ इकट्ठे होते हैं और लोहड़ी जलाते हैं। नयी फसल का मक्का आग में डाला जाता है। यह खील की तरह फूल उठता है। लोग मक्के की फूली (खील) और तिल की रेवड़ियाँ बाँटते हैं। आपस में प्रेम से मिलते हैं। अरुणाचल प्रदेश में 'पानुङ' का त्योहार भी इसी समय मनाया जाता है।

विविधता में एकता भारत की विशेषता है। एक ही त्योहार को लोग विविध रूपों में मनाकर भारत की सांस्कृतिक एकता को मज़बूत बनाते हैं।

अभ्यास

शब्दार्थ

बुआई करना	-	बीज बोना
सिंचाई करना	-	पौधों/फसलों को पानी देना, सींचना
निराई करना	-	फसल के आसपास उग आए घास-फूस को हटाना
गुनगुनाना	-	धीमी आवाज़ में गाना
थिरकना	-	नाचना
चढ़ाना	-	भोग लगाना
पौष	-	पूस का महीना(जनवरी के आसपास)
मंगलमय	-	कल्याणकारी
आँच	-	आग की लौ
मायका	-	महिलाओं के लिए माँ का घर
खील	-	आग में भुना हुआ चावल
भोज	-	दावत
प्रतीक	-	निशानी
दैनंदिन	-	दैनिक, रोज़ाना

© NCERT not to be republished

1. पाठ से

क पोंगल का त्योहार अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग नामों से मनाया जाता है। पाठ के आधार पर तालिका भरो।

क्र.स.	राज्य	त्योहार का नाम

ख पोंगल चार दिनों तक मनाया जाता है। प्रत्येक दिन के मुख्य क्रिया-कलाप बताओ।

ग भारत एक कृषि प्रधान देश है। इस बात को सिद्ध करने के लिए दो उदाहरण दो।

2. तुम्हारी पसंद

तुम्हारे प्रदेश में कौन-कौन से त्योहार मनाए जाते हैं? तुम्हें कौन सा त्योहार सबसे अच्छा लगता है?

3. खेती-बाड़ी

पाठ में खेती से जुड़े अनेक शब्द आए हैं। तुम खेती या बागवानी से जुड़े कुछ औज़ारों के नाम बताओ।

4. रंगोली

क पोंगल के दिन घर आँगन को रंगोली से सजाते हैं। रंगोली बनाने के लिए किन-किन चीज़ों का प्रयोग किया जाता है? सूची बनाओ।

ख नीचे दी गई जगह में रंगोली का कोई डिज़ाइन बनाओ।

© NCERT not to be republished

5. खाना-पीना

पाठ में ऐसी अनेक चीज़ों के नाम आए हैं जिन्हें खाने-पीने के लिए प्रयोग में लाया जाता है। बताओ, इनका प्रयोग किन पकवानों में होता है?

क चावल ---------------------

ख हल्दी ----------------------

ग गुड़ -----------------------

घ मक्का ---------------------

ङ गन्ना ---------------------

च दूध ----------------------

छ तिल ---------------------

© NCERT not to be republished

बारहवाँ पाठ

0752CH12

शहीद झलकारीबाई

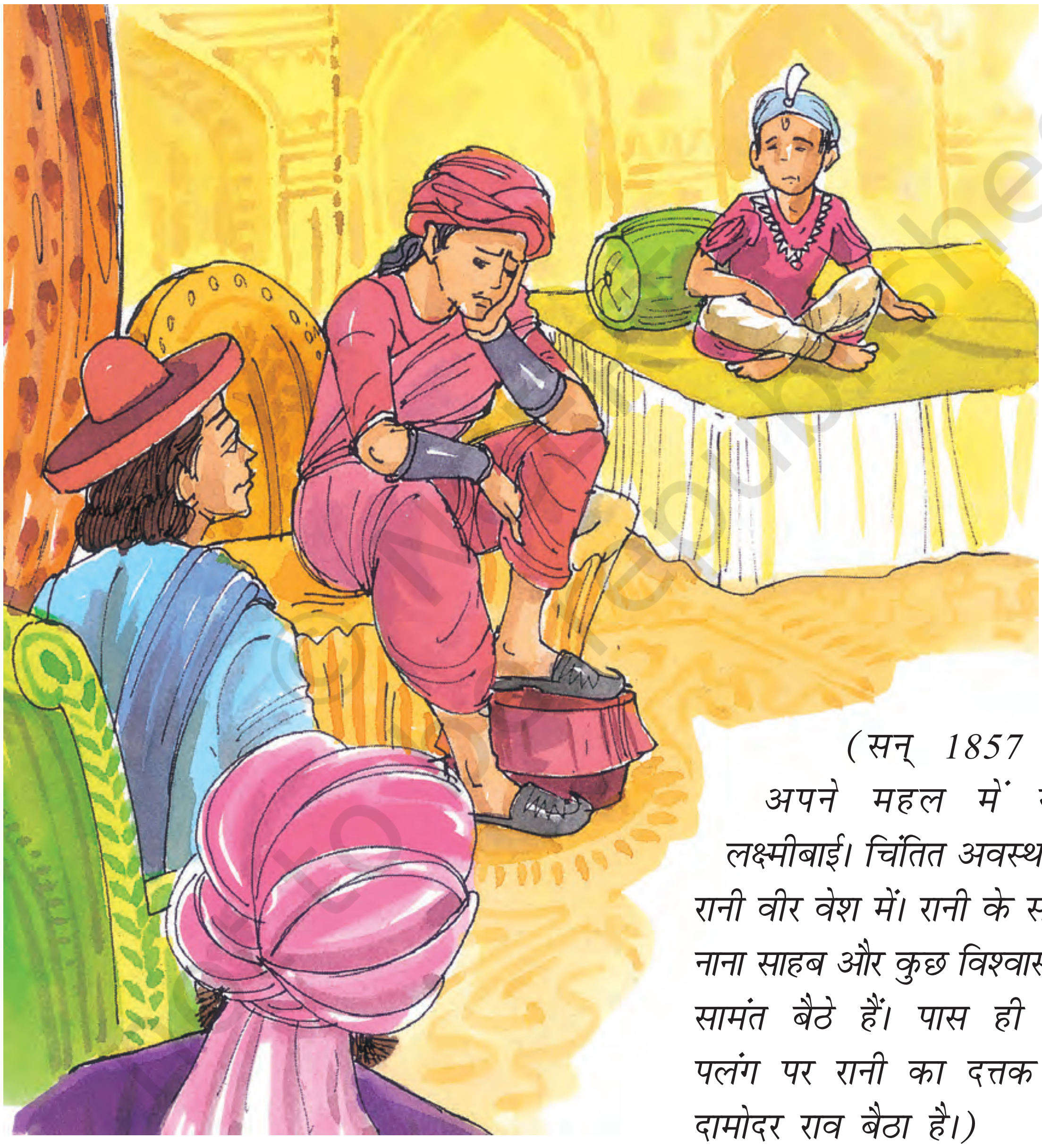

(सन् 1857 ई.। अपने महल में रानी लक्ष्मीबाई। चिंतित अवस्था में। रानी वीर वेश में। रानी के सामने नाना साहब और कुछ विश्वासपात्र सामंत बैठे हैं। पास ही एक पलंग पर रानी का दत्तक पुत्र दामोदर राव बैठा है।)

लक्ष्मीबाई : झाँसी के वीरो ! अंग्रेजों की विशाल सेना ने झाँसी को चारों ओर से घेर लिया है। हमारी सेना के अनेक योद्धा वीरगति प्राप्त कर चुके हैं। कुछ

सरदार अँग्रेजों से जा मिले हैं। अब हमारे सामने सिर्फ़ एक ही रास्ता बचा है कि हम किले का फाटक खोल दें और अंग्रेज सेना को युद्ध के लिए ललकारें। झाँसी की रक्षा के लिए अपने प्राणों के बलिदान का अवसर आ गया है।

सामंत : रानी माँ ! झाँसी पर अपने प्राण न्योछावर करने के लिए हम हमेशा तैयार हैं। दामोदर राव की सुरक्षा का प्रबंध भी हम कर लेंगे। लेकिन जान–बूझकर अंग्रेजों की सेना के सामने जाकर प्राण देने में कोई समझदारी नहीं है। उचित तो यह होगा कि किसी तरह किले से सुरक्षित निकलकर हम फिर से सेना को संगठित करें।

लक्ष्मीबाई : मैं आपकी योजना से सहमत हूँ। लेकिन अब इस अंग्रेज़ सेना का घेरा तोड़कर किले से बाहर निकल पाना आसान नहीं है। आप तो जानते ही हैं कि अंग्रेजों के भेदिए महल के भीतर भी हैं। ये गद्दार हमारी छोटी–छोटी बातें अंग्रज़ों तक पहुँचा रहे हैं। ऐसी स्थिति में चूहे की तरह बिल में घुसे रहने से तो अच्छा है, हम शेर की तरह शत्रु पर टूट पड़ें।

नाना साहब : महारानी ! आप जैसी वीराँगना को हम मरने के लिए अंग्रेज़ों की सेना के सामने नहीं धकेल सकते। मैं सामंत की बात से सहमत हूँ। आपका यह निर्णय वीरोचित तो है पर रणनीति की दृष्टि से उचित नहीं है। हमें कोई दूसरा रास्ता निकालना होगा। आपकी पराजय केवल रानी लक्ष्मीबाई की पराजय नहीं होगी। वह झाँसी की पराजय होगी। यदि झाँसी इतनी आसानी से पराजित हो गई तो पूरे भारत में चल रहा स्वाधीनता संग्राम ही खतरे में पड़ जाएगा। सबकी निगाहें आप पर टिकी हैं।

(एक दूत का प्रवेश)

दूत : महारानी की जय !

लक्ष्मीबाई : कहो दूत, क्या समाचार लाए हो?

दूत : रानी माँ। समाचार शुभ नहीं है। अंग्रेजों की सेना का घेरा झाँसी के चारों ओर बहुत कड़ा हो गया है। उन्होंने आपको ज़िंदा ही पकड़ने की ठान रखी है।

लक्ष्मीबाई : दूत तुम जाओ ! घटनाओं पर कड़ी निगाह रखो !

(दूत तेज़ कदमों से चला जाता है।)

not to be republished © NCERT

लक्ष्मीबाई : नाना साहब ! मैं किसी भी हालत में अंग्रेजों की बंदी नहीं होना चाहती। मैं झाँसी की रक्षा करते–करते शहीद हो जाना पसंद करूँगी। आप आदेश दें ! हम अंग्रेजों पर टूट पड़ना चाहते हैं।

(तभी नारी सेना की सेनापति झलकारीबाई का प्रवेश होता है। लक्ष्मीबाई की हमशक्ल)

झलकारीबाई: महारानी की जय !

लक्ष्मीबाई : आओ–आओ झलकारी बाई। तुम ठीक समय पर आई हो। कहो तुम्हारी सेना की क्या तैयारी है?

झलकारीबाई: रानी माँ! नारी सेना, अगली पंक्तियों में लड़ने के लिए तैयार खड़ी है। बस... आपके आदेश की प्रतीक्षा है ! किंतु.........

लक्ष्मीबाई : किंतु क्या? निस्संकोच होकर कहो।

झलकारीबाई: गुस्ताखी माफ़ हो रानी माँ ! मुझे इस निर्णायक युद्ध के लिए आपके वस्त्र, पगड़ी और कलगी चाहिए।

लक्ष्मीबाई : *(मुसकुराकर)* ठीक है झलकारी ! तुम्हारी यह इच्छा अवश्य पूरी होगी।

(लक्ष्मीबाई कक्ष में जाती है और एक थाल लाकर झलकारी को देती है। झलकारी उन्हें झुककर प्रणाम करती है। झलकारी का प्रस्थान।)

लक्ष्मीबाई : देखा आपने! अब अधिक सोचने का समय नहीं है। मैदान में उतरने का समय है।

(नाना साहब कुछ कहना ही चाहते हैं तभी झलकारीबाई, रानी की वेशभूषा में सजकर प्रवेश करती है। सब लोग उसे देखकर आश्चर्य में पड़ जाते हैं।)

नाना साहब : अरे झलकारीबाई, तुम ! तुम तो हू–ब–हू लक्ष्मीबाई लग रही हो।

झलकारीबाई: आप ठीक कह रहे हैं। मेरा रानी माँ का हमशक्ल होना शायद आज ही सार्थक हो सकता है।

नाना साहब : झलकारीबाई, तुम्हारी योजना क्या है। यह तो बताओ?

© NCERT not to be republished

झलकारीबाई: मेरी योजना यह है कि मैं अपनी सेना लेकर किले के मुख्य द्वार पर अंग्रेजों को उलझा कर रखूँगी। इससे उनका पूरा ध्यान मुझ पर बना रहेगा। वे रानी समझकर मुझे घेरने का प्रयत्न करते रहेंगे। इतने में रानी माँ दामोदर सहित अपने वीर सैनिकों को लेकर महल से दूर निकल जाएँगी।

लक्ष्मीबाई : लेकिन झलकारीबाई ! मैं तुम्हें जानबूझ कर मौत के मुँह में कैसे जाने दूँ?

झलकारीबाई: रानी माँ ! आप ही ने हमें सिखाया है कि वीराँगनाएँ मौत से नहीं डरतीं। हम प्राणों की बाज़ी लगाकर भी झाँसी की रक्षा करेंगे।

नाना साहब : झलकारीबाई ठीक कहती है महारानी। अब आप देर मत कीजिए। झलकारीबाई जैसा कहती है वैसा ही कीजिए।

(महारानी की जय ! झाँसी अमर रहे का जयघोष करते झलकारीबाई का प्रस्थान।)

(लक्ष्मीबाई के वेश में झलकारीबाई अंग्रेजी सेना पर टूट पड़ती है। अंग्रेजी सेना को काटती हुई झलकारीबाई आगे बढ़ती है। नारी सेना भी शत्रुओं को काटती हुई युद्ध कर रही है। झलकारीबाई के शरीर पर अनेक घाव लगे हैं। वह निढाल है। यह देखकर जनरल अपने सैनिकों को हुक्म देता है।)

जनरल रोज़: सैनिको! झाँसी की रानी को ज़िंदा पकड़ना है। चारों ओर से घेर लो इसे। *(अंग्रेजी सेना आगे बढ़ती है और निढाल झलकारीबाई को बंदी बना लेती है।)*

जनरल रोज़: झाँसी की रानी ! तुम बहुत बहादुर हो। हम तुम्हारी बहादुरी को सलाम करते हैं। लेकिन अब तुम हमारी बंदी हो।

झलकारीबाई: जनरल ! झाँसी की रानी को ज़िंदा पकड़ना तुम्हारे बूते की बात नहीं है। वह जीवित रहने तक स्वतंत्र ही रहेगी। रानी झाँसी की जय! *(इतना कहकर झलकारीबाई बेहोश हो जाती है।)*

जनरल रोज़: क्या यहाँ कोई है जो इसे पहचानता हो?

(एक सैनिक वहाँ आता है और झलकारी को पहचान लेता है।)

सैनिक : जनरल, आपका शक ठीक है। यह लक्ष्मीबाई नहीं उनकी हमशक्ल झलकारीबाई है।

जनरल रोज़: झलकारीबाई! इस औरत ने तो कमाल कर दिया। *(झलकारीबाई का मृत शरीर धरती पर पड़ा है। जनरल रोज़ अवाक खड़ा है। पर्दा धीरे–धीरे गिरता है।)*

अभ्यास

शब्दार्थ

चिंतित	– परेशान, सोच में पड़ा हुआ	विश्वासपात्र	– जिस पर विश्वास हो
दत्तकपुत्र	– गोद लिया हुआ बेटा	गद्दार	– विद्रोही
ललकारना	– चुनौती देना	संग्राम	– युद्ध
स्वाधीनता	– आज़ादी	वीराँगना	– वीर स्त्री
निगाह	– नज़र, दृष्टि	कलगी	– पगड़ी में लगाया जाने वाला तुर्रा
निर्णायक	– निर्णय करने वाला	हू-ब-हू	– वैसा का वैसा
हमशक्ल	– एक जैसी शक्ल/सूरत वाला	अवाक होना	– आश्चर्य में पड़ जाना
निढाल होना	– थक जाना	रणनीति	– योजना

1. पढ़ो, समझो और करो

नमूना चिंता – चिंतित

जीवन –

सुरक्षा –

पीड़ा –

पराजय –

उपेक्षा –

2. मुहावरे

अपने प्राणों के बलिदान का अवसर आ गया है। इस वाक्य में "प्राणों का बलिदान देना" मुहावरे का प्रयोग हुआ है। नीचे कुछ और मुहावरे दिए गए हैं। इनका अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

टूट पड़ना, निढाल होना, वीरगति पाना, शहीद हो जाना, प्राणों की बाज़ी लगाना, मौत के मुँह में जाना, मैदान में उतरना

3. पाठ से

क झलकारीबाई ने लक्ष्मीबाई से किस चीज़ की माँग की और क्यों?

ख 'जनरल! झाँसी की रानी को ज़िंदा पकड़ना तुम्हारे बूते की बात नहीं है।' यह किसने, किससे और क्यों कहा?

ग झलकारीबाई का क्या हुआ?

© NCERT not to be republished

4. खोजबीन

क आज़ादी की लड़ाई में हिस्सा लेने वाली कुछ महिलाओं के नाम बताओ।

ख रानी लक्ष्मीबाई के बारे में सुभद्रा कुमारी चौहान की एक प्रसिद्ध कविता तुमने पढ़ी या सुनी होगी। उसकी कुछ पंक्तियाँ कॉपी में लिखो।

5. तुम्हारी समझ

तुमने इस एकाँकी को अच्छी तरह से अवश्य समझ लिया होगा। अब इस पाठ के आधार पर स्वयं कुछ प्रश्न बनाकर लिखो। उनके उत्तर भी लिखो। यदि तुम चाहो तो उत्तर देने के लिए अपने साथी से प्रश्नों की अदला-बदली भी कर सकते हो।

6. हमशक्ल

झलकारीबाई, लक्ष्मीबाई की हमशक्ल थी। तुम्हारे विचार से हमशक्ल होने के क्या-क्या लाभ या हानि हो सकते हैं?

7. अभिनय

इस एकाँकी का कक्षा में अभिनय करो। तुम बिना किसी अतिरिक्त सामग्री के भी नाटक का मंचन कर सकते हो।

© NCERT not to be republished

तेरहवाँ पाठ

नृत्यांगना सुधा चंद्रन

जीवन के किसी भी क्षेत्र में शिखर तक पहुँचने के लिए दृढ़ इच्छाशक्ति और कठिन परिश्रम की आवश्यकता पड़ती है। कई लोग ऐसे भी हुए हैं जिन्होंने शारीरिक अक्षमता के बावजूद संघर्ष किया है और लक्ष्य प्राप्त किया है। ऐसा ही एक नाम है— सुधा चंद्रन। पैर खराब होने के बावजूद वह चोटी की नृत्यांगना बनी।

सुधा चंद्रन की माता श्रीमती थंगम एवं पिता श्री के. डी. चंद्रन की हार्दिक इच्छा थी कि उनकी पुत्री राष्ट्रीय ख्याति की नृत्यांगना बने। इसीलिए चंद्रन दंपत्ति ने सुधा को पाँच वर्ष की अल्पायु में ही मुंबई के प्रसिद्ध नृत्य विद्यालय 'कला-सदन' में प्रवेश दिलवाया। पहले-पहल तो नृत्य विद्यालय के शिक्षकों ने इतनी छोटी उम्र की बच्ची के दाखिले में हिचकिचाहट महसूस की किंतु सुधा की प्रतिभा देखकर सुप्रसिद्ध नृत्य शिक्षक श्री के.एस. रामास्वामी भागवतार ने उसे शिष्या के रूप में स्वीकार कर लिया और सुधा उनसे नियमित प्रशिक्षण प्राप्त करने लगी। जल्द ही सुधा के नृत्य कार्यक्रम विद्यालय के आयोजनों में होने लगे। नृत्य के साथ-साथ, अध्ययन में भी सुधा ने अपनी प्रतिभा दिखाई लेकिन सुधा के स्वप्नों की इंद्रधनुषी दुनिया में एकाएक 2 मई, 1981 को अँधेरा छा गया।

2 मई को तिरूचिरापल्ली से मद्रास जाते समय उनकी बस दुर्घटनाग्रस्त हो गई। इस दुर्घटना में सुधा के बाएँ पाँव की एड़ी टूट गई और दायाँ पाँव बुरी तरह जख्मी हो गया। प्लास्टर लगने पर बायाँ पाँव तो ठीक हो गया किंतु दायीं टाँग में 'गैंग्रीन' (एक प्रकार का कैंसर) हो गया। ऐसे में डॉक्टरों के पास सुधा की दायीं टाँग काट

देने के अलावा और कोई रास्ता नहीं था। अंततः दुर्घटना के एक महीने बाद सुधा की दायीं टाँग घुटने के साढ़े सात इंच नीचे से काट दी गई। एक टाँग का कट जाना संभवतः किसी भी नृत्यांगना के जीवन का अंत ही होता। सुधा के साथ भी यही हुआ। सुधा ने लकड़ी के गुटके के पाँव और बैसाखियों के सहारे चलना शुरू कर दिया और मुंबई आकर वह पुनः अपनी पढ़ाई में जुट गई।

इसी बीच सुधा ने मैग्सेसे पुरस्कार विजेता सुप्रसिद्ध कृत्रिम अंग विशेषज्ञ डॉ. पी.सी. सेठी के बारे में सुना। वह जयपुर गई और डॉ. सेठी से मिली। डॉ. सेठी ने सुधा को आश्वस्त किया कि वह दुबारा सामान्य ढँग से चल सकेगी। इस पर सुधा ने पूछा– "क्या मैं नाच सकूँगी?" डॉ. सेठी ने कहा–"क्यों नहीं, प्रयास करो तो सब कुछ संभव है।" डॉ. सेठी ने सुधा के लिए एक विशेष प्रकार की टाँग बनाई जो अल्यूमिनियम की थी और इसमें ऐसी व्यवस्था थी कि वह टाँग को आसानी से घुमा सकती थी। सुधा एक नए विश्वास के साथ मुंबई लौटी और उसने नृत्य का अभ्यास शुरू करना चाहा किंतु इस प्रयास में कटी हुई टाँग से

© NCERT not to be republished

खून निकलने लगा। कोई भी सामान्य व्यक्ति इस तरह की घटना के बाद दुबारा नाचने की हिम्मत कतई नहीं करता किंतु सुधा साधारण मिट्टी की नहीं बनी थी। जल्दी ही उसने अपनी निराशा पर काबू प्राप्त किया और अपने नृत्य प्रशिक्षक को साथ लेकर डॉ. सेठी से पुनः मिली।

डॉ. सेठी ने सुधा के नृत्य प्रशिक्षक से नृत्य हेतु पाँवों की विभिन्न मुद्राओं को गंभीरता से देखा-परखा और एक नयी टाँग बनवाई, जो नृत्य की विशेष ज़रूरतों को ध्यान में रखकर बनाई गई थी। टाँग लगाते समय डॉ. सेठी ने सुधा से कहा– "मैं जो कुछ कर सकता था मैंने कर दिया, अब तुम्हारी बारी है।" सुधा ने पुनः नृत्य का अभ्यास प्रारंभ किया। शुरुआत बहुत अच्छी नहीं रही। कटे हुए पाँव के ठूँठ से खून रिसने लगा किंतु सुधा ने कड़ा अभ्यास जारी रखा। कठिन अभ्यास से सुधा जल्द ही सामान्य नृत्य मुद्राओं को प्रदर्शित करने में सफल हो गई। 28 जनवरी, 1984 को मुंबई के 'साउथ इंडिया वेलफ़ेयर सोसायटी' के हाल में एक अन्य नृत्यांगना प्रीति के साथ सुधा ने दुबारा नृत्य के सार्वजनिक प्रदर्शन का आमंत्रण स्वीकार कर लिया। यह दिन सुधा की ज़िंदगी

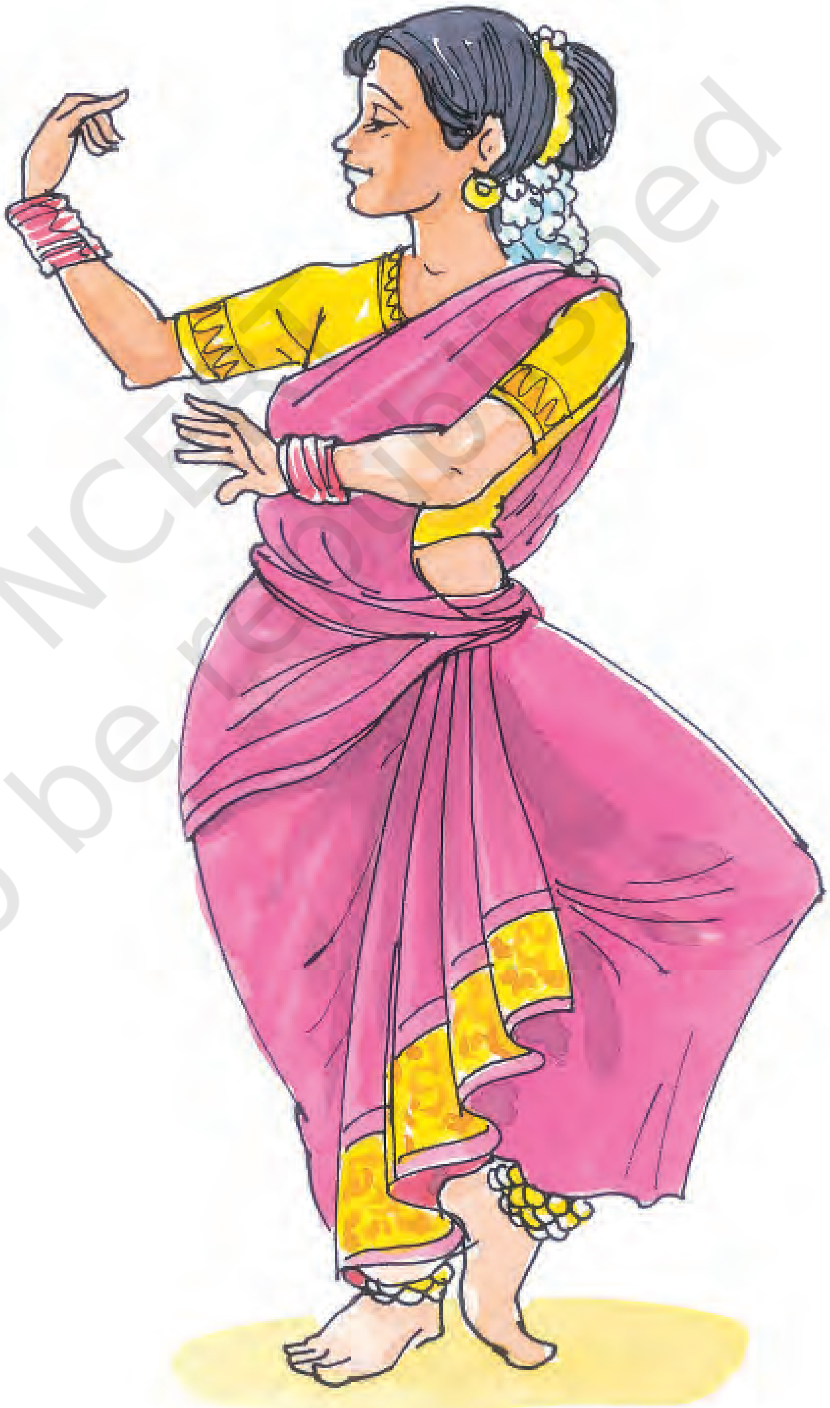

© NCERT not to be republished

का संभवत: सबसे कठिन दिन था, उस दिन से भी ज़्यादा जबकि उसका पाँव काट दिया गया था। सुधा का यह प्रदर्शन बेहद सफल रहा। चहेतों ने उसे देखते-देखते पलकों पर उठा लिया और वह रातों-रात एक ऐतिहासिक महत्त्व की व्यक्तित्त्व हो गई।

उसकी अद्‌भुत जीवन-यात्रा से प्रभावित होकर तेलुगु के फ़िल्मकार ने उसकी ज़िंदगी को आधार बना कर एक कहानी लिखवाई और 'मयूरी' नाम से तेलुगु में एक फ़िल्म बनाई। अपने पात्र को सुधा ने स्वयं परदे पर जीवंत कर दिया। फ़िल्म को अद्‌भुत सफलता मिली और इस फ़िल्म में अभिनय के लिए सुधा को भारत के 33वें राष्ट्रीय फ़िल्म समारोह में विशेष पुरस्कार प्रदान किया गया। 'मयूरी' की सफलता को देखते हुए इसके निर्माता ने यह फ़िल्म हिंदी में भी 'नाचे मयूरी' नाम से प्रदर्शित की और सुधा ने पूरे भारत को अपनी प्रतिभा का मुरीद कर दिया। आज सुधा एक व्यस्त नृत्यांगना ही नहीं, फ़िल्म कलाकार भी है। सुधा को उसके असामान्य साहस और श्रेष्ठ उपलब्धियों के लिए कई पुरस्कार भी प्राप्त हो चुके हैं।

–रामाज्ञा तिवारी

© NCERT not to be republished

अभ्यास

शब्दार्थ

इच्छाशक्ति	–	मनोबल	आश्वस्त	–	विश्वास, भरोसा
अक्षमता	–	अयोग्यता	संघर्ष	–	कठिन प्रयास
अल्पायु	–	कम उम्र	बैसाखियाँ	–	अशक्त अथवा टूटी हुई टाँग को सहारा देने के लिए बाँस आदि की बनी बगल तक की लंबी छड़ी
गैंग्रीन	–	हड्डी का कैंसर			
मुरीद	–	शिष्य			
लक्ष्य	–	उद्देश्य			

1. पाठ से

क सुधा के स्वप्नों की इंद्रधनुषी दुनिया में अँधेरा कैसे छा गया?

ख डॉ. सेठी ने सुधा के लिए क्या किया?

ग सुधा पूरे भारत में कैसे लोकप्रिय हो गई?

2. विलोम शब्द लिखो

आशा – निराशा
कठिन –
आदर –
अँधेरा –
आकार –
इच्छा –

3. सही चिह्न लगाओ

“	”	।	,	?

सुधा ने पूछा क्या मैं नाच सकूँगी डॉ. सेठी ने कहा क्यों नहीं प्रयास करो तो सब कुछ संभव है

4. क्या पहले, क्या बाद में

नीचे सुधा चंद्रन के जीवन की कुछ घटनाएँ बताई गई हैं। इन्हें सही क्रम में लगाओ।

- सुधा डॉ. सेठी से मिली।
- सुधा नृत्य का फिर से प्रशिक्षण लेने लगी।

© NCERT not to be republished

- सुधा ने प्रीति के साथ नृत्य किया।
- सुधा को अभिनय के लिए विशेष पुरस्कार मिला।
- सुधा का पैर काटना पड़ा।
- सुधा ने नृत्य विद्यालय में प्रवेश लिया।

5. एक चुनौती

शारीरिक शब्द में एक साथ ि ी की मात्राओं का प्रयोग होता है। तुम भी ऐसे ही अन्य शब्द खोजो और यहाँ लिखो।

नमूना

विनती	शारीरिक	नीति
....	....	....
....	....	....
....	....	....

6. खोजबीन और बातचीत

क सुधा के जीवन पर फ़िल्म बनी थी। कुछ अन्य व्यक्तियों के नाम पता करो और लिखो, जिनके जीवन पर फ़िल्में बनाई गई हों।

ख सुधा यात्रा के दौरान दुर्घटनाग्रस्त हुई थी। पता करो कि यात्रा के दौरान दुर्घटना से कैसे बचा जा सकता है? सावधानियों की सूची बनाओ।

ग क्या तुम किसी विकलाँग व्यक्ति को जानते हो? उसके बारे में बताओ।

घ कुछ ऐसे विकलाँग व्यक्तियों के नाम लिखो जिन्होंने जीवन में विशेष सफलता प्राप्त की है।

ङ भारत के कुछ नृत्यों और नर्तक/नर्तकियों के नाम पता करो और कक्षा में सबको बताओ।

च पता करो भारत में मैग्सेसे पुरस्कार किन-किन व्यक्तियों को मिला है।

© NCERT not to be republished

0752CH14

चौदहवाँ पाठ

पानी और धूप

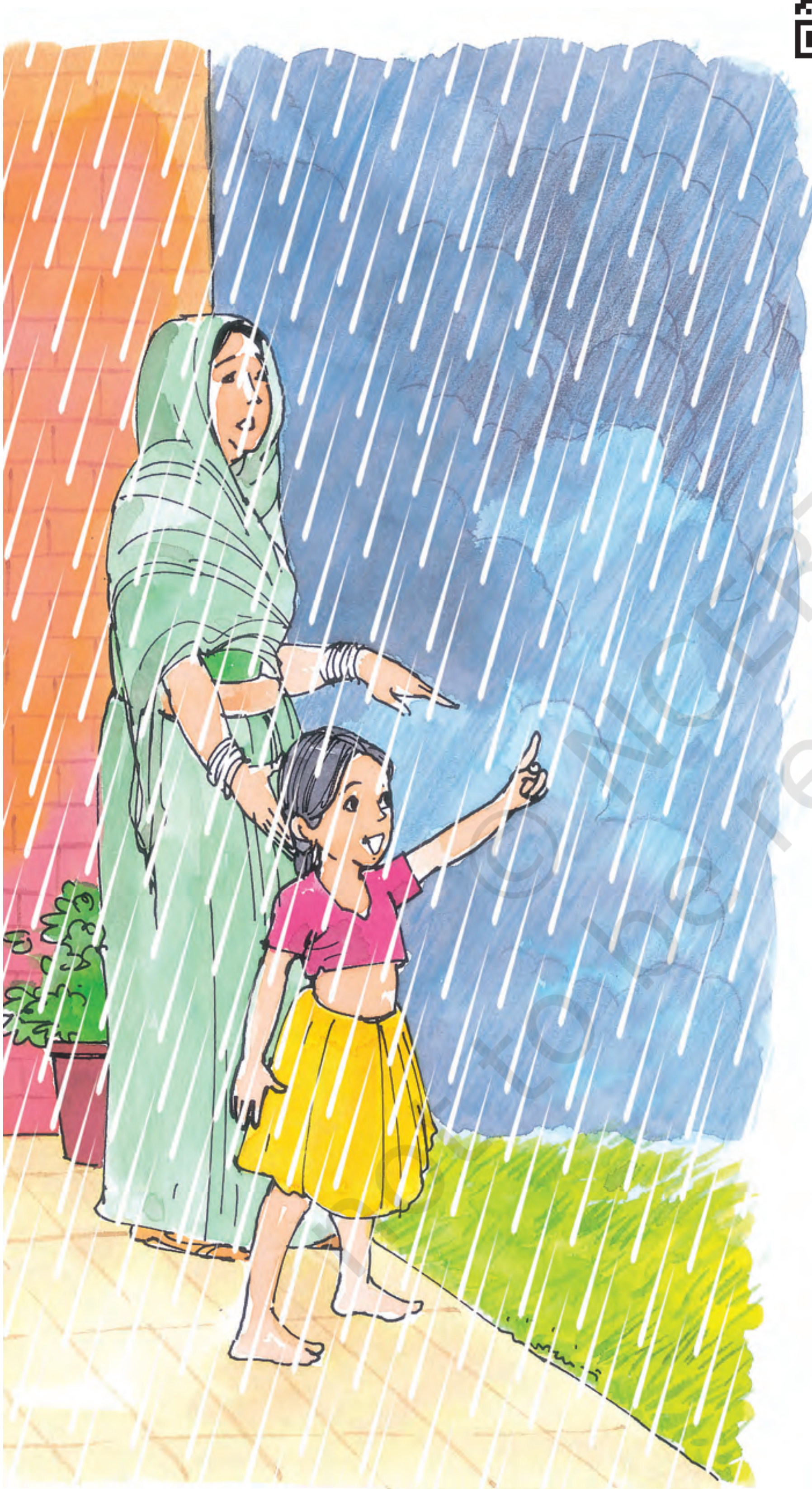

अभी अभी थी धूप, बरसने
लगा कहाँ से यह पानी
किसने फोड़ घड़े बादल के
की है इतनी शैतानी।

सूरज ने क्यों बंद कर लिया
अपने घर का दरवाज़ा
उसकी माँ ने भी क्या उसको
बुला लिया कहकर आजा।

ज़ोर-ज़ोर से गरज रहे हैं
बादल हैं किसके काका
किसको डाँट रहे हैं, किसने
कहना नहीं सुना माँ का।

बिजली के आँगन में अम्माँ
चलती है कितनी तलवार
कैसी चमक रही है फिर भी
क्यों खाली जाते हैं वार।

क्या अब तक तलवार चलाना
माँ वे सीख नहीं पाए
इसीलिए क्या आज सीखने
आसमान पर हैं आए।

एक बार भी माँ यदि मुझको
बिजली के घर जाने दो
उसके बच्चों को तलवार
चलाना सिखला आने दो।

© NCERT not to be republished

खुश होकर तब बिजली देगी
मुझे चमकती सी तलवार
तब माँ कोई कर न सकेगा
अपने ऊपर अत्याचार।

पुलिसमैन अपने काका को
फिर न पकड़ने आएँगे
देखेंगे तलवार दूर से ही
वे सब डर जाएँगे।

अगर चाहती हो माँ काका
जाएँ अब न जेलखाना
तो फिर बिजली के घर मुझको
तुम जल्दी से पहुँचाना।

काका जेल न जाएँगे अब
तुझे मँगा दूँगी तलवार
पर बिजली के घर जाने का
अब मत करना कभी विचार।

– सुभद्रा कुमारी चौहान

अभ्यास

शब्दार्थ

शैतानी	–	शरारत	वार	–	चोट करना, प्रहार
अत्याचार	–	ज़ुल्म	काका	–	चाचा

1. सही शब्द चुनकर वाक्य पूरा करो

कहाँ से, किसने, क्यों, क्या, किसके, किसको

क सूरज ने.............. बंद कर दिया अपने घर का दरवाज़ा।
ख बादल है............ काका।
ग बरसने लगा.................. यह पानी।
घ .... फोड़ घड़े बादल के की है इतनी शैतानी।
ङ .... डाँट रहे हैं.............. कहना नहीं सुना माँ का।

2. इन पंक्तियों से बारिश के बारे में क्या पता चलता है?

नमूना

सूरज की माँ ने उसको बुला लिया।
ऐसा लगता है कि आसमान में सूरज नज़र नहीं आ रहा होगा।

क सूरज ने अपने घर का दरवाज़ा बंद कर लिया।
ख काका किसी को ज़ोर-ज़ोर से डाँट रहे हैं।
ग आँगन में तलवार चल रही है।

3. कविता में ढूँढ़ो

क किन पंक्तियों से पता चलता है कि इस कविता में माँ-बेटी या माँ-बेटे के बीच बातचीत हो रही है?
ख यह कविता आज़ादी मिलने से पहले के समय में लिखी गई थी। उस समय हमारे देश पर अंग्रेजों का राज था। किन पंक्तियों से पता चलता है कि लड़का/लड़की के काका स्वतंत्रता सेनानी थे?

4. रिक्त स्थान भरो

नमूना

काका जेल न जाएँगे अब
अब मत करना कभी विचार
माँ वे सीख नहीं पाए

© NCERT not to be republished

न, मत और नहीं का इस्तेमाल किसी काम के मनाही के लिए किया गया है। तुम नीचे लिखे वाक्यों में 'न', 'मत', 'मना' और 'नहीं' भरो।

क तुम वहाँ........जाओ।

ख परीक्षा में............तो रामू फेल हुआ...........ही असलम।

ग मुझे इस प्रश्न का उत्तर..............पता।

घ माँ ने मुझे छत पर जाने से.................किया है।

5. कविता के अनुसार

क सूरज को उसकी माँ ने क्यों बुला लिया?

ख बादल काका ज़ोर-ज़ोर से क्यों डाँट रहे हैं?

ग बिजली के बच्चों के वार खाली क्यों जा रहे हैं?

घ लड़की बिजली के घर क्यों जाना चाहती है?

ङ बिजली के घर में तलवार चलाना कौन सीख रहा है?

6. पता करो

क कुछ ऐसे देशभक्तों के नाम पता करके लिखो जो बचपन से ही आज़ादी की लड़ाई में कूद पड़े थे।

ख जब बच्ची अपनी माँ से ये सब बातें कर रही थी, उस समय का आसमान और मौसम कैसा रहा होगा? अपनी कल्पना से बताओ। (**संकेत**- धूप, सूरज, बादल, धरती, बिजली, लोगों की परेशानियाँ आदि)

ग कविता में आया है कि सूरज की माँ ने उसे घर के भीतर बुला लिया। पता करो कि क्या सूरज की भी माँ होती होगी?

7. आज़ादी की बात

"तब माँ कोई कर न सकेगा
अपने ऊपर अत्याचार।"

कविता की इस पंक्ति में किस अत्याचार की बात की जा रही है? वे किस तरह के अत्याचार करते थे?

8. घर की बात

"बिजली के आँगन में अम्मा......."

इसमें जो आँगन है वह घर के बाहर के हिस्से को कहा गया है। घर के इन भागों को तुम अपनी भाषा में क्या कहते हो?

कमरा	---------------	बरामदा	---------------
रसोई	---------------	छत	---------------

© NCERT not to be republished

बैठक	---------------	स्नानघर	---------------
जीना	---------------	शौचालय	---------------

9. कविता बनाओ

नीचे कविता में से कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं। कविता की अगली पंक्तियाँ स्वयं बनाओ। ध्यान रखो, कविता में से देखकर नहीं लिखना।

नमूना

ज़ोर-ज़ोर से गरज रहे हैं।
तड़ तड़ तड़ तड़ बरस रहे हैं।

क तब माँ कोई कर न सकेगा

ख बिजली के आँगन में अम्माँ

ग किसने फोड़ घड़े बादल के

© NCERT not to be republished

पंद्रहवाँ पाठ

0752CH15

गीत

इसी जन्म में,
इस जीवन में,
हमको तुमको मान मिलेगा।
गीतों की खेती करने को,
पूरा हिंदुस्तान मिलेगा।
क्लेश जहाँ है,
फूल खिलेगा,
हमको तुमको त्रान मिलेगा।
फूलों की खेती करने को,
पूरा हिन्दुस्तान मिलेगा।
दीप बुझे हैं,
जिन आँखों के,
उन आँखों को ज्ञान मिलेगा।
विद्या की खेती करने को,
पूरा हिन्दुस्तान मिलेगा।
मैं कहता हूँ,
फिर कहता हूँ,
हमको तुम को प्रान मिलेगा।
मोरों सा नर्तन करने को,
पूरा हिन्दुस्तान मिलेगा।

–केदारनाथ अग्रवाल

© NCERT not to be republished

अभ्यास

शब्दार्थ

मान	–	आदर, सम्मान	प्रान	–	प्राण
क्लेश	–	पीड़ा	नर्तन	–	नृत्य, नाच
त्रान	–	भय के कारण से मुक्ति	ज्ञान	–	जानकारी, जानना

1. कविता से

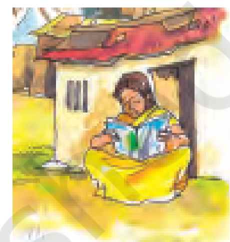

क कवि फूलों, गीतों और विद्या की खेती क्यों करना चाहता है?

ख इसी जन्म में, इस जीवन में,
हमको तुमको मान मिलेगा।
इसमें किसे मान मिलने की बात कही गई है?

ग कविता की कुछ पंक्तियाँ छाँटकर लिखो जिनसे पता लगता है कि कवि को इस बात पर पूरा भरोसा है कि एक दिन सबको मान मिलेगा।

घ कविता में कवि बार-बार मान मिलने की बात करता है। मान मिलने से हमारे-तुम्हारे जीवन में क्या बदलाव आएगा?

2. समझाना

नीचे कविता में से कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं। बताओ, इन पंक्तियों का क्या अर्थ हो सकता है?

क दीप बुझे हैं जिन आँखों के,
उन आँखों को ज्ञान मिलेगा।

ख क्लेश जहाँ है, फूल खिलेगा।

ग हमको तुमको प्रान मिलेगा।

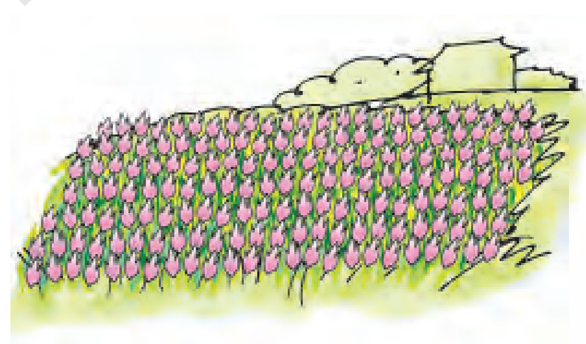

3. मान-सम्मान

क तुम्हें अपने आस-पास यदि लगे कि किसी को सचमुच में आज भी मान-सम्मान नहीं मिला है और उसको तुम मान-सम्मान दिलाना चाहते हो तो उनके नामों की सूची बनाओ।

ग अपनी सूची में से किसी एक के बारे में बताओ कि उसे मान-सम्मान कैसे मिल सकता है?

© NCERT not to be republished

4. रिक्त स्थान पूरे करो

नमूना वह मोर सा नाचता है।

क लक्की.............की तरह गरजता है।

ख सलमा.................की तरह दौड़ती है।

ग मेघाश्री की आवाज़ ....की तरह मीठी है।

घ मनीष के कान ....की तरह तेज़ है।

5. इन शब्दों की रचना देखो

अनुमान, अपमान

ये शब्द 'मान' शब्द में 'अनु' और 'अप' उपसर्ग लगाकर बनाए गए हैं। इसी प्रकार तुम भी 'मान' शब्द में कुछ दूसरे उपसर्ग लगाकर नए शब्द बनाओ।

© NCERT not to be republished

0752CH16

सोलहवाँ पाठ

मिट्टी की मूर्तियाँ

मिट्टी से विभिन्न तरह के खिलौने बनाना तुममें से कई लोग जानते होगे। कईयों का तो यह प्रिय खेल भी होगा। पर क्या तुम जानते हो कि मिट्टी के खिलौने या चीज़ें बनना कब शुरू हुआ? इतिहास में तुमने पढ़ा होगा कि सिंधु घाटी की सभ्यता में मिट्टी से बनी और पकी हुई कुछ मूर्तियाँ खुदाई के दौरान मिली हैं। सिंधु घाटी की सभ्यता लगभग 2500-3000 वर्ष पुरानी मानी जाती है। सोचो केवल मिट्टी से बनी ये मूर्तियाँ इतने लंबे समय तक कैसे सुरक्षित रही होंगी? जबकि मिट्टी तो पानी में घुल जाती है। वास्तव में मिट्टी से बनी और आग में पकी मूर्तियाँ या वस्तुएँ पानी में नहीं घुलती हैं। ऐसी मूर्तियों को मृणमूर्ति कहा जाता है। पकाने से मिट्टी एक तरह से मृत हो जाती है यानी पकने के बाद उसका पुनः उपयोग नहीं किया जा सकता । वास्तव में मिट्टी की मूर्तियों का इतिहास उतना ही पुराना है जितना मानव का। मानव के पास अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने का चित्र और मूर्ति के अलावा शायद अन्य कोई माध्यम नहीं था।

आओ देखते हैं कि मिट्टी से मूर्ति बनाने की व्यवस्थित प्रक्रिया क्या है। मिट्टी से मूर्तियाँ दो तरह से बनाई जा सकती हैं। एक तरीका है केवल हाथ से बनाना। इस तरीके से ठोस, पोली तथा उभरी(रिलीफ) मूर्तियाँ बनाई जा सकती हैं। दूसरा तरीका है चाक की मदद से बनाना। चाक पर कुम्हार को मटके या कुल्हड़ बनाते हुए तो तुमने देखा ही होगा। क्या कभी इसके लिए मिट्टी तैयार करते हुए भी देखा है?

मिट्टी तैयार करना

हर जगह अलग-अलग तरह की मिट्टी मिलती है, कहीं चिकनी, कहीं रेतीली, कहीं लाल, तो कहीं पीली, सफेद, काली मिट्टी। मूर्ति बनाने लायक मिट्टी तैयार करने के लिए उसमें दूसरी मिट्टी मिलानी पड़ती है। जैसे मिट्टी चिकनी है तो उसमें थोड़ी रेतीली मिट्टी, राख या रेत मिलानी पड़ेगी।

मिट्टी को साफ़ करके (यानी उसमें से कंकड़, पत्थर या और कोई कचरा आदि हो तो निकाल दो) किसी बर्तन, होद या तसले में पानी के साथ गला दो। मिट्टी जब

© NCERT not to be republished

पानी में घुल जाए तो उसे एक-दो बार नीचे तक हिलाकर छोड़ दो। जिससे अगर बारीक कंकड़ वगैरा रह गए हों तो वे भी नीचे बैठ जाएँ। अब बर्तन को एकाध दिन के लिए छोड़ दो।

एक-दो दिन बाद ऊपर-ऊपर की मिट्टी किसी दूसरे बर्तन में निकाल लो। थोड़ी देर बाद उस मिट्टी का पानी ऊपर आ जाएगा। बर्तन को तिरछा करके इस पानी को निकाल दो। मिट्टी ज़्यादा गीली हो तो साफ़ जगह में फ़ैला दो। अगर लिपी हुई ज़मीन होगी तो पानी सोख लेगी। कुछ समय बाद मिट्टी को हाथ में लेकर गोली जैसी बनाकर देखो, अगर गोली बनने लगे तो समझो अपने काम लायक मिट्टी तैयार हो गई है।

अब सारी मिट्टी को समेट लो और पत्थर की सिल पर रखकर उसे लकड़ी के चपटे हथौड़े से कूटो। साथ-ही-साथ मिट्टी को ऊपर नीचे करते रहो। बीच-बीच में हाथ से आटे की तरह माड़ते भी जाओ। मिट्टी की कुटाई अच्छी प्रकार होनी चाहिए। अगर कुटाई अच्छी नहीं होगी तो मूर्ति चटक जाएगी और पकते समय टूट भी सकती है। कूट कर तैयार हुई मिट्टी को गीले कपड़े या बोरी में लपेटकर पॉलीथीन से ढक दो ताकि मिट्टी सूख न पाए। अगर सूख गई तो तुम्हारी सारी मेहनत बेकार चली जाएगी।

अब हमें यह तय करना है कि हम किस तरीके से मूर्ति बनाना चाहते हैं। चाक पर बनाने के लिए तो चाक न केवल चाहिए होगा वरन् उसे कैसे चलाते हैं यह भी सीखना होगा। अपने गाँव के कुम्हार के पास जाकर तुम चाक चलाना सीख सकते हो। बहरहाल हम तुम्हें दोनों ही तरीके बताएँगे। तुम खुद करके देखना कौन सा तरीका सुविधाजनक या आसान है।

मूर्ति बनाते समय हमें कुछ छोटी-मोटी चीज़ों की ज़रूरत पड़ेगी। जैसे बाँस के टुकड़े, जिन्हें चाकू से छीलकर अलग-अलग आकार दिया जा सके। बाँस के इन टुकड़ों की मदद से हम मूर्ति में से अनावश्यक मिट्टी खुरच सकते हैं। इनकी मदद से मूर्ति में कोई अंग उभार सकते हैं। इसके अलावा पुराना चाकू, लकड़ी आदि की भी आवश्यकता होगी।

हाथ से मूर्ति बनाना

हाथ से तीन तरह की मूर्तियाँ बनाई जा सकती हैं। ठोस, पोली तथा रिलीफ (उभरी हुई)।

© NCERT not to be republished

ठोस मूर्ति

पहले ठोस मूर्ति की बात करें। यह सबसे सरल तथा आसान है। पर इस तरह की मूर्तियाँ ज़्यादा बड़ी नहीं बना सकते। अधिक से अधिक एक बिलांस यानी 15–20 सेंटीमीटर ऊँची।

अच्छा बताओ सबसे पहले क्या बनाएँ ! अरे यह क्या.... कोई बिल्ली बनाना चाहता है, कोई कुत्ता, कोई शेर, गधा, हाथी, घोड़ा, पक्षी...! चलो ऐसा करते हैं घोड़ा बनाते हैं। इसके बाद तुम स्वयं अन्य मनचाही चीज़ें बनाना।

तैयार मिट्टी से रोटी की लोई के बराबर दो हिस्से लो। लोई जैसे दो गोले बनाओ। अब दोनों गोलों को एक-एक करके पत्थर या पट्टे पर रखकर लंबा करो। जब वह एक बिलांस लंबे हो जाएँ तो दोनों को चित्रानुसार बीच से जोड़ते हुए खड़ा करो। अब थोड़ी-सी मिट्टी और लो और इस मिट्टी से घोड़े के सिर का आकार बनाकर जोड़ पर लगा दो। मिट्टी को थोड़ा सा दबाकर दोनों तरफ़ कान बना दो। तीली या सींक से छेद करके आँखें बना दो। लो बन गया अपना घोड़ा! भई ये एकदम सचमुच के घोड़े जैसा तो नहीं दिखेगा। इस तरीके से तुम लगभग सभी चौपाए जानवर बना सकते हो और मानव आकृतियाँ भी बना सकते हो। पर छोटी-छोटी ही। ठोस रूप में ज़्यादा बड़ी बनाने से सूखते समय या पकाते समय चटकने या टूटने का अंदेशा रहता है।

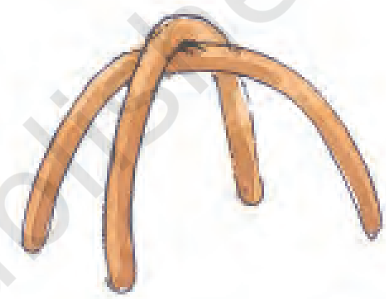

पोली मूर्ति

आओ अब पोली मूर्ति बनाने का तरीका देखें।

पोली मूर्ति चाहे जितनी बड़ी बना सकते हैं, बशर्ते उसे सँभाला जा सके यानी ऐसा न हो कि हम बाहर का हिस्सा मिला रहे हैं और अंदर की मिट्टी गिर रही है या इतनी ज़ोर से ठोक रहे हैं कि कहीं और से टेढ़ा हो रहा है। वास्तव में आधार से बहुत ज़्यादा बाहर की ओर निकली हुई चीज़ें इस तरीके से नहीं बना सकते। साधारण रूप से एक बार में 3 फुट लंबी मूर्ति बना सकते हैं। सॉकेट सिस्टम से चाहे जितनी ऊँची मूर्ति बना सकते हैं यानी यदि मानव की मूर्ति बनानी हो तो हाथ अलग, पैर अलग, सिर अलग बनाकर फिर उन्हें जोड़ लिया जाता है। इन्हें ज़रूरत पड़ने पर अलग भी किया जा सकता है।

जैसे पहले मिट्टी की लंबी पट्टियाँ बनाई थीं, वैसी ही आठ-दस पट्टियाँ बना लो। पट्टियों के दोनों सिरे जोड़कर छल्ले बनाओ और इन्हें एक के ऊपर एक रखते जाओ।

© NCERT not to be republished

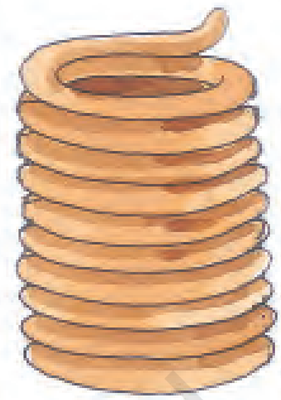

तुम यह तो समझ ही गए होगे कि पट्टियों की लंबाई तथा छल्लों का आकार लगभग समान होना चाहिए। छल्लों से एक लंबी जार जैसी रचना बन जाएगी। अब अंदर की तरफ़ हाथ का सहारा लगाकर बाहर से छल्लों के जोड़ों को मिलाकर एक सा कर लो। इसी तरह बाहर से हाथ का आधार देकर अंदर के जोड़ भी मिला दो। तुमने कुम्हार को मटकों को ठोक-ठोक कर बनाते देखा होगा। उसी तरह कोई बेलनाकार लकड़ी की वस्तु या टूटा बेलन लेकर अंदर से हाथ लगाते हुए बाहर से ठोको और फिर बाहर से हाथ लगाकर अंदर से ठोको। ठोकना धीरे-धीरे ही, क्योंकि गीली मिट्टी होने के कारण ठोकने से फैलेगी। इस बात का ध्यान रखना कि ज़्यादा नहीं फैले। क्योंकि ज़्यादा पतला होने पर तुम्हारी जार जैसी रचना टूट सकती है। यह एक-डेढ़ सेंटीमीटर से अधिक पतला नहीं होना चाहिए।

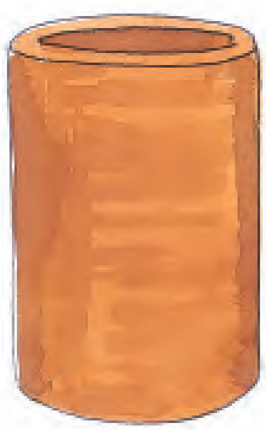

इस बार हम मानव आकृति बनाते हैं। पर इसमें भी हाथ-पैर सब चिपके हुए होंगे। कहीं दबाकर, कहीं उभारकर, कहीं छेद करके या काटकर इसे आकार देना होगा। इसे कैसे बनाना है यह चित्रों को देखकर समझने की कोशिश करो।

भारत में कुछ जगह इन मृण-मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध हैं जैसे बंगाल में बाँकुरा; उत्तर प्रदेश में गोरखपुर; राजस्थान में मुलैला और मध्य प्रदेश में बस्तर। राजस्थान के मुलैला नामक गाँव, जो नाथद्वारा के पास है, के कलाकार रिलीफ बनाने के लिए प्रसिद्ध हैं। ये बहुत बड़े-बड़े लगभग 7x7 फुट के बनते हैं, इन्हें पकाया भी जाता है। इन कलाकारों में से कुछ नाम हैं—किशनलाल कुम्हार, खेमराज कुम्हार, लोगरलाला कुम्हार। यहाँ के कुछ कुम्हारों को राष्ट्रीय स्तर के पुरस्कार "मास्टर क्राफ्ट मैन" भी मिल चुका है। देश के इन आदिवासी और लोक कलाकारों की कृतियाँ विदेशों में भी प्रदर्शित की गई हैं।

उभरी हुई (रिलीफ) मूर्ति

अब देखते हैं कि रिलीफ यानी उभारदार मूर्ति कैसे बनाई जाती है। ऐसी उभारदार मूर्तियाँ तुमने अपने आसपास घरों में देखी होंगी। इन्हें मिट्टी से बनाने की एक कोशिश हम भी कर देखते हैं।

पहले एक छोटी मूर्ति बनाते हैं। फिर तुम चाहो तो बड़ी या अपने घर की दीवार पर बनाना चाहो तो बना सकते हो। पत्थर या लकड़ी का एक समतल 45x45

© NCERT not to be republished

सेंटीमीटर का या इससे बड़ा टुकड़ा लो। उस पर तैयार मिट्टी से लगभग 3 सेंटीमीटर मोटी और 30 सेंटीमीटर लंबी और 30 सेंटीमीटर चौड़ी तह जमाओ। चारों तरफ़ से और ऊपर से भी इसे एक सा कर लो। इस पर बनाने के लिए ऐसी चीज़ चुनो जिसमें बहुत ज़्यादा गड्ढे या उभार न हों क्योंकि इसी से आगे चलकर हम तुम्हें प्लास्टर में साँचा बनाना और साँचे से मूर्ति ढालना बताएँगे। तब ऐसी रचना होने से आसानी होगी।

इस बार हम हाथी चुनते हैं। अब मिट्टी से बनी अपनी प्लेट पर हाथी की उभारदार आकृति बनाते हैं। चाहो तो सींक से हाथी की आकृति प्लेट पर बना लो और फिर मिट्टी लगाना शुरू करो।

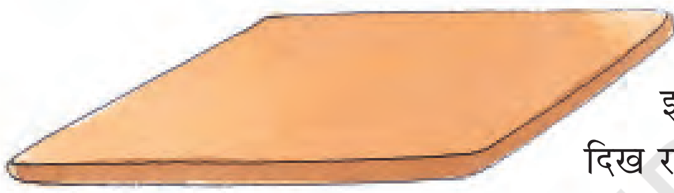

मान लो हाथी का यह चित्र तुमने अपनी मिट्टी की प्लेट पर बनाया । इसके पीछे की तरफ़ वाले जो दो छोटे पैर दिख रहे हैं उसे थोड़ी सी मिट्टी लगाकर उभारो। आगे की तरफ़ जो थोड़े लंबे पैर दिख रहे हैं उन्हें थोड़ी ज़्यादा मिट्टी लगाकर उभारो। पेट(धड़)को पैरों से थोड़ा और ऊँचा बनाओ। चेहरे को पेट से थोड़ा कम, पैरों के बराबर उभारो। कान के लिए एक पतली सी मिट्टी की तह जमाकर कान का आकार दे दो। छोटी सी पूँछ भी बना दो। आँख के लिए सींक से छेद कर सकते हो, हलका-सा बहुत गहरा नहीं।

अब हाथी के शरीर को गोलाई देना है। यह तुम पुराने चाकू या बाँस की चिकनी पट्टी से दे सकते हो।

अब हाथ थोड़ा गीला करके इन सबको एक सा करो। एक-दो घंटे इसे गीले कपड़े और पन्नी से ढक कर रख दो। मिट्टी थोड़ी कड़क हो जाएगी। फिर चाकू या बाँस से थोड़ा रगड़कर उसे चिकना करो। जब ये मूर्ति चिकनी हो जाए तो इस पर हलकी सी चमक आ जाएगी। (अगर इसे इस तरह से चिकना कर लोगे तो बाद में ढालने में आसानी होगी।)

चाक की मदद से मूर्ति

आओ अब देखते हैं कि चाक पर मूर्ति कैसे बनाते हैं। वास्तव में चाक पर पूरी मूर्ति नहीं बनती। मूर्ति के कुछ हिस्सों को चाक पर बनाया जाता है। उदाहरण के लिए हम

© NCERT not to be republished

हाथी की ही बात करें। अगर तुमने चाक चलाना सीख लिया है तो मिट्टी के चार कुल्हड़, एक दिया, दो मटके (एक छोटा, एक बड़ा) बना लो। अब कुल्हड़ों को उल्टा करके इस तरह जमाओ कि वे हाथी के पैरों का रूप ले लें। इन पैरों पर बड़ा मटका रख कर मिट्टी से जोड़ दो। छोटे मटके को आगे सिर की जगह रखकर जोड़ो। नीचे से कुछ आधार लगाओ, नहीं तो सिर गिर पड़ेगा। अब दिये को बीच से काटकर दो भागों में बाँट लो। इनसे कान बनाओ। गीली मिट्टी लेकर हाथी की सूँड और पूँछ भी बना लो। आँखों की जगह दो बड़े छेद चवन्नी के आकार के बना दो। देखो कितना प्यारा हाथी बना है। छत्तीसगढ़ के एक इलाके में ऐसा हाथी बहुतायत मात्रा में बनाया जाता है। जानते हो, खरीददार क्या कीमत देते हैं इसकी? कीमत के रूप में उसी हाथी के पेट में धान भरकर एक नयी चादर से ढक दिया जाता है। यानी जितना बड़ा हाथी होगा कुम्हार को उतनी ही ज़्यादा धान मिलेगी।

मूर्ति तो बना ली। अब अगर इन्हें ज़्यादा दिन तक सुरक्षित रखना चाहते हो तो पकाना पड़ेगा। तुमने कुम्हार को आवा(भट्ठी)लगाते हुए देखा होगा। अपनी बनाई हुई मूर्ति को तुम खुद भी पका सकते हो। कैसे पकाना है, यह हम बता रहे हैं। पर अगर जगह और साधन का जुगाड़ नहीं कर सकते, तो इसे कुम्हार के यहाँ देकर भी पकवा सकते हो। कुम्हार अपने मटके, गमले आदि के साथ तुम्हारी मूर्ति भी पका देगा।

पकाने के पहले सुखाना

मूर्ति को पकाने के लिए सुखाना पड़ता है। सुखाते समय कुछ सावधानियाँ रखनी होती हैं वरना मूर्ति चटक या टूट सकती है। सूखने में समय भी लगता है। जब तुम्हारी मूर्ति बन जाए तो इसे एकदम खुली जगह में मत छोड़ो। पन्नी से ढककर रखो। पर दिन में तीन-चार बार एक-दो घंटे के लिए खोल भी दो, ताकि उसे हवा लग सके। यह भी देखते रहना कि कहीं तुम्हारी मूर्ति में दरार तो नहीं पड़ रही। अगर पड़ रही हो तो उसे बंद करने की कोशिश करो। इस तरह तीन-चार दिन तक सुखाओ। इसके बाद मूर्ति को कपड़े से लपेट दो, धीरे-धीरे मूर्ति सूखने लगेगी।

दो-तीन दिन बाद कपड़ा और पन्नी हटाकर देखो। अगर ऊपर की सतह सूख गई है तो अब मूर्ति को खुला छोड़ दो। जब तुम्हें लगे कि मूर्ति बिलकुल सूख गई है, तो दिन भर के लिए उसे धूप में रख दो। इससे अगर मूर्ति के भीतर थोड़ी-बहुत नमी रह गई होगी तो वह सूख जाएगी। अब मूर्ति पकने के लिए तैयार है।

© NCERT not to be republished

पकाने के लिए भट्टी

मूर्ति पकाने के लिए ऐसा दिन चुनो जब मौसम बिलकुल साफ़ हो और बारिश होने का अँदेशा न हो। भट्टी लगाने के लिए 20-25 कंडे, लकड़ी के छोटे-छोटे टुकड़े, सूखी घास (पैकिंग में काम आने वाला भूसा या पुआल), मिट्टी और एक बालटी पानी की जुगाड़ करो। अब खुली ज़मीन पर एक इतना बड़ा गड्ढा खोदो कि जिसमें तुम्हारी मूर्ति आसानी से खड़ी हो सके। यह एक बिलांस यानी करीब आधा फुट गहरा गड्ढा हो। गड्ढे में कंडे के टुकड़ों की एक तह बिछा दो और उस पर अपनी मूर्ति खड़ी कर दो। अब मूर्ति को चारों तरफ़ से लकड़ी के टुकड़ों तथा कंडों के टुकड़ों से ढक दो। बीच-बीच में पुआल भी लगा दो। अब चारों तरफ से बड़े-बड़े कंडे लगा दो और ऊपर से पुआल। मिट्टी को पानी में घोलकर गाढ़ा सा घोल बनाओ। इस घोल की एक मोटी परत पुआल के ऊपर चढ़ा दो यानी लीप दो। हाँ, दो-तीन जगह धुआँ निकलने व एक जगह नीचे की तरफ़ आग लगाने के लिए छेद छोड़ दो। तो इस तरह तुम्हारी भट्टी तैयार है। कागज़ की एक पुँगी बना लो और उसमें आग लगाकर नीचे वाले छेद से धीरे-धीरे अंदर डालो। जब अंदर का पुआल व कंडे जलने लगें तो उसे छोड़ दो। कंडे धीरे-धीरे जलेंगे। अब पाँच-छह घंटे के लिए इसे भूल जाओ। यह अपने आप धीरे-धीरे जलेगा और बुझेगा। तुम इसे बिलकुल मत छेड़ना, न जल्दी जलाने या बुझाने की कोशिश करना, वरना गड़बड़ हो जाएगी। पाँच-छः घंटे बाद जब भट्टी ठंडी हो जाए तब इसे धीरे-धीरे खोलना। मूर्ति को एकदम उतावली में हाथ मत लगाना, वह गरम होगी। मूर्ति को अपने आप ठंडी होने देना, पानी डालकर ठंडी मत करना। तो लो तुम्हारी मूर्ति तैयार है अगर इसे सँभालकर रखो तो यह लंबे समय तक रह सकती है।

एक और बात, मूर्ति पकने के बाद हल्के लाल रंग की होगी, जैसा मटके का रंग होता है। इसे ज़्यादा लाल करना चाहो तो गेरू से कर सकते हो। वैसे तो तुम अपने मन चाहे रंग ऊपर से लगा सकते हो। इसमें एक मज़ेदार बात है, ये मूर्तियाँ पकने के बाद काले रंग की भी हो सकती हैं, मगर कैसे? यह हम तुम्हारे लिए छोड़ते हैं। तुम्हीं करके देखो और हमें भी बताओ। पर ऊपर से काला रंग मत कर लेना।

– जया विवेक

© NCERT not to be republished

सत्रहवाँ पाठ

0752CH17

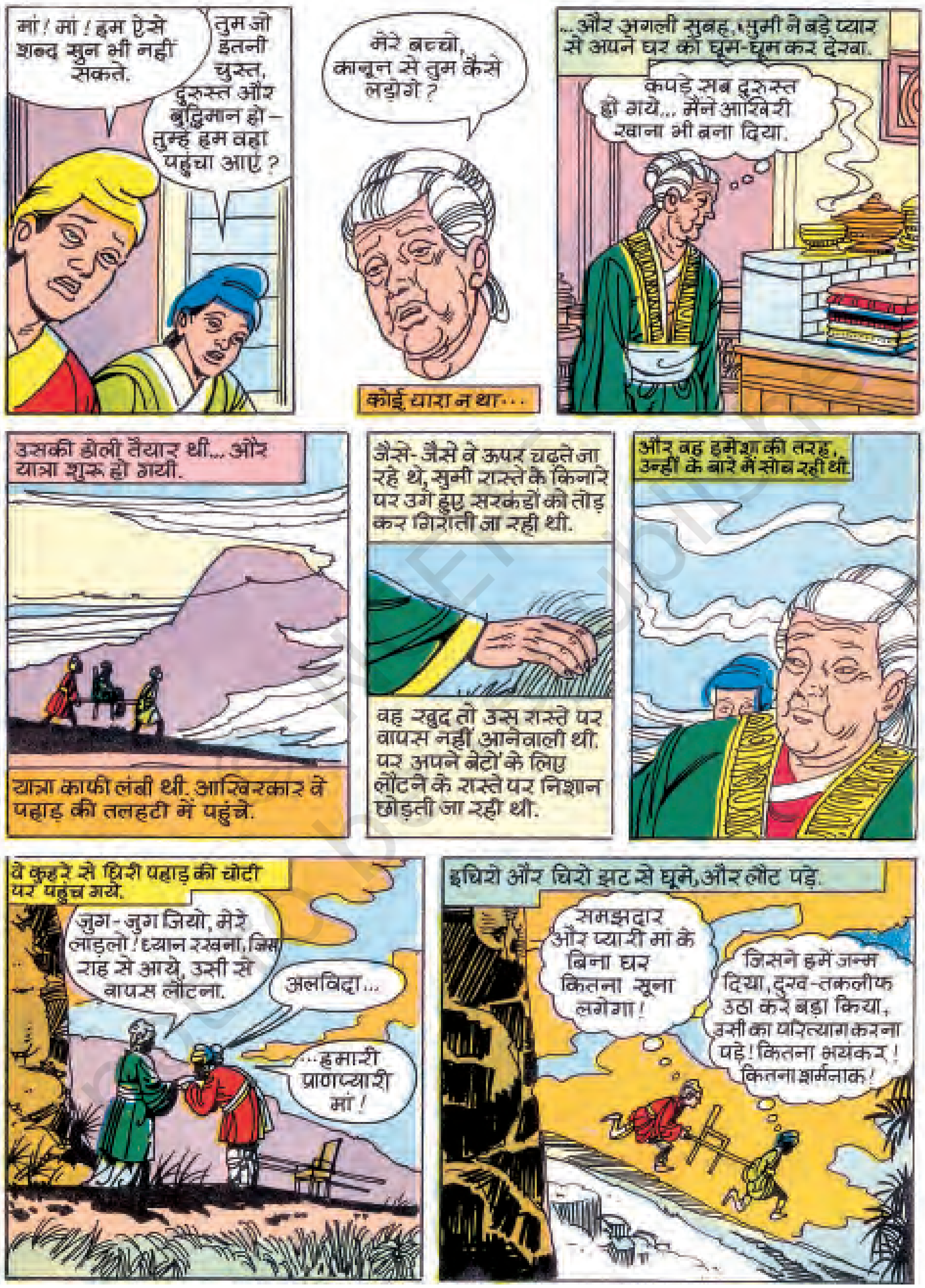
मां! मां! हम ऐसे शब्द सुन भी नहीं सकते.
तुम जो इतनी चुस्त, दुरुस्त और बुद्धिमान हो – तुम्हें हम वहां पहुंचा आएं?
मेरे बच्चो, कानून से तुम कैसे लड़ोगे?
कोई चारा न था···
...और अगली सुबह, सुमी ने बड़े प्यार से अपने घर को घूम-घूम कर देखा.
कपड़े सब दुरुस्त हो गये... मैंने आखिरी खाना भी बना दिया.
उसकी डोली तैयार थी... और यात्रा शुरू हो गयी.
यात्रा काफी लंबी थी. आखिरकार वे पहाड़ की तलहटी में पहुंचे.
जैसे-जैसे वे ऊपर चढ़ते जा रहे थे, सुमी रास्ते के किनारे पर उगे हुए सरकंडों को तोड़ कर गिराती जा रही थी.
वह खुद तो उस रास्ते पर वापस नहीं आनेवाली थी. पर अपने बेटों के लिए लौटने के रास्ते पर निशान छोड़ती जा रही थी.
और वह हमेशा की तरह, उन्हीं के बारे में सोच रही थी.
वे कुहरे से घिरी पहाड़ की चोटी पर पहुंच गये.
जुग-जुग जियो, मेरे लाड़लो! ध्यान रखना, जिस राह से आये, उसी से वापस लौटना.
अलविदा...
...हमारी प्राणप्यारी मां!
इचिरो और चिरो झट से घूमे, और लौट पड़े.
समझदार और प्यारी मां के बिना घर कितना सूना लगेगा!
जिसने हमें जन्म दिया, दुख-तकलीफ उठा कर बड़ा किया, उसी का परित्याग करना पड़े! कितना भयंकर! कितना शर्मनाक!

अंधेरा हो चला था और बर्फ भी गिरने लगी थी. उतावली में, भाइयों ने छोटे रास्ते से नीचे उतरने का फैसला किया.
अचानक, बर्फ के फाहे घने होने लगे और जोरदार तूफान शुरू हो गया.
अब कैसे जाएं ? हम कहां हैं ?
इचिरो, हम रास्ता भटक गये हैं! आगे कोई रास्ता नहीं है.
और निराश हो कर वे वापस पहाड़ की चोटी की ओर दौड़ पड़े.
मां, तुम कहां हो ?
हम रास्ता भटक गये हैं, कहां हो ?
बर्फ से सुन्न हो कर, अधमरी-सी सुमी झाड़ियों के पीछे पड़ी थी. पर उसमें चेतना आयी...
...बच्चों को मेरी जरूरत है
इचिरो और चिरो ने उसे डोली में बैठाया और घर ले चले
वे देखो, टूटे हुए सरकंडे पड़े हैं न ? उसी रास्ते चलो, मेरे बच्चो.
बड़ी आसानी से और आत्म-विश्वास के साथ सुमी उन्हें पहाड़ से नीचे ले आयी...
...और उनका घर आ गया.
हम तुम्हें कभी नहीं जाने देंगे, मां !
चाहे हमें कुछ भी क्यों न सहना पड़े
इचिरो और चिरो ने सुमी को झोपड़ी के पि ले हिस्से में छिपा दिया, ताकि गांववालों और सिपाहियों को उसका पता न चले.
वे तीनों बड़े आनंद से रहने लगे.

एक दिन, उस राज्य के राजा ने सभी परिवारों के पुरुषों को बुलवाया.
मैं कुछ काम बताऊंगा, जो कि तुम सबको करने होंगे. जो लोग असफल रहेंगे, उनपर भारी जुर्माना होगा.
पहला काम यह है कि राख की रस्सी बना कर लाओ.
रस्सी...?
...सो भी राख की?
इचिरो और चिरो ने इस अनोखे काम के बारे में सुमी को बताया.
अरे, बड़ा आसान है! एक रस्सी लो, उसपर खूब नमक का पानी मलो. फिर उसे एक पतरे पर रखो और आग लगा दो.
रस्सी जलने पर राख रह जायेगी. पर नमक की वजह से वह बिखरेगी नहीं.
अगले दिन, दरबार में—
काम पूरा कर लाये! अति उत्तम! तुम्हारे नाम क्या हैं?
इचिरो और चिरो, महाराज.
बहुत खूब...! और याद है न, जो लोग यह काम नहीं कर पाये, उन्हें जुर्माना भरना होगा.
और बाकी सब गांववालों ने जुर्माना भर दिया.
अब दूसरा काम एक शंख लाओ, जिसके आरपार धागा पिरोया हुआ हो.

सुमी के पास इस समस्या का भी हल था. बोली – पहला कदम है एक चींटी को पकड़ना...
...उसके पैर में धागा बांध कर उसे शंख के ऊपरवाले छेद में से अंदर जाने दो.
फिर शंख के मुंह पर कुछ चावल के दाने रखो.
चावल के दानों से आकर्षित हो कर चींटी शंख में से अपना रास्ता बना कर निकलेगी तो धागा भी शंख के मुंह तक पहुंच जायगा.
और राजा की खुशी की सीमा न रही!
दूसरे गांववालों को दुबारा जुर्माना भरना पड़ा.
तीसरा काम था, बांस के टुकड़े में जड़ और तने की ओर के सिरों को पहचानना. सुमी के उत्तर को दरबार में प्रयोग करके दिखाया गया.
बांस के टुकड़े को पानी में डालिए. जो सिरा तैरे वह तने की ओर का है, और जो डूबे, वह जड़ की ओर का.
लाजवाब! मेरे बच्चो, इस बार भी तुमने काम कर दिखाया.
एक ऐसा ढोल लाओ, जो बिना बजाए बजता हो.
राजा का बताया यह काम भी बच्चों ने घर जा कर सुमी को बताया. कुछ देर सोचने के बाद सुमी हंसने लगी.
अचार के इस डिब्बे का ढक्कन और पेंदा हटाने से वह दोनों ओर से खुल जायगा.

अब चमड़े के गोल टुकड़े काट कर इसके दोनों ओर मढ़ दो मगर उससे पहले...
...कुछ मधुमक्खियां अंदर छोड़ दो.
जब राजा जी ने उत्सुकता से उस अनोखे ढोल को हाथ में उठाया, तो अंदरवाली मधुमक्खियां घबरा कर उड़ीं और चमड़े से टकराने लगीं, जिससे...
ढुप्प
ढुप्प
ढुप्प
...ढोल अपने आप बजने लगा.
चमत्कार! चमत्कार! मेरे बताये सभी काम पूरे करने के उपलक्ष्य में, ऐ लड़को, मैं तुम्हें उगते हुए सूर्य का पदक प्रदान करता हूं.
महाराज, रुकिए हम एक अपराध स्वीकार करना चाहते हैं.
इस सम्मान के हकदार हम नहीं, बल्कि हमारी मां हैं, जिन्हें हमने अपनी झोपड़ी के पीछे छिपा रखा है.
हालांकि वे 70 वर्ष की हो चुकी हैं, पर हमने उन्हें नहीं जाने दिया है. इस तरह हमने राज्य का नियम तोड़ा है.
क्या! तुमने नियम तोड़ा है? तब तो तुम्हें वही दिया जायेगा, जिसके तुम लायक हो...

...तुम्हें क्षमादान दिया जाता है! हा हा हा!
इचिरो और जिरो, आज मुझे बहुत बड़ी सीख मिली है. मैं अपने बनाये उस निर्दय नियम को रद्द करता हूं.
महाराज, कृपा करके इन गांववालों के दिये हुए जुर्माने को वापस लौटा दीजिए. क्योंकि ये बेचारे तो गरीब से गरीबतर हो गये हैं.
मैं न सिर्फ इनके रुपये लौटाऊंगा, बल्कि एक कोष स्थापित करूंगा, जिसकी सहायता से ये अपने बूढ़े मां-बाप की अच्छी तरह से परवरिश कर सकें.
और जल्दी ही, दरबार में—
सुमी, तुम्हारी सूझबूझ और समझदारी के लिए और जो ममता तुमने अपने बच्चों को दी है, उसके लिए मैं तुम्हारा सम्मान करता हूं.
अब से तुम और तुम्हारे ये लड़के मेरे शाही सलाहकार होंगे.
और उस दिन से मौत का पहाड़ सूना पड़ा है...
...क्योंकि अब किसी अभागे बेटे को अपने प्यारे मां-बाप को वहां छोड़ने नहीं आना पड़ता.

0752CH18

हम होंगे कामयाब एक दिन

हम होंगे कामयाब एक दिन
हो हो मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास
हम होंगे.............
होगी शांति चारों ओर,
होगी शांति चारों ओर एक दिन,
हो हो मन में है विश्वास पूरा है विश्वास,
होगी शांति चारों ओर एक दिन।
हम होंगे.................
हम चलेंगे साथ-साथ,
डाल हाथों में हाथ,
हम चलेंगे साथ-साथ एक दिन
हो हो मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास
हम होंगे..............
नहीं डर किसी का आज
नहीं भय किसी का आज
नहीं डर किसी का आज एक दिन।
हो हो मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास
नहीं डर किसी का आज के दिन
हम होंगे.......

–गिरिजा कुमार माथुर

© NCERT not to be republished

© NCERT not to be republished